मासिक

शिविरा

पत्रिका

RAJSEVAK.COM

वर्ष : 59 | अंक : 06 | दिसम्बर, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय बीकानेर द्वारा जारी स्टीकर व फ्लैग का विमोचन करते हुए बीकानेर जिला कलैक्टर श्रीमान नरेन्द्र कुमार गुप्ता एवं कमिश्नर स्काउट स्कूल शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल, चीफ कमिश्नर डॉ. विजय शंकर आचार्य एवं मण्डल सचिव श्री दयानन्द पुरोहित।

बीकानेर जिला कलैक्टर श्रीमान नरेन्द्र कुमार गुप्ता एवं कमिश्नर स्काउट स्कूल शिक्षा व मा. शि. निदेशक श्री नथमल डिडेल अंशदान राशि भेंट करते हुए।

स्काउट स्कूल शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल, कार्यालय में फ्लैग लगवाते हुए बुलबुल के साथ।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 6 | मार्गशीर्ष-पौष कृ. २०७५ | दिसम्बर, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

वरिष्ठ सम्पादक
संतोष शर्मा

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- श्रेष्ठ का वरण करें 5
  आलेख
- एक भारत श्रेष्ठ भारत के शिल्पी सरदार वल्लभ भाई पटेल 6
  विजयसिंह माली
- संसार में भारत के गौरव की स्थापना का पर्व 8
  जयप्रकाश राजपुरोहित
- विध्वंस में भी सृजक : अलफ्रेड नोबेल 9
  टेकचंद्र शर्मा
- धणी रो धणी कुण 10
  ओमप्रकाश सारस्वत
- विकास का माध्यम : ज्ञान संकल्प पोर्टल 12
  दिलीप परिहार
- DIKSHA RISE Portal : एक परिचय 14
  नीरज काण्डपाल
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता, क्रियान्वयन तथा सम्भावना 16
  संगीता कुमारी शर्मा
- बचाकर रखना होगा शिक्षकत्व 18
  विश्वनाथ भाटी
- नमस्कार व चरण स्पर्श करना विज्ञान सम्मत कैसे? 20
  तरुण कुमार सोलंकी
- विद्यार्थियों के विकास में उपयोगी 22
  अरनी राबर्ट्स
- आखिर हम कहाँ जा रहे हैं? 24
  प्रो. मिश्री लाल मांडोत
- बोर्ड परीक्षा की तैयारी 29
  उषा रानी स्वामी
- यावत जीवेत सुखम जीवेत 30
  डॉ. गिरीशदत्त शर्मा
- ग्लोबल वार्मिंग 31
  कैलाश कुमार जाटोल
- सेवाकाल का स्वर्णिम युग 32
  शिव दयाल शर्मा
- कैसे लगाएँ शाला की शोभा में चार चाँद 33
  ओमदत्त जोशी
- बालिका शिक्षा की भूमिका 35
  गायत्री शर्मा
- शिक्षक का दायित्व-बोध 36
  वृद्धि चन्द गोठवाल
- जीवन : चलने का नाम 37
  किशन गिरि गोस्वामी
- बाल संसद : **टेकाराम रेगर** 38
- स्कूल समय में विद्यार्थियों द्वारा छुट्टी मांगने पर विचार करें। 39
  भूरमल सोनी
- निर्देशन एवं परामर्श : आवश्यकता एवं महत्त्व 40
  दिनेश कुमार गुप्ता
- एंड्रयू कारनेगी ने शिक्षा को समर्पित की आपनी सम्पत्ति 46
  सांवला राम नामा

मासिक गीत

- अगर हम नहीं देश के काम आए.... 15
  साभार : 'गीत गुंजन' पुस्तक से

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-28
- पञ्चाङ्ग (दिसम्बर, 2018) 28
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 28
- शाला प्रांगण 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 23, 31

पुस्तक समीक्षा 43-46

- धरती पुत्र, लेखिका : करुणा श्री
  समीक्षक : **डॉ. सत्यनारायण स्वामी**
- काळजो कसमसावै, लेखिका : डॉ. कृष्णा आचार्य
  समीक्षक : **डॉ. नमामी शंकर आचार्य**
- कठै गई बा (राजस्थानी काव्य संग्रह)
  लेखक : दुष्यन्त जोशी
  समीक्षक : **डॉ. मूलचन्द बोहरा**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

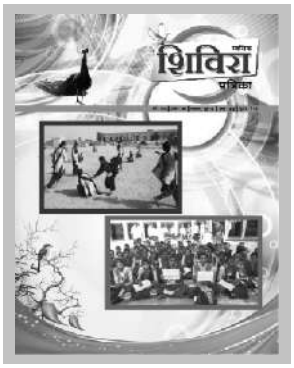

▼ चिन्तन

पात्रतायां विकासोऽयं
ह्यनेकानेक-सम्पदाम्।
उपलब्धेर्विभूतीनां पन्थाश्च
केवलः स्मृतः।।

अर्थात्- पात्रता का विकास ही अनेकानेक विभूतियों और सम्पदाओं की उपलब्धि का एक मात्र मार्ग है।

(प्रज्ञो. प्र.मं.अ.2.61)

- राजस्थान शिक्षा विभाग की पथप्रदर्शक शिविरा दिन ब दिन निखर रही है। सुन्दर आवरण अत्यन्त आकर्षक है। नवम्बर 2018 अंक प्राप्त करते ही आद्योपांत पढ़ डाला। चूँकि चुनावी कर्त्तव्यार्थ प्रशिक्षण प्रवास में पढ़ने से वंचित रहने की जोखिम थी। अतः हर मास के अंक की तरह आदि पृष्ठ से अंतिम तक पढ़ा। मैं लगभग 40 वर्षों से विद्यार्थी जीवन से नियमित हर अंक पठन का प्रयास करता हूँ। पत्रिका उत्तरोत्तर आकर्षक संग्रहणीय प्रबोधनीय बनती जा रही है। निस्संदेह सम्पादक मण्डल साधुवाद का पात्र है। नवम्बर 2018 अंक के समस्त आलेख पठनीय व ज्ञानवर्द्धक हैं। रपट में यात्रावृत्तान्त अनुकरणीय है। सम्पादक मण्डल व लेखकों को साधुवाद।

मोहनराम विश्नोई, मदासर, जैसलमेर

- प्रत्येक माह की तरह शिविरा नवम्बर 2018 का अंक नवीन साज-सज्जा के साथ हाथ में आया। इस अंक के मुखावरण पर विद्यार्थियों की तस्वीर है। विद्यार्थी दिवस होने के कारण विद्यार्थियों को आने वाली परीक्षाओं की तैयारी का संदेश दिया गया। हमारे निदेशक महोदय ने दिशाकल्प के माध्यम से दीप पर्व की शुभकामनाओं के साथ ही इस पर्व में समाहित स्वच्छता अभियान से प्रेरणा लेकर चहुँओर के परिवेश को स्वच्छ व निर्मल बनाने का संदेश दिया। इसे अपने जीवन में उतार कर हम अपने कार्यालयों, अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाने में मनोयोग से योगदान देंगे। इस अंक में अभी हाल ही में स्कूल शिक्षा विभाग के पुनर्गठन पश्चात एकीकृत शिक्षा संकुलों की स्थापना के पश्चात एकीकृत शिक्षा संकुल के कार्य संचालन एवं कार्यरत अधिकारियों के कार्य एवं दायित्व के सम्बन्ध में दिशा निर्देश छापे गए इससे ये अंक अमूल्य बन गया है। सभी शिक्षा अधिकारियों के लिए यह अंक उपयोगी व संग्रहणीय है। इसके लिए टीम शिविरा को साधुवाद।

परमेश्वरी देवी, दातारामगढ़, सीकर

- प्रत्येक माह की तरह नवम्बर 2018 का शिविरा अंक मिला। इस माह के मुख्य आवरण में स्कूली छात्राओं की गतिविधियों का छायाचित्र आकर्षक लगा। हमारे निदेशक महोदय के 'दिशाकल्प' में स्वच्छता और शिक्षा के विचारों से हमें प्रेरणा प्राप्त हुई। आलेख 'उद्बोधन व बाल सभा का महत्त्व' अच्छा लगा, शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तर होने वाली गतिविधियों से बच्चों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। शिविरा में प्रकाशित होने वाला प्रत्येक लेख प्रभावशाली है।

संगीता भाटी, बीकानेर

- प्रत्येक माह प्रकाशित होने वाली 'शिविरा' उत्कृष्ट पत्रिका है। खासकर तब, जब इसमें विभागीय आदेश, शैक्षिक आलेख एवं अन्य समाजोपयोगी गतिविधियों का सुचारू रूप से प्रकाशन किया जाता है। मैंने इस विभागीय पत्रिका का नवम्बर माह का अंक पढ़ा और इस पुस्तक के मुखावरण व चित्रवीथिका ने मुझे आकर्षित किया। एक विभागीय पत्रिका जिससे उम्मीद की जाती है वो सभी उपयोगी सामग्री इस पुस्तक में सारगर्भित है। इस नवम्बर माह की पत्रिका में लेख रोचक एवं प्रेरणादायी हैं। खासकर ''भारत दर्शन'' में लेख 'विद्यालयी शिक्षा में भारत भक्तिः कुछ प्रयोग' इस लेख ने मुझे बहुत प्रभावित किया व प्रेरणा प्रदान की है।

भगवान सिंह पूनिया, बीकानेर

- दिशाकल्प मेरा पृष्ठ में निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने चार महत्त्वपूर्ण बातों को उल्लेखित किया है। स्वच्छता, एकीकृत शिक्षा संकुलों की स्थापना प्रकाश पर्व दीपमालिका भावी चुनाव। युग परिवर्तन हेतु सर्वप्रथम स्वयं में परिवर्तन अच्छा व सकारात्मक संदेश है। बालसभा की उपयोगिता विद्यार्थियों के लिए पठनीय, उपयोगी लेख है।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

श्रेष्ठ का वरण करें

राज्य में लोकतंत्र की सबसे बड़ी पंचायत राजस्थान विधानसभा के गठन हेतु 07 दिसम्बर को मतदान है। प्रत्येक मतदाता पूर्णत: स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करे, इस हेतु हम सभी दृढ़ संकल्पित हैं। हमारे शिक्षक और कर्मचारी चुनाव के महायज्ञ में अपनी आहुतियाँ पूर्ण मनोयोग से दे रहे हैं। विद्यार्थी भी घर-घर जाकर मतदाता जागरूकता अभियान से जुड़कर मतदाताओं को शत प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करें। सजग मतदाता अपने क्षेत्र के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि का चयन कर राज्य और राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

दिसम्बर माह वर्तमान शिक्षा सत्र के उत्कर्ष का माह है, परीक्षा का समय है। शिक्षकों के अध्यापन और विद्यार्थियों के अध्ययन का मूल्यांकन अर्द्धवार्षिक परीक्षा (11-24 दिसम्बर 2018) के रूप में है। संस्थाप्रधान और शिक्षक श्रेष्ठतम कर्त्तव्य निर्वहन और कुशल प्रबन्धन से परीक्षा की गरिमा और गौरव के महत्त्व को सर्वोच्च वरीयता प्रदान करें। अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के सफल संचालन पश्चात विद्यार्थियों की बोर्ड परीक्षाओं, वार्षिक परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ परिणाम के लिए शीतकालीन अवकाश (25 दिसम्बर 2018-07 जनवरी 2019) में अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था की जाकर समय का सदुपयोग किया जाना चाहिए। निर्धारित समय में द्रुतगति से परीक्षा प्रश्न पत्र हल करने सम्बन्धी उपयोगी कक्षाएँ लगाई जाए। उपचारात्मक और निदानात्मक शिक्षण से कमजोर विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाकर उनकी भी गुणात्मक एवं मात्रात्मक अभिवृद्धि की जा सकती है।

राष्ट्रीय सेवा योजना +2 स्तर के सात दिवसीय विशेष सेवा शिविर शीतकालीन अवकाश में सम्पन्न होंगे। विद्यार्थी इन शिविरों में शिक्षा के साथ-साथ सेवा के संस्कार 'मैं नहीं तुम' के आदर्श को जीवन में अपनाते हुए क्रियात्मक और व्यावहारिक पक्ष सीखते हैं। इन शिविरों में सेवा करके विद्यार्थी समुदाय के निकट आते हैं, वे सेवा के आन्तरिक सुख को अनुभूत करें एवं अच्छे नागरिक के रूप में राष्ट्रीय संपदा का कार्य करें।

शीतकालीन अवकाश में ही शिक्षकों के विषय आधारित प्रशिक्षण शिविरों में शिक्षकों की भागीदारी शत-प्रतिशत सुनिश्चित हो, साथ ही वे प्रशिक्षण में सीखे नवाचार को अपने शिक्षण का हिस्सा बनाएँ ताकि शिक्षण के सरल तरीके समझकर अपने अध्यापन के तरीकों में समयानुसार सुधार करें।

एकीकृत शिक्षा संकुलों के पुनर्गठन पश्चात ब्लॉक स्तर से शीर्ष तक प्रभावी पर्यवेक्षण और क्रियान्वयन से सर्वश्रेष्ठ परिणाम अपेक्षित हैं। कार्ययोजनाओं की शत प्रतिशत क्रियान्विति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आगामी सत्र में भी उत्साहजनक नामांकन वृद्धि से हमारे विद्यालय सही अर्थ में आदर्श और उत्कृष्ट रूप में प्रतिष्ठित रहें, ऐसे ठोस प्रयास अविराम चलते रहें।

कर्त्तव्य पथ पर निरन्तर अविचल अग्रसर रहें, श्रेष्ठ का वरण करें।

सभी को शुभकामनाओं के साथ।

(नथमल डिडेल)

"एकीकृत शिक्षा संकुलों के पुनर्गठन पश्चात ब्लॉक स्तर से शीर्ष तक प्रभावी पर्यवेक्षण और क्रियान्वयन से सर्वश्रेष्ठ परिणाम अपेक्षित हैं। कार्ययोजनाओं की शत प्रतिशत क्रियान्विति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आगामी सत्र में भी उत्साहजनक नामांकन वृद्धि से हमारे विद्यालय सही अर्थ में आदर्श और उत्कृष्ट रूप में प्रतिष्ठित रहें, ऐसे ठोस प्रयास अविराम चलते रहें।"

पुण्यतिथि

एक भारत श्रेष्ठ भारत के शिल्पी सरदार वल्लभ भाई पटेल

❒ विजयसिंह माली

बिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्त्वहीन रह जाती है। यदि पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे नहीं होते। पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे। **- लंदन टाइम्स**

भारत के लोहपुरुष के रूप मे विख्यात भारत के प्रथम गृहमन्त्री व उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में करमसद गाँव के कृषक झवेर भाई पटेल की धर्मपत्नी लाडबा की कोख से हुआ। इनके पिता झवेरभाई 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े थे तथा स्वामीनारायण पंथ के परम भक्त थे। वल्लभ भाई का बाल्यकाल अपने माता-पिता के साथ अपने गाँव करमसद में ही व्यतीत हुआ तथा प्रारम्भिक शिक्षा यहीं से प्राप्त की। 1897 ई. में उन्होंने नडियाद से मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। वल्लभ भाई विद्यार्थी जीवन से अत्यन्त निर्भीक थे। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह उनके जीवन का विशिष्ट गुण था। उन्होंने अध्यापकों द्वारा पुस्तकें बेचने की कुप्रवृति का विरोध कर उसे बंद करवाया। माता-पिता के गुण संयम, साहस, सहिष्णुता व देशप्रेम का प्रभाव वल्लभ भाई के चरित्र पर स्पष्ट था।

1908 में पटेल की पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय उनके एक पुत्र और एक पुत्री थी। पटेल की पत्नी की मृत्यु के तार से भी पटेल अपनी कर्तव्यपरायणता से विचलित नहीं हुए। धैर्यपूर्वक बहसपूर्ण कर ही अदालत से प्रस्थान किया। 1910 में वे लंदन गए और वहाँ उच्च श्रेणी से परीक्षा में उत्तीर्ण होकर 1913 में भारत लौटे व अहमदाबाद में बस में गए। अब वे अपराध कानून के अग्रणी बैरिस्टर बन चुके थे। 1917 में वे मोहनदास करमचंद गाँधी के सम्पर्क में आए। गाँधीजी से प्रभावित होकर उन्होंने अपने जीवन की दिशा बदल डाली। उन्होंने फैशन परस्त गुजरात क्लब छोड़ दिया, भारतीय किसानों के समान वस्त्र पहनने लगे व भारतीय जीवन शैली को अपना लिया। 1918 में उन्होंने गाँधीजी के साथ मिलकर खेड़ा किसान

आंदोलन का नेतृत्व किया तथा सूखे से पीड़ित किसानों को कर न देने के लिए प्रेरित किया अन्ततः सरकार झुकी व करों में राहत दी गई। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

सरदार पटेल 1917-24 तक अहमदाबाद के निगम आयुक्त व 1924 से 28 तक निर्वाचित नगरपालिका अध्यक्ष भी रहे। 1928 में पटेल ने गुजरात के बारदोली में किसान आंदोलनों का नेतृत्व कर लगान वृद्धि का जमकर विरोध किया अंततः किसानों की जीत हुई। बारदोली आंदोलन का कुशल नेतृत्व करने के कारण वहाँ की महिलाओं ने इन्हें सरदार की उपाधि दी। अब सरदार पटेल कांग्रेस के क्रियाकलापों से पूर्णरुपेण जुड़ चुके थे। मार्च 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान पटेल को तीन महीने जेल हुई। मार्च 1931 में पटेल ने कांग्रेस के कराची अधिवेशन की अध्यक्षता की। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने मूल अधिकार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया।

जनवरी 1932 में उन्हें गिरफ्तार किया गया। वे यरवदा जेल में गाँधीजी के साथ 16 माह रहे। जुलाई 1934 में वे रिहा कर दिए गए। 1937 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी के संगठन को व्यवस्थित किया। अक्टूबर 1940 में कांग्रेस के अन्य नेताओं के साथ वह पुनः गिरफ्तार हुए और अगस्त 1941 में रिहा हुए। 1946 में बनी अंतरिम सरकार में वे गृहमंत्री तथा उप प्रधानमंत्री बनाए गए। गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देशी रियासतों को भारत में मिलाना था। माउंटबेटन योजना के तहत देशी रियासतों को भारत या पाकिस्तान में मिलने या स्वतंत्र रहने की छूट थी। उस समय 565 देशी रियासतें थी, इनका एकीकरण का कार्य कठिन परन्तु महत्त्वपूर्ण था। सरदार पटेल ने इस ज़िम्मेदारी को स्वीकारा तथा अपनी एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने हेतु साम, दाम, दण्ड, भेद पूर्वक एक-एक कर के सभी रियासतों का भारत में विलय करवाया। अगर सरदार पटेल निरंतर प्रयास न करते तो आज भारत की जगह बहुत सारे देश होते, जो एक-दूसरे से लड़ते रहते। उन्होंने जगह-जगह घूमकर सब राजाओं को एक साथ जोड़कर भारत बनाने के लिए राजी किया, उन्हें सबको इकट्ठा करने में थोड़ा समय लगा पर इसके लिए हिंसा, बल का उपयोग नही करना पड़ा। भारत विभाजन से जितने क्षेत्र व जनसंख्या की हानि हुई, भारतीय राज्यों के विलय से पूरी हुई। इस ऐतिहासिक एकीकरण के चलते भारत को आजादी खंडित टुकड़ों की बजाय एक अखण्ड राष्ट्र के रूप में मिल सकी। 9 नवम्बर 1947 को जूनागढ़ को भी भारत में

मिला दिया गया। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनः निर्माण का संकल्प लिया तथा इसे पूर्ण किया। 17 सितम्बर 1948 को सेना द्वारा ऑपरेशन पोलो के माध्यम से हैदराबाद को भी भारत में मिला दिया। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा छोटी बड़ी रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्राँति थी। महात्मा गाँधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा.. रियासतों की समस्या इतनी जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे। जिस प्रकार बिस्मार्क ने जर्मनी के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी तरह वल्लभ भाई पटेल ने भी आजाद भारत को विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया तथा भारत के लोह पुरुष कहलाए। सरदार पटेल के प्रयासों से लक्षद्वीप पर भी भारतीय तिरंगा फहराया जा सका यदि पटेल की बात उस समय मान ली गई होती तो 1961 तक गोवा के भारत में विलय की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। सरदार पटेल ने पाकिस्तानी व चीन की चालाकी पूर्ण चालों से देश व सरकार को आगाह किया। अपनी अद्‌भुत संगठन क्षमता और सूझ बूझ के बल पर उन्होंने देश को विभाजन के बाद की मुश्किलों तथा अव्यवस्थाओं से उबारने में सफलता प्राप्त की। एक भारत श्रेष्ठ भारत के आकांक्षी सरदार पटेल ने भारतीय नागरिक सेवा आइ.सी.एस. को भारतीय प्रशासनिक सेवा आइ.ए.एस. बनाया तथा नौकरशाहों को राज भक्ति से देश भक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल और कुछ वर्ष जीवित रहते तो संभवत नौकरशाही का पूर्ण भारतीयकरण हो जाता। पटेल का 10 अक्टूबर 1949 का वक्तव्य इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पटेल किसान परिवार के थे। वे भारतीय कृषक की नब्ज को पहचानते थे। उनका चिंतन गाँव की मिट्‌टी से रचा पगा था तथा वे गाँधीजी के अनुरूप एक ग्रामोन्मुखी एवं श्रेष्ठ भारत के भविष्य का विचार करते थे। उन्हीं की प्रेरणा व मार्गदर्शन से किसानों ने मिलकर 'दुग्ध क्रांति' की शुरूआत की व अमूल जैसा ब्रांड उभरकर आया।

सरदार एक ऐसे नेता थे जो भारत की एकता के प्रति कटिबद्ध थे और हर कीमत पर उग्रवाद का खात्मा चाहते थे। सरदार पटेल पंथ निरपेक्षता के बड़े पैरोकार थे। उन्होंने हिन्दुओं और मुस्लिमों को साथ लेने के लिए हर सम्भव प्रयास किए। विभाजन के बाद हुए दिल्ली के दंगों के दौरान आधी रात को वह निहत्थे दंगाइयों की भीड़ में गए ताकि लोगों को हिंसा से बचाया जा सके। उन्होंने अमृतसर जाकर वहाँ के लोगों की हिफ़ाजत करने की अपील की। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में दिए उनके व्याख्यान से भी उनके पंथनिरपेक्ष होने की पुष्टि होती है। वे आधुनिक भारत के शिल्पी थे। अपने निर्भीक नेतृत्व तथा सुदृढ़ प्रशासनिक क्षमता के कारण उनकी छवि भारत के जनमानस पर सदैव अंकित रही है। सचमुच वे आधुनिक चाणक्य थे। उन्हें पद ऐश्वर्य तथा धन-सम्पत्ति के संग्रह की कोई लालसा नहीं थी। तन-मन-धन सें गाँधीवादी जीवन-दर्शन के अनुयायी सरदार पटेल ने अपने परिवार तथा बच्चों के लिए कोई सम्पत्ति नही जोड़ी। उन्हें जनता जर्नादन से जो कुछ मिला उसे देशहित में समर्पित कर दिया। सरदार पटेल का निधन हुआ तब उनके बैंक खाते में मात्र 260 रुपये थे। उनके पास खुद का मकान भी नही था, वे अहमदाबाद में किराए के मकान में रहते थे।

सरदार पटेल ने एकीकृत भारत की चाह रखने वाले नेता भले ही वह इनके विरोधी रहे हो के योगदान को कभी अनदेखा नहीं किया। उनके विमर्श के कारण ही डॉ. अम्बेडकर व श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्र भक्त नेहरु मंत्रिमण्डल का हिस्सा बनाए गए। सरदार पटेल के प्रयासों के कारण ही डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के राष्ट्रपति बन पाए। सरदार पटेल के ऐतिहासिक कार्यों में सोमनाथ मंदिर का पुनःनिर्मित व गाँधी स्मारक निधि की स्थापना महत्त्वपूर्ण हैं। 15 दिसम्बर 1950 को प्रात: काल 9.37 बजे इस महापुरुष का 76 वर्ष आयु में निधन हो गया, पूरा राष्ट्र शोक मग्न हो गया, भारत को अपूरणीय क्षति हुई।

सरदार पटेल मनसा वाचा कर्मणा देशभक्त थे। कर्म और संघर्ष को वे जीवन का ही रूप समझते थे। भारत के देशभक्तों में एक अमूल्य रत्न सरदार पटेल को भारत सरकार ने 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया। आज सरदार पटेल हमारे बीच नही है। लेकिन उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की प्रासंगिकता बनी हुई है, वे हमारे प्रेरणा स्रोत है, उनकी स्मृति में बनाया जाने वाला, स्टेच्यु ऑफ यूनिटी, हमें सदैव इस महान राष्ट्र की एकता तथा अखंडता की प्रेरणा देता रहेगा उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाना सर्वथैव उचित है। सचमुच सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता के अद्‌भुत शिल्पी थे जिनके हृदय में भारत बसता था।

प्रधानाचार्य,
रा.बा.उ.मा.वि सादड़ी (पाली)
मो: 9829285914

आत्मनिरीक्षण और उसकी महत्ता

दूसरों के गुण-दोष विवेचन में मनुष्य जितना समय खर्च करता है, उसका एक प्रतिशत भी यदि आत्मनिरीक्षण में लगाए तो आदर्श मनुष्य बन जाए। दूसरे के दोष आँख से दीख जाते हैं, पर अपने दोषों का चिंतन, मन के शाँत होने पर स्वयं करना पड़ता है। शरीर का दर्पण तो कारीगरों ने बना दिया है, पर चरित्र का दर्पण अभी तक कोई नहीं बना और न बनेगा। जो व्यक्ति छिद्रान्वेषण करते हैं, वे प्रायः छिप कर करते हैं। पीठ-पीछे सब एक दूसरे को भला-बुरा कह लेते हैं, निंदा कर लेते हैं। हमारी बातचीत का विषय ही प्रायः परनिंदा होता है। मन में दुर्भावना रहते हुए अक्सर लोग चापलूसी भरी प्रशंसा करते रहते हैं। ऐसी प्रशंसा आप को सही आत्मनिरीक्षण से रोकती रहती हैं। मनुष्य-चरित्र की यह सबसे बड़ी कमज़ोरी है कि वह अपनी प्रशंसा का सदा भूखा रहता है। अंतिम साँस तक भी मनुष्य की यह भूख नहीं जाती।

सच्चाई तो वही है, जो हमारे अंतःकरण में छिपी है। अपना गुप्तचर आप बन कर ही हम उसका अनुसंधान कर सकते हैं। यह आत्मपरीक्षा ही हमें, हमारे चरित्र के असली स्वरूप को हमारे सामने प्रकट करेगी और तभी हम चरित्र में सुधार कर सकेंगे।

हमारा व्यवहार ही हमारे चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। हमें अपने को अपने ज्ञान से नहीं, वरन् अपने व्यवहार से परखना चाहिए।

अखण्ड ज्योति-दिसंबर 1964 पृ. 14

विजय दिवस 16 दिसम्बर

संसार में भारत के गौरव की स्थापना का पर्व

❒ जयप्रकाश राजपुरोहित

दुनिया के इतिहास में लेनिनग्राद के युद्ध समर्पण के बाद सबसे बड़ा युद्ध समर्पण ढाका में हुआ पाकिस्तान का समर्पण। 93000 अनुमानित पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के समक्ष समर्पण कर दिया था। भारतीय कूटनीति, सेना के अतुलनीय पराक्रम और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के लोगों के प्रति भारत के अच्छे व्यवहार से ये सब संभव हुआ।

यह सत्य घटना है 1971 ई. की। पाकिस्तान 1965 के युद्ध में करारी पराजय के बावजूद न तो अपनी हार मान रहा था न ही भारत के प्रति उसका दृष्टिकोण सुधर रहा था। पाकिस्तान की कमान सैनिक तानशाह याहया खान के पास थी। जो अव्वल दर्जे का अय्याश व्यक्ति था। पाकिस्तान की अवाम को भारत विरोध के नशे में चूर करके उन्हें अतिसामान्य जरूरतों से भी वंचित रखा जा रहा था। अंग्रेजों से मिली स्वतन्त्रता के बाद बंगाल का क्षेत्र किसानों के शोषण के बाद सबसे गरीब क्षेत्र बना हुआ था। इसका एक हिस्सा भारत में तो दूसरा हिस्सा पाकिस्तान में था। पाकिस्तान का ये हिस्सा पूर्वी बंगाल कहलाता था जिसे पूर्वी पाकिस्तान नाम दिया गया। पाकिस्तान की सत्ता और सेना पश्चिमी पाकिस्तान से संचालित थी और पूर्वी पाकिस्तान के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता था। पूर्वी पाकिस्तान के शोषण और दमन के बल पर पश्चिमी पाकिस्तान को सम्पन्न बनाए जाने की कोशिश की जा रही थी। इससे पूर्वी पाकिस्तान की आम जनता का गुस्सा उबल रहा था। भारत के द्वारा उस क्षेत्र के लोगों के लिए रोज़गार, व्यापार आदि के अवसर उपलब्ध करवाने के कारण उनकी हमारे देश के प्रति अच्छी भावना का वातावरण था। याहया खान के शासन काल में पूर्वी पाकिस्तान के लोकप्रिय दल अवामी लीग के नेताओं को प्रताड़ित किया जाने लगा। जिसके फलस्वरूप बंगबंधु कहलाए जाने वाले शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में वहाँ

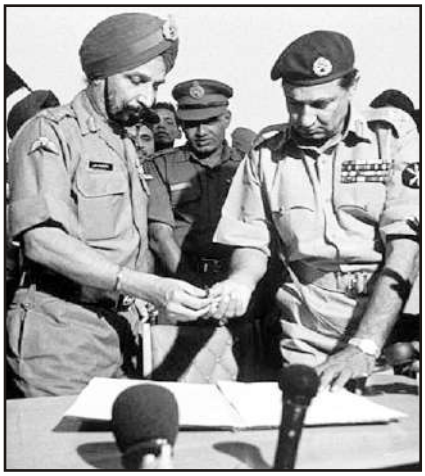

स्वतन्त्रता आंदोलन खड़ा हो गया। वहाँ की जनता के साथ सेना के अत्याचार से भारत पर कार्यवाही का दबाव था लेकिन हजारों सालों के स्वयं आगे बढ़कर युद्ध न करने की अपनी नीति को भारत छोड़ना नहीं चाहता था, हालांकि वहाँ की जनता के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से भारत सरकार यथा संभव काम कर रही थी।

3 दिसंबर को पाकिस्तान ने अपनी सीमाएँ तोड़कर भारत के सैनिक अड्डों पठानकोट, श्रीनगर, अमृतसर, जोधपुर, आगरा आदि पर बम बरसाना शुरू कर दिया। भारत की सशक्त नेत्री इन्दिरा गाँधी और पराक्रमी सेना के लिए ये असह्य था। 4 दिसंबर के सूर्योदय के साथ पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना के गढ़ जेसोर पर भारतीय सेना की पाइन डिवीजन ने हमला बोल दिया। पाकिस्तान की लैंड माइंस भारतीय सैनिकों के हौंसले नहीं तोड़ सकी। जेसोर को खाली करवाकर पाकिस्तानी सेना को पीछे धकेलते हुए भारतीय सेना 8 दिसंबर तक दौलतपुर पहुँच गयी। सेना ने पाकिस्तानी सेना को पीछे हटने पर लगातार मजबूर किया और अंत में सारी सेना ढाका में जमा हो गयी। भारत के पास बहुत कम सैनिक इन मोर्चों पर तैनात थे लेकिन जिस वीरता का परिचय भारतीय सेना दे रही थी उससे लग रहा था कि भारत के पास कई गुना सैनिक शक्ति है।

14 दिसंबर को भारतीय सेना ने एक गुप्त संदेश को पकड़ा कि दोपहर ग्यारह बजे ढाका के गवर्नमेंट हाउस में एक महत्त्वपूर्ण बैठक होने वाली है, जिसमें पाकिस्तानी प्रशासन के बड़े अधिकारी भाग लेने वाले हैं। भारतीय सेना ने तय किया कि इसी समय उस भवन पर बम गिराए जाएँ। बैठक के दौरान ही मिग 21 विमानों ने भवन पर बम गिरा कर मुख्य हॉल की छत उड़ा दी। गवर्नर मलिक ने लगभग काँपते हाथों से अपना इस्तीफ़ा लिखा।

16 दिसंबर की सुबह इस मिशन की कमान संभाल रहे लेफ्टिनेंट जनरल जैकब को सेनाध्यक्ष सैम मानेक शॉ का संदेश मिला कि आत्मसमर्पण की तैयारी के लिए तुरंत ढाका पहुँचे। जैकब की हालत बिगड़ रही थी। नियाज़ी के पास ढाका में 26400 सैनिक थे, जबकि भारत के पास सिर्फ़ 3000 सैनिक और वे भी ढाका से 30 किलोमीटर दूर, लेकिन भारतीय सेना ने युद्ध पर पूरी तरह से अपनी पकड़ बना ली। भारत की सेना बहुत थोड़ी लेकिन हौंसला बहुत मजबूत था।

आत्मसमर्पण से पहले इसकी तैयारियों के लिए जैकब ढाका पहुँचे। लेफ्टिनेंट जनरल जैकब इतने आत्मविश्वासी थे कि उनके हाथ में कुछ भी नहीं था। जैकब जब पाकिस्तानी सेनानायक नियाज़ी के कमरे में घुसे तो वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। आत्म-समर्पण का दस्तावेज मेज पर रखा हुआ था।

कमांडर जगजीत सिंह अरोड़ा स्वयं मोर्चे पर डटे हुए थे। अरोड़ा अपने दलबल समेत एक-दो घंटे में ढाका लैंड करने वाले थे और युद्ध विराम भी जल्द खत्म होने वाला था। शाम के साढ़े चार बजे जनरल अरोड़ा हेलिकॉप्टर से ढाका हवाई अड्डे पर उतरे। अरोड़ा और नियाज़ी एक मेज के सामने बैठे और दोनों ने आत्म-समर्पण के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए। नियाज़ी ने अपने बिल्ले उतारे और अपना

रिवॉल्वर जनरल अरोड़ा के हवाले कर दिया। नियाज़ी की आँखों में आँसू आ गए।

अंधेरा घिरने के बाद स्थानीय लोग नियाज़ी की हत्या पर उतारू नजर आ रहे थे। भारतीय सेना के वरिष्ठ अफ़सरों ने नियाज़ी के चारों तरफ़ एक सुरक्षित घेरा बना दिया। बाद में नियाजी को बाहर निकाला गया। पाकिस्तानी सेना को सुरक्षित रखकर भारतीय सेना उनकी रक्षा करने लगी नहीं तो पूर्वी बंगाल के लोग उनके खून के प्यासे हो उठे थे। इंदिरा गाँधी संसद भवन के अपने दफ्तर में एक टीवी इंटरव्यू दे रही थीं। तभी जनरल मानेक शॉ ने उन्हें बांग्लादेश में मिली शानदार जीत की खबर दी।

इंदिरा गाँधी ने लोकसभा में शोर-शराबे के बीच घोषणा की कि युद्ध में भारत को विजय मिली है। इंदिरा गाँधी के बयान के बाद पूरा सदन जश्न में डूब गया। सेनाध्यक्ष सैम मानेक शॉ, लेफ्टिनेंट जनरल जैकब, कमांडर ले. जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, मेजर होशियार सिंह, लांस नायक अलबर्ट एक्का, फ्लाइंग ऑफ़िसर निर्मलजीत सिंह सेखों, लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल, चेवांग रिनचैन, महेन्द्र नाथ मुल्ला जैसे बहादुर सैन्य अधिकारियों की बदौलत भारत ने दुनिया में अपने पराक्रम का डंका बजा दिया। एक नए देश बांग्लादेश का जन्म हुआ, करोड़ों लोगों पर अत्याचार बंद हुए, पूर्वी बंगाल के लोगों ने वास्तविक स्वतन्त्रता की साँस ली।

आज भी इस विजय दिवस को याद कर हर भारतीय विजय के आनंद में गौरवान्वित हो जाता है।

व्याख्याता
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ग्राम-पोस्ट-हदाँ, तहसील-कोलायत,
जिला बीकानेर
मो: 9414012028

अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।

पुण्यतिथि

विध्वंस में भी सृजक : अलफ्रेड नोबेल

❒ टेकचंद्र शर्मा

नोबेल पुरस्कार के प्रणेता
हे अलफ्रेड आप विजेता।
दुरुपयोग आपके आविष्कारों का
सिरफिरा विध्वंस कहता।
दोष आपको देता रहना।
खुद को पाक साफ कहना।।
यह तो दुनियां की फितरत।
अच्छे को बुरा मानना।।

स्वीडन में सन् 1833 में 21 अक्टूबर को जन्मे, 10 दिसम्बर 1996 को आविष्कार करते हुए देहान्त हुआ। जैसे अहिंसा की प्रतिमूर्ति महात्मा गाँधी का देहान्त हिंसा से हुआ। वैसे ही सृजनशील नोबेल पुरस्कार के संस्थापक श्री अलफ्रेड नोबेल की मृत्यु आविष्कार करते हुए एक विस्फोट से हुई थी। चूँकि अपने पिताजी की कठिनाइयों को दूर करने के लिए आपने डाइनामाइट बेलिस्ट्राइटका आविष्कारक निर्माण किया था। इस कारण लोग आपको मौत का सौदागर कहते हैं। जो सरासर झूठ है। अपनी सम्पूर्ण धनराशि 58 लाख नोबेल फाउंडेशन को प्रदान की। स्वीडन के बैंक में उस धन राशि के ब्याज से हर साल नोबेल पुरस्कार दिया जाता है। अल्फ्रेड की मृत्यु के बाद 1901 से नोबल पुरस्कार का प्रारम्भ हुआ है। इन क्षेत्रों में श्रेष्ठत्तम उपलब्धि के लिए नोबेल पुरस्कार दिया जाता है। साहित्य, भौतिकी, रसायन, शान्ति, चिकित्सा एवं अर्थशास्त्र में यह पुरस्कार संसार की श्रेष्ठत्तम उपलब्धि के लिए शीर्ष व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है।

भारत में अब तक निम्नांकित नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत हुए है। गुरुदेव श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में गीतांजलि के सृजन पर) श्री सी.वी. रमन (भौतिकी) अमर्त्य सेन (अर्थशास्त्र) कैलाश सत्यार्थी (शांति) व मदर टेरेसा (शांति)। इन प्रवासी भारतीयों को भी यह पुरस्कार दिया गया- हरगोविन्द खुराना, वी.एस. नायपाल, वेंकटरमण व रामकृष्ण। उनका सोच उनका दृष्टिकोण वे समस्याओं के बारे में सोचकर उनके समाधान के बारे में ज्यादा सोचते थे। यह उनकी विशिष्टता थी। समस्या समाधान को खोजो यह था उनका दर्शन, जो सोच बन गया। डाइनामाइट की खोज भी समस्या के समाधान के लिए किया गया था ना कि विध्वंस के लिए। अतः विध्वंशक का निर्माण-खोज भी उनके सृजन का प्रतीक है। दुनियां के सामने एक समस्या थी। वैज्ञानिक होने के नाते उन्होंने इसका समाधान खोजा डाइनामाइट के रूप में अतः उन्हें विध्वंसक कहना अनुचित ही है।

कोई भी वैज्ञानिक महापुरुष आदर्श पुरुष मानव जाति के विध्वंस के लिए कोई आविष्कार या नवनिर्माण नहीं करता। वह तो संसार के भले के लिए खोज करता है। उस पर आरोप लगाना सरासर झूठ है। एक छोटा सा उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देगा। किसी ने चाकू का आविष्कार किया। सब्जी वगैरह काटने के लिए लोग उसका दुरुपयोग करके किसी का गला भी काट देते हैं। इसका आरोप आविष्कर्ता पर लगाना उसे आरोपित करना गलत है। इसी प्रकार से परमाणु बम का आविष्कार शांति स्थापना व अन्य रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है। आविष्कर्ता ने नरसंहार के लिए इसका आविष्कार नहीं किया था। सदुपयोग दुरुपयोग किसी साधन को काम में लेने पर निर्भर करता है, उसकी भावना सदुपयोग की है या दुरुपयोग की। वैज्ञानिक महापुरुष कभी भी दुनियां का बुरा नहीं सोचते भला ही सोचते हैं इसीलिए वे महान हैं।

साहित्य में रुचि- अधिकांश लोगों को उसकी जानकारी तक नहीं है कि उन्हें साहित्य से बहुत लगाव था। साहित्य की विधा कविता से वे बहुत प्रभावित थे। बहुत सी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उन्होंने अनुवाद भी किया था। उनका अंतिम काव्य संग्रह था। 'नामोसिस'। उपर्युक्त तथ्यों से सामान्य लोग अनभिज्ञ है। उनके अनेक आविष्कारों से दुनियां के कई महत्त्वपूर्ण कार्य कार्यान्वयन में सम्भव हुए है।

पूर्व शिक्षाधिकारी
शर्मा सदन, मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं 333001
मो: 9667212236

शिक्षक महिमा

धणी रो धणी कुण

❐ ओमप्रकाश सारस्वत

सामान्यतः आलेखों के शीर्षक प्रश्नसूचक नहीं होते; मगर इस आलेख का प्रश्नगामी शीर्षक 'धणी रो धणी कुण' कुछ खास प्रयोजन से दिया गया है। कोई तीन दशक पूर्व (मार्च 1990) शिक्षा विभाग के तत्कालीन निदेशक डॉ. ललित के. पंवार ने शिविरा पत्रिका में इसी शीर्षक से अपना 'दिशाकल्प' लिखा था। तब मेरी पोस्टिंग सीमावर्ती क्षेत्र अनूपगढ़ जिला श्रीगंगानगर में थी। यह दिशाकल्प इतना प्रभावी था कि उस दौर में हमने इस पर एक विचार गोष्ठी केशव नगर, 40 जीबी विद्यालय में रखी थी। कदाचित मस्तिष्क के किसी कोने में संजोई उन स्मृतियों के तार झंकृत हो गए हैं। कुछ भी हो, मगर गुरु महिमा का बखान करता वह दिशाकल्प समय के शिलालेख पर सदैव सामयिक एवं अर्थवान रहेगा।

राजस्थानी भाषा के शब्द 'धणी' का आशय मालिक होता है। अंग्रेजी भाषा में मालिक को Master कहते हैं और हमारे यहाँ शिक्षक को बोलचाल में मास्टरजी कहकर ही सम्बोधित किया जाता है। गुरुजन की महिमा अनन्त अपरम्पार होती है।

गुरु महिमा को बखानते हुए पंवार साब लिखते हैं, ''सर्वमान्य तथ्य यह है कि गुरुजी की भूमिका शाला के अध्यापक के रूप में एक मालिक जैसी है। गुरुजी मालिक हैं–

- ज्ञान के भण्डार के।
- अपने शिष्यों को विद्यादान करने के।
- शिष्यों के चरित्र निर्माण एवं भविष्य निर्माण के।

इतिहास गवाह है कि हर अर्जुन को द्रोण, चन्द्रगुप्त को चाणक्य कबीर को रामानंद और विवेकानंद को राम कृष्ण परमहंस गुरु के रूप में मिले हैं, तभी उनकी प्रतिभा मुखरित हुई थी और वे शिष्य गुरु के मार्गदर्शन में इतने मकबूल हुए कि उनके गुरु भी शिष्य के नाम से जाने जाने लगे– गुरु कीर्ति का यह चरमोत्कर्ष था।'' वास्तव में जब गुरु शिष्य में विलीन हो जाए, तब वह शिष्य की पहिचान से पहिचाना जाने लगता है। यह विलीन होने की परम्परा, असल में पाने की परम्परा है। इसका आनन्द शिक्षा जगत में मिल सकता है।

शिक्षक ज्ञान भण्डार के संवाहक होते हैं। ज्ञान भण्डार की चाबी उनके पास होती है। वे केवल अंक अक्षर के रूप में विद्यादान ही नहीं करते। वरन चरित्र निर्माण एवं भविष्य निर्माण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य भी वे ही करते हैं। उदरपूर्ति के लिए अन्नदान को परमदान कहा गया है लेकिन विद्यादान को उससे बड़ा माना गया है। संस्कृत भाषा में एक सुभाषित है–

अन्नदानं परं दानं विद्यादानं अतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिः यावज्जीवं च विद्यया।।

अर्थात् अन्नदान बड़ा दान है लेकिन विद्यादान उससे भी बड़ा है। कारण अन्न से कुछ समय के लिए तृप्ति होती है मगर विद्या से तो सम्पूर्ण जीवन तृप्तिमय एवं सुखमय हो जाता है। यह विद्या का दान कौन कर सकता है? उत्तर बिल्कुल वस्तुनिष्ठ है। गुरु के आसन पर बैठा शिक्षक ही यह काम कर सकता है और इस काम में वह अपना धणी आप है। हिन्दी के प्रख्यात कवि डॉ. हरिराम आचार्य के एक गीत का मुखड़ा है–

जिस समाज में शिक्षक का सम्मान नहीं होता है।
उसमें चाहे कुछ भी हो, पर ज्ञान नहीं होता है।

जगत की भौतिक वस्तुएँ भुजबल से प्राप्त की जा सकती हैं। ज्ञान उसका अपवाद है। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला सूत्र ज्ञान पर लागू नहीं होता। ज्ञान समर्पण मांगता है, ज्ञान जिज्ञासा एवं विनम्रता चाहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, योगेश्वर श्री कृष्ण, चन्द्रगुप्त, सिकन्दर, अर्जुन, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानंद जैसे समर्थ पात्र अपने गुरुजन की कृपा से ही वे मंज़िलें हासिल कर पाए जिनके कारण वे शिखर पुरुषों में शुमार हुए। शिष्य की विनम्रता उसकी मेधा, उसकी योग्यता से बड़ी होती है। यह सोने में सुहागे की तरह होती है। बड़े लोग बड़ी विनम्रता से अपनी सफलता अपने गुरुजन को समर्पित करते हैं। शिष्य सिकन्दर और गुरु अरस्तु का एक प्रसिद्ध आख्यान है। डॉ. ललित के. पंवार के शब्दों में,''गुरुजी मालिक हैं, यह बात विश्व–विजयी सम्राट सिकन्दर ने अपने गुरु अरस्तु के बारे में कही थी। यह मशहूर वाकिया इस प्रकार हैः एक बार सम्राट सिकन्दर अपने गुरु अरस्तु के साथ यात्रा पर थे। रास्ते में एक बरसाती नाला आ गया जिसमें पूरे वेग से पानी बह रहा था। गुरु अरस्तु ने सिकन्दर से कहा कि वे इस नाले पर लेट जाते हैं ताकि सिकन्दर उनके ऊपर से होकर नाला पार कर ले। इस प्रस्ताव को सम्राट सिकन्दर ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि– 'हे गुरुदेव, मैं नाले पर लेटूँगा और आप मेरे शरीर पर से चलकर यह नाला पार कर लें क्योंकि आपका जीवन मेरे जीवन से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। यदि मेरा जीवन समाप्त हो जाता है तो आप हजारों सिकन्दर और बना सकते हैं परन्तु हजारों सिकन्दर मिलकर भी एक अरस्तु नहीं बना पाएँगे।

बल के कई प्रकार हैं– धनबल, भुजबल, ज्ञानबल आदि। शिक्षक के पास धनबल और भुजबल तो नहीं होता लेकिन ज्ञान बल उस के पास होता है। विनम्रता का पाठ पढ़ाते–पढ़ाते वह इतना विनम्र हो जाता है कि अपने ज्ञानबल, अपने कौशल बल को स्वयं नहीं बखानता। भूला हुआ सा रहता है। तब उसकी ताकत को स्मरण कराने के लिए जामवंत की जरूरत होती है। हनुमान में अतुलित बल है और वे ज्ञान के समुद्र हैं– जय हनुमान ज्ञान गुण सागर लेकिन यह सब उन्हें याद दिलाना पड़ता हैं।

रामायण में एक प्रसंग आता है। सीता का पता लगाने की रणनीति बनाने के लिए वानरराज सुग्रीव की अध्यक्षता में हुई बैठक का एजेण्डा था कि समन्दर पार लंका में जाकर सीता का पता लगाने का काम कौन करे। अंगद बोले कि मैं जा तो सकता हूँ लेकिन वापिस लौट पाना मुश्किल है। वृद्ध वानर अपनी आयु का हवाला दे रहे थे तो जवान एवं किशोर अपनी अनुभव शून्यता की बात कह रहे थे। वानर समूह में हनुमान चुपचाप बैठे थे। बूढ़े जामवंत को हनुमान की ताकत का अंदाज था। यह कहकर उन्होंने हनुमान को उनका बल याद दिलाया–

जामवंत के वचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

आगे क्या हुआ...कैसे हुआ के बारे में

हम अच्छी तरह जानते हैं। हनुमान को अपने बल का अनुमान नहीं था। ऋषि श्राप के कारण वे उसे भूले हुए थे। कुछ ऐसा ही हमारे गुरुजन के साथ है। गुरुजन बड़ा व्यापक शब्द है जिसके माने छोटी से छोटी ढाणी में पढ़ा रहे शिक्षाकर्मी अथवा शिक्षा सहयोगी व पंचायत सहायक से लेकर सचिवालय तक में काम कर रहे शिक्षा अधिकारियों तक से है। उन्हें भी सहज रूप में अपने बल का भान नहीं रहता। ऐसे में सूत्रधार के रूप में एक जामवंत चाहिए। जामवंत बनकर यह बल याद दिलाया विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री नरेश पाल गंगवार ने। दरअसल वे एक अभियान के नियंता एवं अभियंता हैं। इस पंचवर्षीय अभियान के प्रारंभिक दिनों में जब अधिकारीगण को कोई टास्क दिया जाता तो वे आपस में फुसफुसाते, ''ऐसे कोई होता है क्या... समय तो चाहिए ही आदि-आदि। मगर वे जामवंत बनकर ऐसा मंत्र फूंकते कि काम होकर ही रहता। इन रातों जगी कथाओं का अपना एक इतिहास है जिसे सचिवालय, निदेशालय एवं फील्ड के तब के अधिकारी भली भाँति जानते हैं। शिक्षा अधिकारियों में लीडरशिप का प्राण इन्हीं जामवंत जी ने फूँका है। इस तथ्य को राज्य के सामान्य शिक्षक से लेकर केन्द्र सरकार तक सब जाते और मानते है।

देश में इस समय 29 राज्य हैं। इनमें भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है। शिक्षा के क्षेत्र में बीमारू और पिछड़ा राज्य इसी तथ्य से प्रमाणित हो जाता है कि 29 राज्य में हम 26वें स्थान पर थे। शासन स्तर से प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का ऐसा बिगुल बजा कि निर्देश मिलने पर हनुमान (शिक्षा अधिकारी) यथा समय लंका की यात्रा कर (प्रक्रिया) सीता का पता (कार्य सम्पन्न) लगा लेते। इसी का सुखद परिणाम है कि 26वें पायदान वाला राजस्थान दूसरे स्थान पर आ गया है। न जाने कितने सम्मान इस अवधि में राज्य को मिले हैं। सोशल मीडिया पर इन दिनों चलते ही बधाइयों का दौर चल पड़ता है। शिक्षा के आसियाने में रोज थाली बजती है। वह दिन दूर नहीं, जब शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान नम्बर वन होगा और देश के अन्य राज्यों से ही नहीं (जैसा कि अभी हो रहा है) अपितु विश्व भर से लोग जामवंत (नीतिकार) एवं हनुमान (क्रियान्वितिकार) की जुगलबंदी को देखने-समझने के लिए यहाँ आएँगे। भगवान श्री कृष्ण (नीति) एवं अर्जुन (क्रियान्विति) के रूप में भी इसे देखा जा सकता है।

शिक्षा अधिकारियों की वर्क परफोरमेंस एवं आउटपुट को लेकर बहुधा नेगेटिव कमेंट्स किए जाते रहे हैं। 'ये तो गुरुजी हैं... पढ़ा ही सकते है... प्रशासन इनके वश का काम नहीं।' वगेरा-वगेरा और इन टिप्पणियों का समाहार होता कि शिक्षा में प्रशासनिक अधिकारी लगा दिए जावे। ऐसे अनेक अप्रिय दृष्टान्त हम पुराने अधिकारियों ने सुने हैं। शिक्षा अधिकारी, अपना बल भूले हुए हनुमान मन मसोस कर रह जाते। ऐसी टिप्पणियाँ सुनकर वे तिलमिला जाते और असमय सेवानिवृत्त (वी.आर.एस.) की सोचने लगते। इतिहास खंगोले तो ऐसी वी.आर.एस. मैन कई मिल जाएँगे। बहरहाल आज स्थितियाँ सर्वथा भिन्न हैं। उनकी पोजीशन में बहुत सुधार हुआ है। सम्मान बढ़ा है। हौसला चेतन हुआ है। शिक्षा अधिकारियों के स्थान पर प्रशासनिक अधिकारी लगाने की कहने वाले अब यदि प्रशासनिक क्षेत्र में भी आई.ए.एस. को लगाने की कहने लगे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जैसे-तैसे नौकरी पूरी करने का जप करने वाले अब यथा समय वांछित काम करते हुए एंजोय कर रहे हैं। यहाँ भी यही उजागर हुआ है कि वे अपना सुधार स्वयं ही कर सकते हैं। वे स्वयं धणी हैं, वे स्वयं नियोजक एवं नियामक हैं। समस्या एवं समाधान का एक सिद्धांत है कि समस्याग्रस्त स्वयं समस्या के समाधान ढूँढ़ेंगे, तब ही कोई राह निकलेगी। शिक्षा विभाग ने यह समझ लिया है। अपने धणीपन को काम में लेना प्रारम्भ कर दिया है।

सरकारी विद्यालयों की स्थिति बहुत सुधर गई है। भवनों में अतिरिक्त निर्माण, मरम्मत, रंगाई-पुताई, कक्षा-कक्षों एवं दीवारों पर चित्र सज्जा, फर्नीचर, उपकरण, प्ले ग्राउण्ड, बिजली, पानी सब मयस्सर हैं। कभी टाट पट्टियों के स्थान पर घर से लाई खाली हुई बोरियों अथवा सीधे ही जमीन पर बैठने वाले विद्यार्थियों के लिए सुन्दर एवं उपयोगी फर्नीचर उपलब्ध है। ब्लेक बोर्ड विहीन अथवा टूटे-फूटे बदरंग हो गए ब्लेक बोर्ड वाली कक्षाओं में अब ग्रीन बोर्ड, व्हाइट बोर्ड, स्मार्ट बोर्ड नजर आने लगे हैं। आईसीटी ने पूरे प्रदेश को एक कक्षाकक्ष बना दिया है। वर्चुअल क्लासेज किसी सुहाने स्वप्न के साकार होने से कम नहीं है। कक्षा-कक्षों में फर्श, फर्नीचर, दीवारों पर नक्शे-चार्ट, दीवाल घड़ी, डस्टबिन, खिड़कियों पर पर्दे इन विद्यालयों के पब्लिक स्कूल होने का नजारा पेश करते हैं। ऐसा ही एक अत्यन्त सुन्दर विद्यालय बीकानेर परिक्षेत्र में पीलीबंगा विकास खण्ड के एक गाँव लिखमीसर में स्थित है। विद्यालय सच में देवालय जैसे हो गए हैं। कई विद्यालय तो पर्यटन स्थल से कम नहीं है। देशी-विदेशी पर्यटकों को इनमें आमंत्रित किया जाना चाहिए।

विद्यालयों में नियमित साफ सफाई होती है। गंदगी की विदाई हो चुकी है। संस्थाप्रधान सहित संपूर्ण शाला परिवार श्रमदान करता है। विद्यालय उन्हें अपने घर लगाने लगे हैं। बालक-बालिकाएँ तो क्या विद्यालय के कण-कण से आत्मीय रिश्ता बनने लगा है। शिक्षकों को लगता है कि वे विद्यालय के धणी हैं। दीपावली के अवसर वार्षिक व्यापक सफाई अभियान चलाकर दीपदान किया जाता है। कहना न होगा, विद्यालय अब दीप्तिमान हो गए हैं। जगमगाते और पळपळाते हैं वे! शिक्षा विभाग के इन विद्यालयों में विचरण करना अब किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं है।

वर्ष 2018 समाप्ति के कगार पर है। शिक्षकों के लिए यह स्व मूल्यांकन एवं भावी नियोजन का समय है। बोर्ड परीक्षा परिणामों में अब न्यूनतम पर ध्यान केन्द्रित रखने का जमाना नहीं रहा ताकि किसी प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही से बच जाए बल्कि अब तो अधिकतम की होड़ है। कैसे दौड़ में अव्वल आए और कैसे श्रेष्ठता का पुरस्कार विद्यालय को दिलाएँ, अब तो यह भाव हो गया है। घर के मालिक घर के सबसे बड़े सेवक होते हैं, यह एक कहावत है। संस्थाप्रधानों ने इसे आत्मसात कर लिया है। वे अपने दीपक आप बन गए हैं। अपना रास्ता स्वयं ढूँढ़ रहे हैं और उपलब्धियों के नूतन इतिहास लिख रहे हैं। शिक्षा टीम एक अभियान के रूप में संलग्न है। ये उत्तम भाव एवं अहर्निश कर्मशील रहना एक साधना है और साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है। कहना न होगा, इसी में शिक्षक एवं संस्थाप्रधान की महिमा निहित है।

ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड़
गंगाशहर-334001 (बीकानेर)
मो: 9414060038

राजकीय विद्यालय विकास

विकास का माध्यम : ज्ञान संकल्प पोर्टल

❒ दिलीप परिहार

वर्तमान में राजस्थान के सरकारी विद्यालयों का भौतिक और शैक्षिक दृष्टि से निरन्तर विकास हो रहा है। आज के बदलते परिवेश में विद्यालयों में संसाधनों की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए विद्यालयों का सभी संसाधनों का परिपूर्ण होना आवश्यक है इस क्रम में ज्ञान संकल्प पोर्टल एक ऐसा ऑनलाइन पोर्टल बन चुका है जिसकी सहायता से विद्यालयों के विकास हेतु आसान तरीके से दान राशि प्राप्त की जा सकती है साथ ही साथ विद्यालय भवन निर्माण कक्षा-कक्ष, शौचालय, मूत्रालय पुस्तकालय स्मार्ट क्लास रूम इत्यादि का निर्माण भामाशाहों की सहायता से कम से कम कागजी कार्यवाही से करवा सकते हैं।

आज के इस तकनीकी युग में दान को पारदर्शी तरीके से ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल सर्वोतम साधन है। इसमें दानदाता को भी आयकर की धारा 80 जी के तहत आयकर में छूट प्राप्त होती है। राजस्थान के सरकारी विद्यालयों के सभी जागरूक संस्थाप्रधान अधिक से अधिक विद्यालय के विकास और संसाधनों की आपूर्ति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल का प्रयोग कर रहे हैं और अपने विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के सुनहरे भविष्य के निर्माण और विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतु विभागीय योजनाओं के साथ साथ भामाशाहों/सीएसआर कम्पनियों का सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।

ज्ञान संकल्प पोर्टल पर donate to a school बहुत ही लोकप्रिय हो रहा है। अब तक donate to a school के माध्यम से 1 करोड़ 61 लाख से अधिक की राशि प्राप्त हो चुकी है। ऐसे विद्यालयों का परिचय जिन्होंने donate to a school के माध्यम से सर्वाधिक राशि प्राप्त की:-

1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अकदड़ा, (बायतु) बाड़मेर :-

''अपना कर्म दिल से करो, लोग खुद ब खुद जुड़ते जायेंगे।''

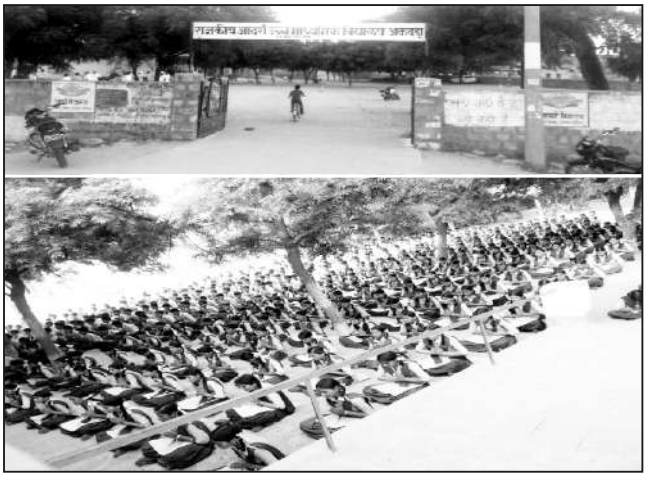

संस्थाप्रधान श्री जालम सिंह एवं विद्यालय स्टाफ द्वारा जिला स्तरीय जूनियर, कबड्डी प्रतियोगिता का सफल आयोजन करवाया गया इसी दौरान विद्यालय में कक्षा-कक्षों की कमी पुन: एक बार उजागर हुई तथा भवन निर्माण हेतु कई बार गाँव वासियों से चर्चा हुई। इन सारी चर्चाओं में अग्रणी थे श्री हीराराम हुड्डा व.अ., राउमावि खोतों की ढाणी, श्री मगाराम हुड्डा, प्रबोधक राउप्रावि जोधोणी हुड्डों की ढाणी व इनके साथी। इस ग्राम के अन्य शिक्षकों एवं कुछ ऐसे भामाशाहों ने सहयोग किया जो कि पूर्व में विद्यालय द्वारा शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं, उनके द्वारा विद्यालय में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से दान करने का निश्चय किया। जिसके फलस्वरूप 05 सितम्बर 2018 शिक्षक दिवस के अवसर से शुरू हुई इस पहल से कुछ ही दिनों में 23 लाख 90 हजार रुपये भवन निर्माण हेतु प्राप्त हो गये। इस राशि का उपयोग विद्यालय भवन निर्माण हेतु किया जाएगा। पूर्व विद्यार्थियों एवं ग्रामवासियों द्वारा की गई यह पहल राजस्थान के सुदूर पश्चिमी रेगिस्तानी जिलें में शिक्षा का जीवन में महत्त्व को बताने वाली है। निश्चित रूप से ही इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के जीवन में यह पहल हमेशा प्रेरणा देने का कार्य करती रहेगी। साथ ही भवन की कमी से जूझ रहे विद्यालयों के लिए अकदड़ा के राजकीय विद्यालय का यह उदाहरण मील का पत्थर साबित होगा।

2. राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, केलनिया हनुमानगढ़ – संस्थाप्रधान श्री देवसिंह पारीक द्वारा विद्यालय में कार्यग्रहण पश्चात् आदर्श विद्यालय के नाम को वास्तविकता में धरातल पर उतारने का स्वप्न देखा। इसके लिए संस्थाप्रधान द्वारा ग्रामवासियों एवं विद्यालय स्टाफ के साथ मिलकर विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित करने की कार्ययोजना बनाई गई। इस कार्ययोजना पर विद्यालय स्टाफ, ग्रामवासियों एवं भामाशाहों के साथ मिलकर कार्य करते हुए विद्यालय को एक आदर्श रूप में विकसित करने हेतु छोटे-छोटे प्रयासों के साथ शुरूआत की गई। जिसमें पेयजल टंकी, वाटर कूलर, पंखे, फर्नीचर इत्यादि का सहयोग दिया गया। इसके साथ ही ज्ञान संकल्प पोर्टल की स्थापना के पश्चात् भामाशाहों/दानदाताओं के द्वारा विशेष रूप से पोर्टल द्वारा दान करने की रुचि दिखाई एवं कुछ ही दिनों में 12,01,000/- की राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय के एसडीएमसी खाते में एकत्रित हो गई। इससे विद्यालय एक आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित हो पाएगा।

3. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरदयालपुरा पं.स.- पिपराली सीकर :- राउमावि हरदयालपुरा के संस्थाप्रधान श्री बिरजू सिंह के द्वारा सितम्बर 2017 में विद्यालय में कार्यग्रहण किया गया। संस्थाप्रधान के समक्ष विद्यालय में छात्र संख्या के अनुपात में कक्षा-कक्षों की कमी दूर करना प्रथम प्राथमिकता थी। संस्था प्रधान एवं स्टाफ के द्वारा गाँव के प्रबुद्ध व्यक्तियों को प्रेरित किया गया। संस्थाप्रधान व विद्यालय स्टाफ को ज्ञान

संकल्प पोर्टल की पारदर्शिता एवं फायदों की अच्छी समझ के कारण उक्त जानकारी को ग्राम के प्रबुद्ध व्यक्तियों के साथ साझा किया। फिर शुरू हुआ एक नया अध्याय, ज्ञान संकल्प पोर्टल पर पंजीयन एवं दान का। देखते ही देखते एक छोटी सी दान की धारा ने वृहद रूप धारण कर लिया और वह रूप था 21 लाख रुपये। जिसमें 16 लाख 55 हजार रुपये मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में चैक रूप एवं अन्य राशि एसडीएमसी खाते में नकद रूप में प्राप्त हुई। इस राशि द्वारा विद्यालय में भौतिक संसाधनों की पूर्ति संभव हो पाएगी तथा विद्यालय का शैक्षिक उन्नयन संभव होगा।

विद्यालय जिनमें donate to a school में ऑनलाइन 50,000 से अधिक की राशि प्राप्त हुई है:-

S. No.	School Name	Block	District	Amount
1	Govt.sr.sec.school, Akadara	Baytu	Barmer	23,90,350
2	Govt.sr.sec.school Hardyalpura	Piprali	Sikar	16,55,000
3	Govt Adarsh Sr. Sec.Sch. Kelaniya	Kelaniya	Hanumangarh	12,01,000
4	Govt Adarsh Sr. Sec.Sch. Batdanau	Laxman garh	Sikar	7,96,110
5	Gss Sardar Shahar	Sardar shahar	Churu	5,00,400
6	Shahid Satyaveer Singh G.sr. sec.sch. Ghandawa	Surajgarh	Jhunjhunu	4,38,800
7	Govt. Adarsh Senior Secondary School, Kalyanpura Purohitan	Sardar shahar	Churu	3,04,900
8	Government Girls Senior Secondary School Sahawa	Taranagar	Churu	2,54,000
9	Govt. Adarsh Senior Secondary School Nigohi Deeg	Deeg	Bharatpur	2,00,120
10	G Sr. Sec. Sch. Chhawashree	Udaipur wati	Jhunjhunu	1,65,480
11	Govt. Adarsh Senior Secondary School Khinwasar	Churu	Churu	1,62,200
12	Govt. Adarsh Sr.sec.school, Dantaramgarh	Danta ramgarh	Sikar	1,60,100
13	Swami Vivekanand Govt. Model School, Block Barundhan, Talera District-bundi	Talera	Bundi	1,25,700
14	Shahid Shamsher Singh G Adarsh Sss Ratanpura	Rajgarh	Churu	1,00,010
15	Govt. Girls Adarash Sec Sch Jasrapur	Khetri	Jhunjhunu	96,210
16	G Aadarsh Ss Bobasar Bidavatan	Sujan garh	Churu	91,200
17	Govt Adarsh Senior Secondary School Khetri Nagar	Khetri	Jhunjhunu	90,852
18	Smt. Chameli Devi Govt. Girls Sr. Sec. School Buhana	Buhana	Jhunjhunu	89,900
19	G Aadarsh Sss Khuri	Sujan garh	Churu	85,100
20	Govt. Senior Secondary School Asleempur, Tijara, Alwar	Tizara	Alwar	83,500
21	Govt. Baijnath Bhartiya Ss Ratangarh	Ratan garh	Churu	82,100
22	Gss Hansiyawas	Rajgarh	Churu	80,000
23	G Adarsh Sss Hudera Aguna	Ratan garh	Churu	80,000
24	G Adarsh Sss Sarothia	Sujan garh	Churu	79,500
25	Seth Shri Kalu RamVijayvargiya Govt. Adarsh Sec.sch., Samarthpura	Khandela	Sikar	79,000
26	Gss Jasvantpura(jaswant Pura)	Rajgarh	Churu	75,000
27	Govt. Senior Sec. School Jaitsisar	Sardar shahar	Churu	70,100
28	Gss Chubkia Tal	Rajgarh	Churu	67,200
29	Govt Adarsh Sr.sec. School Dhandhar Kulhariyo Ka Bas (K Bas)	Surajgarh	Jhunjhunu	66,435
30	Shaheed Birda Ram Govt. Adarsh Sen. Sec. School Dumoli Khurd	Buhana	Jhunjhunu	66,100
31	Shaheed B.R.ranwa Govt. Sec. School, Meghsar	Churu	Churu	62,000
32	Gss Nyama	Sujangarh	Churu	62,000
33	Govt. Adharsh Sr.sec.school Binadesar (churu)	Ratangarh	Churu	60,000
34	Govt. Hr.sec. School Khiniya	Hindoli	Bundi	58,000
35	Govt Adarsh Sen.sec.sch Narhera	Kotputli	Jaipur	57,504
36	Shaheed Babu Lal Meena Govt. sr.sec.school, Endwa	Sawai Madhopur	Sawai madhopur	56,800
37	Gasss- Udsar Lodera	Sardar shahar	Churu	55,800
38	Shaheed Narendra Govt. Adarsh Sr. Sec.school Rodwal, Block-neemrana, alwar	Neemrana	Alwar	55,000
39	Govt. Purusharti.sr. sec.school Chittorgarh	Chittor garh	Chittor garh	54,100
40	Govt. Secondary School Padmada Khurd, Block-mundawar, alwar	Mundawar	Alwar	53,100
41	Chatur Govt.sr.sec.school.kanor	Bhinder	Udaipur	52,110
42	Gups Mayawali	Udaipur wati	Jhunjhunu	51,100
43	Govt. Sen. Sr. Sec. Laban	K.patan	Bundi	50,100
44	Gss Gajsar	Churu	Churu	50,100
45	Gss Norangsar	Sujangarh	Churu	50,010

राजस्थान में राजकीय विद्यालयों के भौतिक एवं शैक्षिक विकास हेतु दानदाताओं/भामाशाहों एवं जनसहयोग के द्वारा दान की ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से जो शुरूआत हुई है। निश्चित रूप से ही राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में संसाधनों की पूर्ति हेतु महत्त्वपूर्ण साबित होगी। भविष्य में ज्ञान संकल्प पोर्टल विद्यालयों में सुविधाओं एवं संसाधनों की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

सहायक निदेशक CSR
मा.शि. राजस्थान, बीकानेर

DIKSHA | RISE Rajasthan Interface for School Educators

शैक्षिक नवाचार

DIKSHA RISE PORTAL : एक परिचय

❒ नीरज काण्डपाल

विद्यार्थियों व शिक्षकों हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD), भारत सरकार द्वारा राजस्थान सहित पाँच राज्यों में दीक्षा पोर्टल (https://diksha.gov.in) प्रारम्भ किया गया है। इस पोर्टल के द्वारा विद्यार्थियों के लिए विषय से संबंधित सहायक पाठ्यसामग्री तथा पाठ्यपुस्तकें ऑनलाइन उपलब्ध हैं। संस्थाप्रधानों तथा शिक्षकों के लिए विद्यालय प्रबन्धन उन्नयन (School Leadership Development) व व्यावसायिक उन्नयन (Professional Development) हेतु पाठ्यक्रम दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। दीक्षा पोर्टल पर शिक्षकों के लिए विषय से संबंधित सहायक सामग्री के निर्माण की सुविधा भी उपलब्ध है। दीक्षा पोर्टल सम्पूर्ण भारत के विद्यार्थियों व शिक्षकों हेतु उपलब्ध करवाया जाना प्रस्तावित है। राजस्थान के लिए दीक्षा पोर्टल DIKSHA RISE Portal (https://diksha.gov.in/rj) के द्वारा उपलब्ध है। इस पोर्टल के द्वारा निम्न सुविधाएँ प्रदान की गई है।

1. शिक्षक रजिस्ट्रेशन व प्रोफाइल (Teachers profile and registry)

शिक्षकों के रजिस्ट्रेशन व प्रोफाइल निर्माण से शिक्षक सम्बन्धित समस्त जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध होगी। राजस्थान के शिक्षकों की प्रोफाइल शालादर्पण पोर्टल से सीधे दीक्षा पोर्टल पर अपलोड की जाएगी। समस्त शिक्षकों के लिए लॉगिन उपलब्ध करवाया जायेगा तथा इस लॉगिन पर आवश्यक सूचना व आदेश सीधे दीक्षा पोर्टल के माध्यम से भेजे जाने संभव होंगे। इसी प्रकार शिक्षकों के लिए विभिन्न योजनाओं, पाठ्यक्रम संबंधी अन्य जानकारियाँ सीधे शिक्षकों तक दीक्षा पोर्टल के माध्यम से भेजी जानी संभव होगी।

2. शिक्षक व्यावसायिक उन्नयन पाठ्यक्रम (Teacher Professional Development Courses)

पोर्टल पर संस्थाप्रधानों तथा शिक्षकों के लिए विभिन्न व्यावसायिक उन्नयन पाठ्यक्रम (Professional Development Courses) भी उपलब्ध हैं। शिक्षक अपनी आवश्यकतानुसार व्यावसायिक कोर्स दीक्षा पर प्रारम्भ कर सकते है।

Teacher Professional Development Online Courses का निर्माण SCERT उदयपुर के द्वारा किया जा रहा हैं। जिन्हें शीघ्र ही शिक्षकों हेतु उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

3. शिक्षण व अधिगम सामग्री (Teaching and learning content (TLC))

DIKSHA पोर्टल पर शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए विषयवस्तु से संबंधित ऑनलाइन Teaching and learning contents (TLC) उपलब्ध है। राजस्थान में कक्षा 9 व 10 के विज्ञान व गणित विषयों के लिए Teaching and learning contents (TLC) का निर्माण राजस्थान के विज्ञ शिक्षकों के द्वारा किया गया है तथा वर्तमान सत्र की कक्षा 9 व 10 की विज्ञान व गणित विषय की पाठ्यपुस्तकों में QR Code (Quick Response Code) के माध्यम से शिक्षकों द्वारा तैयार TLC को शामिल किया जा चुका है। कक्षा 1 से कक्षा 10 तक के शेष 44 विषयों हेतु कठिन बिन्दुओं (Hard Spots) का चयन कर पाठ्यसामग्री के निर्माण का कार्य राज्य की DIET's तथा CTE's के द्वारा किया जा रहा है, जिन्हें आगामी सत्र में QR Code के माध्यम से सभी पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जाएगा।

4. शिक्षकों द्वारा विषय सामग्री निर्माण (Content creation by teachers)

DIKSHA पोर्टल पर विषय वस्तु से संबंधित पाठ्य सामग्री के निर्माण की सुविधा भी उपलब्ध है। दीक्षा पोर्टल पर लोगिन उपरान्त वर्क स्पेस में शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग द्वारा पाठ्यसामग्री के निर्माण में रुचि रखने वाले सृजनात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षक DIKSHA पोर्टल से जुड़ कर Teaching and learning contents (TLC) का निर्माण कर सकतें हैं। राज्य स्तर पर शिक्षकों हेतु विभिन्न कार्यशालाओं के द्वारा दीक्षा पोर्टल से सहायक पाठ्यसामग्री निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया है। विभिन्न विषयों की पुस्तकों में कठिन बिन्दुओं का चयन कर उससे संबंधित पाठ्य सामग्री का निर्माण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के द्वारा किया जा रहा है।

5. विद्यालय प्रबन्धन उन्नयन पाठ्यक्रम (School Leadership Development Courses)

अध्यापकों में नेतृत्व क्षमता का विकास करने हेतु Digital Online Courses उपलब्ध करवाना DIKSHA RISE Portal के प्राथमिक उद्देश्यों में है। शैक्षिक सत्र 2018-19 के दौरान राजस्थान राज्य के लिए नेतृत्व क्षमता संवर्धन से संबंधित 15 पाठ्यक्रम सृजित किए जाने हैं। संस्थाप्रधानों हेतु विभिन्न विद्यालय प्रबंधन उन्नयन से संबंधित ऑनलाइन

कोर्सेस का निर्माण SIEMAT के द्वारा किया जा रहा हैं। सीमेट के द्वारा School Leadership Development से संबंधित पाँच कोर्सेस का निर्माण कर लिया गया हैं। जिन्हें अनुमोदन के पश्चात् दीक्षा पोर्टल पर अपलोड कर दिया जाएगा।

6. नवाचार (Innovation)

दीक्षा पोर्टल पर शिक्षक अपने द्वारा किए गए शैक्षिक नवाचारों को अपलोड कर अन्य शिक्षक साथियों तथा विद्यार्थियों के साथ साझा कर सकते हैं। इस प्रकार दीक्षा पोर्टल शैक्षिक नवाचारों हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम हैं। इसके साथ ही विभिन्न राज्यों के शिक्षकों के द्वारा किए जा रहे शैक्षिक नवाचारों का लाभ भी राजस्थान के शिक्षक समुदाय तथा विद्यार्थियों को दीक्षा पोर्टल के द्वारा प्राप्त होगा।

7. मूल्यांकन (Accessment)

दीक्षा पोर्टल पर विद्यार्थियों हेतु विभिन्न मूल्यांकन प्रपत्र तैयार करवाए जा रहे हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों से संबंधित अपनी दक्षता का मूल्यांकन ऑनलाइन कर सकेंगे।

दीक्षा ऐप (DIKSHA APP)

DIKSHA RISE Portal पर उपलब्ध TLC को मोबाइल पर DIKSHA APP के माध्यम से भी उपयोग किया जा सकता है। DIKSHA APP को P1ay Store से डाउनलोड किया जा सकता हैं। DIKSHA APP में वर्तमान सत्र की कक्षा 09 व 10 की विज्ञान व गणित विषय की पाठ्य पुस्तकों में शामिल ऑनलाईन Teaching and learning contents (TLC)QR Code (Quick Response Code) के माध्यम से उपलब्ध हैं। इन Teaching and learning contents को डाउनलोड किए गए दीक्षा ऐप पर QR Code के माध्यम से डाउनलोड करने के पश्चात् इन्हें लगातार मोबाइल पर उपयोग किया जा सकता हैं। कक्षा 01 से कक्षा 10 तक शेष समस्त पाठ्य पुस्तकों में सहायक पाठ्य सामग्री का निर्माण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के द्वारा दीक्षा पोर्टल पर किया जा रहा हैं। जिन्हें आगामी सत्र में QR Code के माध्यम से सभी पाठ्य पुस्तकों में शामिल किया जाएगा। ये सभी Teaching and learning contents QR Code के माध्यम से दीक्षा ऐप पर उपलब्ध होगें।

इस प्रकार दीक्षा पोर्टल के द्वारा आगामी वर्षों में शिक्षकों व विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक उन्नयन के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम उपलब्ध होंगे तथा यह पोर्टल सम्पूर्ण भारत वर्ष के शिक्षकों व विद्यार्थियों को परस्पर जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा।

व्याख्याता,
शालादर्पण अनुभाग,
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

मासिक गीत

अगर हम नहीं देश के काम आए....

अगर हम नहीं देश के काम आए,
धरा क्या कहेगी, गगन क्या कहेगा।। ध्रुति ।।

चलो श्रम करें, देश अपना सँवारें।
युगों से चढ़ी जो खुमारी उतारें।
अगर वक्त पर हम नहीं जाग पाए।
सुबह क्या कहेगी, पवन क्या कहेगा।।
अगर हम नहीं देश.....।।1।।

मधुर गंध का अर्थ है, खूब महकें।
पड़े संकटों की भले मार सहकें।
अगर हम नहीं पुष्प सा मुस्कुराए
व्यथा क्या कहेगी चमन क्या कहेगा।।
अगर हम नहीं देश.....।। 2 ।।

बहुत हो चुका, स्वर्ग भू पर उतारें।
करें कुछ नया स्वस्थ सोचें विचारें।
अगर हम नहीं ज्योति बन झिलमिलाएं।
निशा क्या कहेगी, भुवन क्या कहेगा।।
अगर हम नहीं देश.....।। 3 ।।

(साभार– 'गीत गुंजन' पुस्तक से)

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता, क्रियान्वयन तथा सम्भावना

❒ संगीता कुमारी शर्मा

शिक्षा का अर्थ हैः- सीखना। शिक्षा औपचारिक और अनौपचारिक रूप से हमें प्राप्त होती है। औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करने के विभिन्न साधन हैं जहाँ सुनियोजित रूप से सोद्देश्य शिक्षा प्रदान की जाती है। परन्तु सभी छात्र समान न होने के कारण शिक्षा में असमानता बढ़ रही थी और उसी असमानता को दूर करने के लिए शिक्षा में एक नवीन प्रणाली का जन्म हुआ जो समावेशी शिक्षा प्रणाली के रूप में सामने आई।

समावेशी शिक्षा या एकीकरण के सिद्धान्त की ऐतिहासिक जड़ें कनाडा और अमेरिका से जुड़ी हैं। प्राचीन शिक्षा पद्यति की जगह नई शिक्षा नीति का प्रयोग आधुनिक समय में होने लगा है। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालय या किसी विशेष कक्षा को स्वीकार नहीं करती बल्कि सभी प्रकार के बच्चों को एक साथ अनिवार्य रूप से शिक्षा प्राप्त करना ही समावेशी शिक्षा है। अशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग करना अब मान्य नहीं है। वर्तमान में सामान्य और विशिष्ट दोनों छात्र समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

पहले इस प्रकार की परिकल्पना नहीं थी जिससे कि निशक्त बालक अपने को सामान्य छात्र से अलग ही अनुभव करते थे और हीन भावना का शिकार थे। उनके लिए अलग विद्यालय और कक्षा की व्यवस्था थी परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने इसे पूर्णतः बदल दिया है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत 6-14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करना मूल अधिकार बना दिया गया है। इसके तहत शिक्षा के समावेशीकरण पर भी जोर दिया गया है जिसमें कि 6 से 14 वर्ष के बालक अनिवार्य रूप से स्कूल में प्रवेश, उपस्थिति, प्रा. शिक्षा पूरी करना, सुनिश्चित करें, बच्चों के आस-पास स्कूल हो, कमजोर व पिछडे वर्ग के बच्चों के प्रति भेद-भाव न हो सभी प्रकार की आधार-भूत सुविधाऐं जैसे भवन, शिक्षक, शिक्षण-अधिगम सामग्री उपलब्ध करवाना, आयु अनुरूप प्रवेश प्रशिक्षण, शौचालय व्यवस्था, दिव्यांग बालकों को आने-जाने की सुविधा मोनिटरिंग तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पाठ्यक्रम-पाठ्यचर्या तय करना तथा शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण सुविधा दिया जाना तय किया है। इस अधिनियम के तहत विद्यालय में हर वर्ग के छात्रों के लिए स्थान भी आरक्षित किये गये है जिससे शिक्षा के समावेशीकरण में सकारात्मक योगदान मिला है। अब एक निशक्त या कमजोर बालक भी सामान्य बालक के साथ एक विद्यालय में एक शिक्षा में साथ बैठकर अध्ययन करता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ वह सभी शैक्षिक गतिविधियों में भी समान रूप से भाग लेता है जिससे कि उसका सार्वभौमिक विकास होता है।

समावेशी शिक्षा के क्रियान्व्यन के लिए विद्यालयों विभिन्न प्रकार के नवाचार और कार्यक्रम किए जा रहे हैं। नवाचार शिक्षण पद्यतियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास तो होगा ही साथ ही उनका सतत् और व्यापक मूल्यांकन भी हो सकेगा।

स्कूल के वातावरण में सुधार कर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और शैक्षिक सहायताओं का प्रयोग किया गया है। दल शिक्षण पद्यति, प्रोजेक्ट एक शिक्षा एक निरीक्षण, स्थिर और घूर्णन शिक्षा, समानान्तर शिक्षा, वैकल्पिक शिक्षा, समूह शिक्षा, केस स्टडी विधि, रूचिपूर्ण शिक्षण पद्यति जैसे - भ्रमण विधि, खेल-विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, कम्प्यूटर के द्वारा शिक्षण आदि पद्यतियों द्वारा शिक्षण दिया जाता है। सरकार द्वारा सर्वशिक्षा अभियान के तहत दिव्यांग बालकों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रावधान किये गये हैं जैसे विशेष प्रस्ताव के अनुसार, विकलांग बच्चों के शामिल करने के लिए प्रतिवर्ष 1200 रू तक प्रतिबच्चे। 1200 रू प्रति बच्चे के प्रतिमानक के रूप जरूरतमंद बच्चों के लिए जिला योजना। संसाधन संस्थान की संलग्नता को बढावा देना।

दिव्यांगों को समावेशी शिक्षा दिलाने के लिए संवेदनशील होना जरूरी है। एक समाचार के जरिये पता चला है कि गोस्सनर कॉलेज रांची में ह्यूमन राइट्स लॉ नेटवर्क और झारखण्ड विकलांग मंच की ओर से दिव्यांगों की समावेशी शिक्षावर एक दिवसीय राज्यस्तरीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें 17 जिले के 40 दिव्यांग प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन राज्य निःशक्ता आयुक्त सतीश चन्द्रा ने किया। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से दिव्यांगों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी योजनाऐं हैं। लेकिन इनके सफल संचालन के लिए सामाजिक संगठनों व सिविल सोसायटी के लोगों को आगे आने की जरूरत है। इसके लिए समाज में जागरूकता का प्रचार-प्रसार है ताकि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी समान रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकें।

यदि शिक्षक समाज निशक्त बच्चों के प्रति संवेदनशील होगा तो समाज में उनके प्रति व्याप्त हीन भावना समाप्त हो जायेगी। माध्यमिक स्तर पर निशक्तजनों की समावेशी शिक्षा योजना वर्ष 2009-10 में प्रारम्भ की गई। यह योजना एकीकृत योजना के स्थान पर है जो 9-12 तक पढने वाले बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करना है। यह योजना 2013 से रमसा के अन्तर्गत सम्मिलित है। उसका उद्देश्य प्राथमिक स्कूली शिक्षा प्राप्त बालकों को माध्यमिक शिक्षा (9-12) समावेशी और सहायक माहौल में प्राप्त करने के लिए समर्थ बनाना है।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा से जोड़ेंः- अध्यापक

शिक्षक समाज की धुरी है। समाज और राष्ट्र को शिक्षक बहुत सारी उम्मीद हैं। समावेशीकरण में भी शिक्षक का बहुत योगदान है। सामान्य बच्चों की तरह विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों पर अधिक ध्यान देकर उन्हें विकास की धारा से जोडना शिक्षक का कर्त्तव्य है। निशक्त बच्चों को स्नेह और संवेदना की आवश्यकता होती है। शिक्षक समाज का शिल्पी होता है अतः अपने समुचित प्रशिक्षण और तकनीकिपूर्ण शिक्षण से वह दिव्यांग बच्चों को भी सामान्य रूप से सक्षम बना सकता है।

शिक्षक को कक्षा में सभी बालकों के साथ समान व्यवहार रखना चाहिए तथा छात्रों को भी आपस में समान व्यवहार के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे कि समावेशी पूर्णतः सफल हो सके। यदि कोई छात्र शारीरिक रूप से सक्षम नहीं है तो उसे भी विभिन्न प्रतियोगिताओं के द्वारा विशेष/श्रेष्ठ बनाना पडेगा। यदि वह खेल-खेलने में असमर्थ है तो शैक्षिक प्रतियोगिता में तो भाग ले सकता है इससे वह अपनी निशक्तता का अहसास नहीं होगा और उत्साह से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेगा। हर बालक एक विशिष्ट प्रतिभा का धनी है जिसे निखारने का कार्य शिक्षक का है यदि यह कार्य दायित्वपूर्ण सम्मपन्न होगा तो एक निशक्त या कमजोर बालक को भी अपनी सफलता का गौरव प्राप्त हो सकेगा।

समावेशी शिक्षा को बनाएँ उपयोगी– सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का परिवर्तन विद्यालय में समावेशीकरण में सहायक सिद्ध होगा।

पिछले कुछ दशकों में दुनियाभर की सरकारों ने भारत सहित शिक्षा के सभी क्षेत्रों में लिंग सम्बन्धी और सामाजिक पक्षपातों को सम्बोधित करते हुए अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा की है। इस अवधि में शिक्षा की गुणवत्ता को बढाने के लिए तथा छात्र संख्या में वृद्धि करने के लिए और उसे किस प्रकार प्रदान किया जाये, इसमें कुछ आमूल-चूल परिवर्तन भी हुए हैं। समाज में शिक्षक तथा अभिभावक दोनों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है फिर भी समावेशी शिक्षा को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए शिक्षक द्वारा निम्न प्रयास किये जाने चाहिए।

असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया जाए–एक कक्षा में विविध प्रकार की असमानताऐं देखी जाती है जो कि एक शिक्षक के लिए चुनौतिपूर्ण पक्ष होता है कि विविध प्रकार की असमानताओं जैसे-भाषात्मक, क्षेत्रीय, सामाजिक, वर्ग-धर्म सम्बन्धी, बुद्धिलब्धि असमानता तथा सामान्य और विशिष्ट बालक की असमानता इत्यादि को समानरूप से व्यवहार करते हुए कक्षा में शिक्षण कार्य करता है। जिससे हर बालक में समानता का भाव पैदा होगा।

सीखने की प्रक्रिया में हर बच्चे की प्रतिभागिता को अधिकाधिक करना–कक्षा में सभी प्रकार के छात्र होते हैं प्रतिभाशाली, सामान्य, मंदबुद्धि। एक शिक्षक को छात्र के को ध्यान में रखते हुए छात्र केन्द्रित तथा जरूरत पर आधारित शिक्षण कार्य करना चाहिए। कमजोर छात्र को अधिक समय देकर उसके उपलब्धि स्तर को बढाने का प्रयास किया जाना चाहिए। मंद बुद्धि छात्र को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया द्वारा अर्थात करके सीखना जैसी विधियों का प्रयोग कर उन्हें उपयोगी शिक्षा प्रदान करें जैसे-हस्तशिल्प शिक्षा, ड्राइंग, पेन्टिंग, खेल-कूद प्रतियोगिता, और सृजनात्मक शिक्षा प्रदान की जाये। प्रतिभाशाली बालकों को भी अन्य बालकों को सहयोग प्रदान करने के लिए प्रेरित कर उनके मौलिक चिन्तन को विकसित करने का प्रयास करें। एक शिक्षक को हर बच्चे की प्रतिभा की पहचान करते हुए उसकी अनौखी जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। हर छात्र की जरूरत अलग-अलग होती है। बालक को शिक्षा उसी स्तर से दी जाये जो उसकी सभी जरूरतों को पूरा कर सके।

एक मंद बुद्धि बालक जो शारीरिक दृष्टि से अच्छा है तो उसे खेल प्रतियोगिता में भेजा जा सकता है वही यदि कोई बालक जिसका अच्छा है परन्तु शारीरिक दृष्टि से सक्षम नहीं है तो उसे विभिन्न प्रकार के कार्य जैसे-वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, लेख लेखन, कविता प्रतियोगिता तथा अन्य बौद्धिक प्रतियोगिताओं के द्वारा उसकी प्रतिभा का विकास करना चाहिए। जिस प्रकार हमारा संविधान किसी प्रकार का भेदभाव स्वीकार नहीं करता है उसी प्रकार समावेशित शिक्षा विभिन्न ज्ञानेन्द्रिय, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक आदि कारणों से उत्पन्न किसी बालक की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं के बावजूद उन बालकों को भिन्न देखने के बजाय स्वतंत्र अधिगम कर्ता के रूप में देखती है तो शिक्षकों को भी उनकी असमर्थता को भुला कर उन्हें हर प्रकार से सक्षम बनाने का प्रयास करना चाहिए।

नवाचार जिनका प्रयोग शिक्षा के समावेशीकरण में किया जा सकता है।

मानव जीवन में प्रत्येक पहलु पर आज तकनीक का प्रभाव देखा जा सकता है। ये एक ऐसा नवाचार है जिसका उपयोग समावेशी शिक्षा की सफलता तथा उसके प्रचार-प्रसार में किया जा सकता है। टी. वी. कार्यक्रमों, मोबाइल फोन, सहायक शिक्षा व चलुष्णता तकनीकि उपकरणों का उपयोग करके बालकों की शिक्षा, सामाजिक अन्तर्क्रिया मनोरंजन आदि में महत्त्वणूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। विद्यालय में छात्रों के सुधार के लिए विविध प्रकार के नवाचार प्रयोग किये जाने चाहिए जैसे- साप्ताहिक पुरस्कार बाल सभा में या प्रार्थना सभा में छात्रों को पुरस्कृत करना चाहिए जिससे अन्य छात्रों को भी प्रोत्साहन मिले। अधिक उपस्थिति वाले छात्रों को भी पुरस्कृत करना चाहिए जिससे कि छात्रोपस्थिति बढेगी और अभिभावकों पर भी सकारात्मक प्रभाव पडेगा।

छात्रों को मासिक नहीं तो त्रैमासिक भ्रमण पर ले जाना चाहिए जिससे छात्रों का सामान्य ज्ञान विकसित हो और मनोरंजन द्वारा अधिगम प्राप्त हो। समावेशी शिक्षा प्रभाव द्वारा शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण भी दिये जाते है जिसका उद्देश्य समाज के दिव्यांग बच्चों को सामान्य छात्र के साथ किस प्रकार से शिक्षा दी जाये जिससे कि उसका सर्वांगीण विकास हो सके जो उसके भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध हो।

भविष्य के कदम : शिक्षकों की क्षमता का निर्माण–हर बालक देश का भविष्य है और हर शिक्षक भविष्य निर्माता। यह सोच कर शिक्षक को अपनी क्षमता का निर्माण करना चाहिए। हालांकि एक छात्र और शिक्षक के बीच विरोधाभास हो सकता है जो उनके बीच दूर को बढाता है फिर भी शिक्षक का दायित्व है कि वह इस विरोधाभास के बीच भी इस प्रकार से शिक्षण पद्यति का निर्माण करे जो कि शिक्षा के समावेशन में सहायक हो। वर्तमान समय की जरूरत और चुनौतियों को पूरा करने के लिए एक विशिष्ट समावेशी शैक्षिक पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो कि सामान्य और विशिष्ट दोनों बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो और उन्हें व्यवसाय भी प्रदान करे। शिक्षक प्रधान शिक्षण की जगह छात्र प्रधान शिक्षण होना चाहिए।

गुमनामी के अंधेरे में था पहिचान बना दिया, दुनिया के गम ने मुझे अंजान बना दिया। उनकी ऐसी कृपा हुई गुरु ने मुझे एक अच्छा इंसान बना दिया।

जयतु संस्कृतम् जयतु भारतम्

।। इति ।।

व. अध्यापिका (संस्कृत)
(शोधार्थी) शिक्षा शास्त्र, रा.उ.मा.वि. पापड-जयपुर
मो. 6378713494

संस्मरणात्मक आलेख

बचाकर रखना होगा शिक्षकत्व

❐ विश्वनाथ भाटी

विद्यालय में शिक्षक का सीधा सम्पर्क अपने विद्यार्थी से रहता है। एक शिक्षक के नाते हमारा दायित्व बन जाता है कि हम इस सम्पर्क की बारीकियों को जानें और संवेदना की धड़कनों का अर्थ समझ सकें। एक वक्त था, जब शिक्षक का अधिकांश समय विद्यार्थी के साथ बीतता था; मगर आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। उस समय शिक्षक विद्यालय समय के बाद भी विद्यालय परिसर या आसपास ही अपने आवास पर रुकता था और स्वाध्याय, सेवा या अध्यापन से जुड़ा रहता था। यह जुड़ाव ऊपरी न होकर आंतरिक होता था। आज शिक्षक केवल अपने विषय के लिए चिन्तित है। उसके पास विद्यार्थी से बतियाने के लिए समय नहीं है। शिक्षण कार्य के अलावा उसे और भी अनेक तरह के काम देखने होते हैं–पोषाहार, विभिन्न प्रकार की डाक का जवाब देना, राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यों का सम्पादन आदि। इन सबके साथ ही रोजाना का अप–डाउन। समय बचा ही कहाँ कि विद्यार्थी से बतिया सके, उसके दुःख–दर्द को समझ सके।

हमारे गुरुजी अक्सर एक विद्यार्थी का जिक्र किया करते हैं। विद्यार्थी था हनुमानगढ़ जिले के किसी ग्रामीण क्षेत्र बैर गाँव का रहने वाला रामलाल। गुरुजी बताते हैं कि रामलाल अत्यन्त साधारण परिवार का था। रामलाल के पिता अपने गाँव से दूर कस्बे की पाठशाला में उसको प्रवेश दिलाकर गाँव लौट गए। अब उसके खाने, पीने, रहने की व्यवस्था गुरुजी पर आ गई। रामलाल अपने साथ कुछ दिनों का आटा, थोड़े से मिर्च–मसाले और एक–दो बर्तन, एक दरी और दो पोशाक एक बड़ी–सी बोरी में डालकर लाया था। जाने के बाद उसके पिता खेती–बाड़ी के कामों में ऐसा उलझे कि उन्हें अपने बेटे को सम्भालने तक का समय नहीं मिला। रामलाल ने कुछ दिन तो अपने चूल्हे पर अलग रोटी बनाई परन्तु ज्यों–ज्यों सामान खूटता रहा, वह गुरुजी के परिवार के निकट आता गया। धीरे–धीरे वह भी गुरुजी के परिवार

के एक सदस्य के रूप में बदल गया। गुरुजी के बच्चों के साथ खेलना–खाना, उठना, बैठना, सोना सब कुछ। वह बड़ा संयत स्वभाव का था। प्रातः चार–साढ़े चार बजे गुरुजी के उठने के साथ ही उठ बैठता और मुँह धोकर अपनी अलग दरी बिछाकर, ढिबरी जलाकर पढ़ने बैठ जाता। दिन उगते–उगते घर के बाकी सदस्य उठते–जाते तो वह भी नहा–धो कर विद्यालय के लिए तैयार हो जाता। शाम को कुछ देर खेलने के बाद गुरुजी की देखा–देखी कुछ देर आँखें मूँद कर ध्यान में बैठना, अपना लिखित कार्य करना, भोजन करना और निश्चिंत होकर सो जाना। यही उसकी दिनचर्या थी। कई दिनों के बाद एक दिन रामलाल के पिता अपना ऊँट लेकर सायं के समय गुरुजी के घर पहुँचे। ऊँट की पीठ पर लकड़ी का बड़ा–सा गट्ठर था। उसने गट्ठर खोलकर गुरुजी के घर में एक तरफ डाल दिया। इसके बाद एक बड़ी–सी देकची (पतीली) बोरे से निकाली जिसके मुँह पर एक कपड़ा बँधा था। साफ लग रहा था कि उसमें घी था। फिर उसने एक थैला निकाला। गुरुजी बार–बार कहे जा रहे थे, अरे रे, तू क्या–क्या लेकर आया है, पर वह मानो कुछ भी नहीं सुन रहा हो। थैले में झाड़ी के बेर, भुने हुए चने, गुड़ आदि कई चीजें थीं। इसके बाद गुरुजी और रामलाल के पिता के बीच में घण्टों न जाने क्या–क्या बातें होती रही। रामलाल का ध्यान जरूर अपने पिता में लगा था, पर वह सदा की भाँति अपनी दिनचर्या में लगा रहा। न तो वह एक बार भी चलकर पिता के पास आया और न ही पिता ने उसे अपने पास बुलाया। संयोग से अगले दिन छुट्टी का दिन था। दोपहर का खाना खाने के बाद पिता ने ऊँट को तैयार करना शुरू कर दिया। वे जाने की तैयारी कर रहे थे। आज राम बहुत उदास था। उसके पिता ने उसे अपने साथ घर चलने के लिए कह दिया था। आखिर दोनों गुरुजी के सामने उपस्थित हुए। ''गुरुजी, माफ करना। मैं काम–धन्धे में इतना उलझ गया कि आने का मन करते हुए भी नहीं आ सका। अब मैं इसे स्कूल छुड़वाकर अपने साथ गाँव ले जा रहा हूँ। हो गई पढ़ाई। हमारे भाग में कहाँ पढ़ाई लिखी है। घर की माली हालत अच्छी नहीं है। मैं इसे नहीं पढ़ा सकता। इतने दिन आपको तकलीफ दी, उसकी माफी देना।'' कहते–कहते उसके पिता का स्वर भर आया। रामलाल था कि अपने पिता के फैसले से सहमा–सहमा किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना उन दोनों की बातें सुन रहा था। गुरुजी ने अचानक उसे पुकारा–''रामा बेटा, क्या तू हमें छोड़कर चला जाएगा? इतना पूछना था कि उसका सब्र का बाँध टूट गया। रामलाल फफक–फफककर रोए जा रहा था। गुरुजी ने उसे अपने पास बुलाकर कुछ पूछना चाहा, पर यह क्या! वह तो मानो आँसुओं के अलावा और कोई भाषा ही नहीं जानता हो। आखिर निर्णय हुआ कि रामा यहीं रहेगा और अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखेगा। रामलाल बहुत खुश था। उसके पिता घर लौट गए और उसके बाद कई–कई दिनों से चक्कर लगा जाते। करते–करते रामलाल ने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। उसी साल गुरुजी का भी स्थानान्तरण हो गया। गुरुजी अपने घर के नजदीक पहुँच गए और रामा अपने घर चला गया। कुछ दिनों के बाद गुरुजी के पास एक पोस्टकार्ड आया। रामलाल का था। पढ़ते–पढ़ते उनकी आँखें छलछला आई। उन्होंने घर में आवाज दी–''अरे सुना, अपना रामा नौकरी

लग गया। वह गाँव से ही कुछ दूर अध्यापक लग गया है। यह देख उसका कागज आया है।'' पूरे घर में उत्सव का माहौल हो गया। उस दिन गुरुजी ने सबको बाजार से बून्दी मँगवाकर बाँटी। आज रामलाल मील अपनी सरकारी सेवा पूरी करके उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत्त हो चुका है। गुरुजी श्री डालूराम सैनी भी 95 साल की अवस्था में स्वस्थ-प्रसन्न रहकर तारानगर में प्रभु-स्मरण कर रहे हैं। रामलाल का भी कई बार आत्मीयता भरा फोन आ जाता है।

मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता था। हमारे प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री मूलचन्दजी स्वामी थे। आप कठोर अनुशासनप्रिय थे किन्तु दिल के बड़े मुलायम थे। मेरी माँ का स्वास्थ्य अक्सर खराब रहने के कारण कई बार समय पर तैयार नहीं हो पाता था। एक दिन मैं आधी छुट्टी में बिना खाना खाए ही वापस आ गया। प्रधानाध्यापकजी की नजर मुझ पर पड़ी और मुझसे पूछा-''क्या हुआ रे! आज तो तू जल्दी वापस आ गया। खाना खाया कि नहीं?'' मैंने नजरें चुराने की कोशिश की। गुरुजी सब कुछ समझ गए। वह मेरे परिवार की स्थिति और मेरी माँ के स्वास्थ्य के बारे में जानते थे। उन्होंने मुझे कार्यालय में बुलाया और एक प्लेट में दो रोटी और थोड़ी-सी सब्जी डालकर दे दी। आज गुरुजी मूलचन्दजी धरती पर नहीं हैं, पर उनका वह स्नेह भरा व्यवहार आज भी जिन्दा है। एक और वाकया याद आता है। मेरे घर की आर्थिक दशा कुछ अच्छी नहीं थी। विद्यालय का नियमित विद्यार्थी होने के कारण अगली कक्षा में प्रवेश तो स्वतः हो गया मगर फीस के कारण गाड़ी अटक गई। हजार कोशिशों के बावजूद रुपयों का प्रबन्ध नहीं हो सका। मैं उदास-हताश विद्यालय के पिछवाड़े बैठा फीस के बारे में ही सोचे जा रहा था। तभी कन्धे पर एक नर्म स्पर्श से ध्यान भंग हुआ। नजरें उठाकर देखा तो सामने कक्षाध्यापक श्री बुधमल हंसावत जी खड़े थे। ''कहाँ डूबे हो बेटा? कोई परेशानी है क्या'' ''नहीं सर, ऐसी कोई बात नहीं है।'' मैंने बात टालने की कोशिश की, किन्तु क्या सच्चे परखैया से रत्न छुपाया जा सकता है? उन्होंने मेरी आँखों में आँखें डाली और सारी सच्चाई पढ़ डाली। ''क्यों बेटा, फीस का जुगाड़ नहीं हो पा रहा है?'' स्वीकारोक्ति में मेरी गर्दन झुक गई। इसके बाद तो फीस, किताबों और विद्यालय पोशाक तक की सारी व्यवस्था गुरुजी के प्रयास से हो गई। इसी प्रकार एक दिन हंसावत जी कक्षा में अंग्रेजी पढ़ा रहे थे कि अचानक मेरे पेट में जोरदार दर्द उठा। मैं अपने दर्द को दबाकर पढ़ाई में मन लगाने की कोशिश कर रहा था, पर दर्द था कि उत्तरोत्तर असहनीय होता जा रहा था। गुरुजी ने स्थिति को भाँप लिया और तुरन्त विद्यालय के सहायक कर्मचारी गणपतराम माली को बुलाकर कुछ समझाया। गणपतराम मुझे लेकर डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता के अस्पताल में पहुँचा। जाँच की गई और दस दिन के लिए दवाइयाँ दे दी गई। दरअसल वह पेट दर्द कई बार उठ जाता था, पर ईलाज के अभाव में टिका बैठा था। पारखी आँखों ने दर्द को अपना समझा और निवारण करके दिल में जगह बना ली।

समय की लीला। मैं भी शिक्षक बन गया। उस दिन प्रार्थना सभा के बाद विद्यालय पोशाक के बिना आए विद्यार्थियों को एक तरफ लाइन बनाकर टोकाटाकी की जा रही थी। बच्चे कोई कल, तो कोई दो दिन बाद पहनकर आने का वादा करके कक्षाओं के लिए जा रहे थे। तभी एक छात्र अमन (परिवर्तित नाम) की बारी आई। ''बोलो, कल पहनकर आ जाओगे?'' कड़कती आवाज में मैंने पूछा। ''नहीं सर, मैं पोशाक पहनकर नहीं आ सकूँगा।'' छात्र ने स्वाभिमान से कहा। ''चलो कोई बात नहीं। तुम दो दिन बाद पहनकर आ जाना।'' मैंने कुछ नर्म होते हुए कहा। ''क्षमा करें गुरुदेव! मेरी तो दो दिन बाद भी ड्रेस की व्यवस्था नहीं हो पाएगी।'' उसी निर्भीकता से छात्र ने जवाब दिया। मैं संजीदा हो गया। उसे एक तरफ लेकर उसकी पूरी बात सुनी। वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण विद्यालय ड्रेस बनवा पाने की मजबूरी बयान कर रहा था। मैंने उसे कक्षा में जाने दिया, साथ ही आधी छुट्टी में मिलने का निर्देश भी दिया। आधी छुट्टी में वह मेरे पास आया। मैंने एक रेडीमेड ड्रेसवाले की दुकान पर एक पर्ची के साथ उसे भिजवा दिया। कुछ देर बाद अमन मेरे सामने विद्यालय पोशाक में खड़ा था। उसके चेहरे पर कृतज्ञता का भाव स्पष्ट झलक रहा था।

हमें विचार करना होगा कि कहीं हमारी संवेदना लुप्त तो नहीं होती जा रही है? कहीं हम व्यावसायिकता की दौड़ में पड़कर अपने मूल से भटक तो नहीं रहे? एक शिक्षक होने के नाते हमारा दायित्व बन जाता है कि हम अपने विद्यार्थियों से दिल से जुड़ें। असल में कक्षा-कक्ष के बाद भी उसके साथ रहनेवाला जुड़ाव ही हमारे शिक्षकत्व को स्थापित कर सकेगा। अन्यथा तो हम एक शिक्षा बेचनेवाले व्यापारी से अधिक कुछ नहीं हैं। यद्यपि गुरु-शिष्य परम्परा आज समाप्त प्रायः हो रही है, तथापि इस स्वस्थ परम्परा को किसी अन्य स्वरूप के साथ जिन्दा रखा जाना लाभ का सौदा है। वर्तमान में निश्चय ही शिक्षकों का सम्मान घटा है। इसके पीछे अनेक कारण हैं, किन्तु हमारी संवेदना में आई कमी भी एक बहुत बड़ा और प्रमुख कारण है। हमें सीखना होगा डालूरामजी जैसे गुरुओं से कि बच्चे को परिवार का प्यार कैसे दें? सीखें बुधमलजी सरीखे गुरुजी से कि बच्चे के अन्तर्मन को कैसे पढ़ा जाए? सीखें मूलचंदजी जैसे शिक्षकों से बच्चे की आवश्यकता का अनुमान लगाना। क्या हमारी आँखें खोज पाती हैं कक्षा में किसी पंक्ति में दुबके उस बालक की मजबूरी को, जो फीस, ड्रेस आदि की व्यवस्था के लिए कुढ़ता जा रहा है? क्या हमारे कानों में किसी की विवशता के दमित स्वर को सुनने का साहस है? क्या कभी हमारे कदम किसी जरूरतमंद की जरूरत समझकर उसकी मदद के लिए बढ़े हैं? क्या हमारे हाथों में किसी के आँसू पौंछने की ताकत बची हुई है? यदि उक्त प्रश्नों का उत्तर हाँ है तो हजारों तकनीकों के ईजाद हो जाने के बाद भी शिक्षक का महत्त्व कभी कम नहीं हो सकता। आओ, पुनः विचार करें कि कहीं अप-डाउन वाली बस के चक्कर में हम अपने शिक्षकत्व को तो नहीं भूल रहे हैं?

प्रधानाचार्य
वार्ड नं. 8 तारानगर, जिला-चूरू (राज.)
मो: 9413888209

जो जैसा सोचता है
और करता है
वह वैसा ही
बन जाता है।

नैतिक शिक्षा

नमस्कार व चरण स्पर्श करना विज्ञान सम्मत कैसे?

❐ तरुण कुमार सोलंकी

नमस्कार व चरण-स्पर्श करने की परम्परा केवल भारतीय समाज में एक जीवन्त संस्कृति है। यह परम्परा केवल भारतवर्ष में ही है या भारतीय जन जहाँ-जहाँ अन्य देशों में बसा है वहाँ भी यह परम्परा अपने साथ जीवन्त रूप में रखे हुए हैं व देखने को मिलती है। प्रणाम दोनों हाथों को जोड़कर सम्मुख व्यक्ति या व्यक्तियों को (स्त्री या पुरुष या दोनों को) किया जाता है। यहाँ हाथ जोड़ने वाले व्यक्ति या मानव की शुद्ध मन से (सामने वाले मानव का) शुभ चाहने की भावना जुड़ी रहती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो वैज्ञानिक तथ्य सहित इस बात को जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ऊर्जा का स्रोत है तथा अपने शरीर से प्रतिपल कॉस्मिक इलेक्ट्रोमेग्नेटिक वेव्स को निकालता रहता है। इसकी मात्रा मनुष्य के स्वभाव के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। जब हम किसी अन्य व्यक्ति से हाथ मिलाते हैं (अभिवादन के रूप में) या किसी कारण स्पर्श करते हैं तो इसी ऊर्जा का आदान-प्रदान होता है, जो हमारे विचारों की शुद्धता या अशुद्धता को प्रभावित करती है। परन्तु यदि हम हाथ न मिलाकर केवल हाथ जोड़ दें तो हम अपनी सद्भावना या बुरी भावना तो प्रेषित कर देते है किन्तु अपनी ऊर्जा के क्षरण से बच जाते हैं तथा सामने वाले व्यक्ति के दूषित विचारों के प्रभाव से भी बचते हैं। अतः हाथ मिलाने के बजाय हाथ जोड़ना अधिक लाभप्रद है। जो कि हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

भारत के प्राचीन गुरुकुलों में नमस्कार व चरण स्पर्श करने की यही परम्परा थी। देश के उच्च नेताओं व उच्च विचारकों तथा साधु संतों में हाथ जोड़ने व चरण स्पर्श करने की यही परम्परा है। हम भारतीयों को अपनी इस परम्परा को अपनाते हुए अक्षुण्ण रखना चाहिए। बालकों को व नयी युवा पीढ़ी को इसे सिखाना व समझाया जाना चाहिए। शारीरिक शुद्धता की दृष्टि से देखें तो हाथ मिलाने पर एक मनुष्य के सूक्ष्म रोगाणु/जीवाणु (जो दृष्टिगोचर नहीं होते) दूसरे के हाथों में आ जाते हैं या आदान-प्रदान हो जाता है जो हमारे शरीर में बीमारी व चर्म रोग भी उत्पन्न कर सकते हैं। जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हाथ मिलाते समय निकटता के कारण श्वास से भी बीमारियों का आदान-प्रदान होता है। यदि मनुष्य में प्रतिरोधक क्षमता कम हो तो बीमारी का असर जल्द व तुरन्त होता है। प्रतिरोधक क्षमता अधिक शक्तिशाली है तो हम पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा परन्तु जो विषता (विष) उत्पन्न होती है वह अपना प्रभाव कुछ मिनट या कुछ घंटे या कुछ दिन अवश्य दिखाती है। अतः सद्भावना के लिए प्रणाम हाथ जोड़कर करना अति उत्तम व सात्विक कर्म होता है।

एक हाथ से प्रणाम करना या हाथ हिला कर इशारा करना शास्त्रसम्मत नहीं है, यह पूर्णतः निषेध होता है। परन्तु अहंकार युक्त मानव अपने से बड़ों को भी एक हाथ हिलाते हुए जोर से प्रणाम का उच्चारण करते हैं, जिससे सम्मुख व्यक्ति या मानव को समझने में हेय (नीचा दिखाने का भाव) भाव उत्पन्न होता है। यहाँ सद्भावना के स्थान पर अहंकार अधिक प्रभावी रहता है। जो मानव को बुरे विचार व गलत कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।' इस स्थिति से बचना चाहिए। हम केवल आँखों की पलकें व नजरें झुकाकर भी प्रणाम शब्द बोल सकते है जो हानिकारक नहीं होता परन्तु ज्यादा स्नेहयुक्त भी नहीं होता है। सामान्य असर रहता है।

अपने से बड़ों को (दादा, दादी, पिता, माता, बड़ा भाई, परिवार में बड़ा अन्य सम्माननीय व्यक्ति), देव-विग्रह को (देव तुल्य) प्रारम्भ से लेकर उच्च शिक्षा देने वाले समस्त गुरुजन व ऐसे व्यक्तित्व जिनके मार्गदर्शन में हमने जीवन में उन्नति की हो, जिन्होंने सही रास्ता दिखाया हो, जो हमारे जीवन में देव-तुल्य ही आए हों, देव-वृक्षों(पीपल का वृक्ष, तुलसी का पौधा, अन्य पूजनीय पेड़ वृक्ष आदि) सभी को आदर भाव व मन से सम्मानपूर्वक अवश्य प्रणाम दोनों हाथों को जोड़कर तथा गर्दन आगे की ओर झुकाकर करना चाहिए। इससे मिलने वाले आशीर्वाद बहुत ही पुण्यकारी होते हैं तथा आनेवाली विपत्तियों से हमें बचाते हैं। हमारे साथ घटित होने वाली भयंकर घटना भी इस आशीर्वाद के प्रभाव से थोड़ी मात्रा में घटित होकर तुरन्त समाप्त हो जाती है तथा उन विषम स्थितियों से हमें बचा लेती है। अतः हमें अपने से बड़ों का आशीर्वाद सदैव प्राप्त करते रहना चाहिए। इस आशीर्वाद से हमारे शरीर में उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा भी नष्ट होने लगती है तथा सही दिशा दिखाने वाले विचार उत्पन्न होने लगते हैं। मनुष्य स्वयं सही दिशा की ओर बढ़ने लगता है। जिससे मंगलकारी होते हुए उन्नति का रास्ता खुलता है। मन को नयी प्रेरणा व स्फूर्ति मिलती है तथा हमारी नकारात्मक प्रवृत्तियों को समाप्त कर सकारात्मक सोच प्रदान करती है। अतः दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करना चाहिए।

प्राचीन गुरुकुल (शिक्षा के आवासीय केन्द्र) में शिष्य अपने गुरुओं के चरण-स्पर्श करते थे। श्री राम-राज्य में भी यही परम्परा रही थी। महाभारत काल में भी यही चरण-स्पर्श करने की परम्परा रही है। भारतीय समाज में परिवार के बड़े-बुजुर्गों, गाँव के बड़े-बुजुर्गों तथा सन्त-महात्माओं के चरण स्पर्श करने की यह परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। आजकल पश्चिम की सभ्यता के प्रभाव में आए परिवार में चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करना कम देखने को मिलता है।

शास्त्रों के अनुसार ऐसी मान्यता है कि अपने से बड़ों तथा वरिष्ठ वृद्धजन के चरण स्पर्श करने से हमारे (चरण स्पर्श करने वाले के) पुण्य में वृद्धि होती है तथा मन को बहुत शान्ति व सन्तोष मिलता है। अपने से बड़ों के शुभाशीर्वाद से हमारा आने वाला संकट दूर होता है या जिस संकट को टाला नहीं जा सकता उसका प्रभाव कम हो जाता है। कहा भी है:-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।
(स.प्र. तृतीय समु.)

इस प्रकार किए गए अभिवादन से आयु, विद्या, यश-कीर्ति एवं मानसिक बल में वृद्धि होती है। चरण स्पर्श व प्रणाम करने में नम्रता,

विनय, शील, श्रद्धा, सेवा, आदर एवं पूज्यता का भाव जुड़ा रहता है। इसके प्रभाव से जिसको चरण स्पर्श व प्रणाम किया जाता है उसमें भी आपके प्रति सद्भावना व अच्छे विचार उसमें उत्पन्न होंगे। (यह स्वतः होता है)। उससे उत्पन्न ऊर्जा चरण स्पर्श व प्रणाम करने वाले को लाभ पहुँचाती है। उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है। चरण-स्पर्श करने वाले का अहंकार समाप्त होता है व सद्भावना की ऊर्जा उत्पन्न होती है। यह ऊर्जा उसकी कार्यक्षमता को बढ़ाकर लक्ष्य प्राप्त करने में सहयोगी बनती है। चरण स्पर्श व प्रणाम करने वाले हृदय में समर्पण और विनम्रता का भाव जाग्रत होने से सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है।

पूज्य व बड़े बुजुर्गों के चरण स्पर्श तीन प्रकार से किए जा सकते हैं। 1. झुककर, 2. घुटनों के बल बैठकर तथा 3. साष्टांग प्रणाम कर। यह हमारी वैज्ञानिक परम्परा है। इससे हमारी मनोदैहिक, (मन व शरीर से जुड़ी) प्रवृत्ति तथा विचार को प्रभावित होकर उनका विकास होता है। इससे शुद्ध, अच्छे विचारों व संस्कारों का उदय होता है। मन में मलीनता के विचार से बना आवरण नष्ट होकर मन प्रकाश की ओर बढ़ता है। इससे आध्यात्मिक लाभ तो होता ही है परन्तु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी प्रमाण की प्रक्रिया अत्यंत लाभदायक है।

प्रथम विधि में झुककर चरण स्पर्श करने से कमर व रीढ़ की हड्डी का व्यायाम होता है व उसको आराम मिलता है। झुकने की इस प्रक्रिया में सिर में रक्त प्रवाह बढ़ जाता है जो मानव स्वास्थ्य के लिए खास तौर पर नेत्रों के लिए लाभकारी होता है। दूसरी विधि में शरीर के सारे जोड़ों को मोड़ना पड़ता है जिससे उनमें होने वाले दर्द से राहत मिलती है। इस प्रक्रिया से शरीर के अन्दर गुर्दों पर दबाव पड़ता है। मूत्र विसर्जन की प्रक्रिया सही रहती है। इससे शरीर के अनेक रोग दूर होते है।

तीसरी विधि में चरण स्पर्श करने के लिए साष्टांग प्रणाम करने से शरीर के सारे जोड़ थोड़ी देर के लिए तन (खिंच) जाते हैं। इससे तनाव दूर होता है तथा ऐसा रस उत्पन्न होता है जो हमारे स्वास्थ्य को लाभ ही नहीं पहुँचाता बल्कि मन व मस्तिष्क को भी संतुलित व स्वस्थ रखता है। पेट के बल भूमि पर दोनों हाथ आगे फैलाकर जोड़ते हुए लेट जाना साष्टांग प्रणाम है। इसमें मस्तिष्क, भ्रूमध्य, नासिका, वक्ष, उर, घुटने, करतल तथा पैरों की अंगुलियों का ऊपरी भाग-ये आठ अंग भूमि से स्पर्श करते है।

चरण स्पर्श करने का वेदों में उल्लेख है। वेद के अनुसार दोनों हाथों से चरण स्पर्श करना चाहिए तथा यह भी विशेष ध्यान रखना चाहिए कि बायें हाथ से बांया पैर व दाहिने हाथ से दाहिने पैर का एक साथ स्पर्श हो अर्थात् हाथ कैंची की तरह हो जाए फिर एक साथ स्पर्श भी मध्यमा व अनामिका से ही करना चाहिए। यदि पूरा हाथ भी स्पर्श करते है तो भी लाभप्रद है। ऊर्जा का आदान-प्रदान मध्यमा से जल्द होता है। अनामिका हम मस्तिष्क पर तिलक करते समय प्रयोग करते है। यहाँ अंगूठा स्पर्श नहीं करना चाहिए इस बात का ध्यान रखें। चरण स्पर्श करने वाले के पाँव के अंगूठे को अवश्य स्पर्श करें। वैज्ञानिकों का मानना है कि मानव शरीर में हाथ और पैर अत्यधिक संवेदनशील अंग है। हम किसी भी वस्त्र के कोमल, शीतल या गर्म आदि गुण युक्त होने का अनुभव हाथों व पैरों के स्पर्श से प्राप्त कर सकते है।

जब कोई व्यक्ति अपनी दोनों हथेलियों से या मध्यमा व अनामिका से किसी विशिष्ट व्यक्ति के चरण स्पर्श करते हैं तो कॉस्मिक इलेक्ट्रोमेग्नेटिक वेव्स का एक चक्र उसके शरीर के अग्रभाग में घूमने लगता है। उससे शरीर के विकारों को नष्ट करने वाली ऊर्जा उत्पन्न होती है। चरण स्पर्श करने वाले को नई स्फूर्ति के साथ नई प्रेरणा मिलती है। उसी शक्ति के कारण उसकी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं।

अपने से बड़ों को (माता-पिता, गुरु, संत, बड़ा भाई, या अन्य कोई रिश्तेदार या हमारा अच्छा चाहने वाला) नियमित चरण स्पर्श व दंडवत प्रणाम करने से हमें व्यायाम के वज्रासन, भुजंगासन व सूर्य नमस्कार जैसे आसन की मुद्राओं की स्थिति से गुजरना पड़ता है। इन क्रियाओं का मन, शरीर एवं स्वास्थ्य पर स्फूर्ति एवं शक्तिदायी प्रभाव पड़ता है।

चरण स्पर्श से जहाँ नैतिक आचरण तो शुद्ध होता ही है, वहीं यह एक प्रकार की योग क्रिया भी है। इससे पूरे शरीर और मन में आरोग्य बना रहता है। 'अथर्ववेद' में मानव जीवन की आचार संहिता का एक खण्ड ही है। जिसमें व्यक्ति की प्रातःकालीन प्राथमिक क्रिया के रूप में नमन को प्राथमिकता दी गई है। वेद में 'गुरुदेवोभवः', 'मातृदेवो भवः', 'पितृ देवो भवः', 'आचार्य देवो भवः', 'अतिथि देवो भवः' आदि सूत्रों में सब को दंडवत प्रणाम व चरण स्पर्श करने को कहा गया है।

एक हाथ से प्रणाम करना या चरण स्पर्श करना शास्त्रों में पूर्णतः निषेध किया है। आज के युवा वर्ग अपने से बड़ों को, देव-तुल्य मनुष्यों को, साधु-संतों को अर्द्ध झुककर एक हाथ पांवों की ओर बढ़ा देते हैं। बड़े भी तुरन्त आशीर्वाद दे देते है- 'खुश रहो', चिरंजीवी रहो, खूब उन्नति करो' आदि-आदि। जिस प्रकार चरण स्पर्श करने की भावना मात्र होती है परन्तु चरण स्पर्श करते नहीं, उसी प्रकार आशीर्वाद देने वाले का केवल भाव मात्र होता है। इससे मन से जुड़ाव मात्र होता है। किन्तु इस प्रकार की दोनों ही प्रक्रियाओं में मन से जुड़ाव नहीं हो पाता है मात्र औपचारिकता होती है। उस प्रक्रिया में प्रभाव भी औपचारिक ही होता है पूर्णतः नहीं होता है। क्योंकि ऊर्जा का आदान-प्रदान नहीं होता। अतः विशेष लाभ भी नहीं होता है। भारतीय संस्कृति को मानने वाले, उसमें आस्था रखने वाले व्यक्ति सदैव किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने परिवार के बड़े-बुजुर्गों का सादर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेना आवश्यक समझते हैं। किसी यात्रा या तीर्थयात्रा पर निकलने से पहले सम्पूर्ण भारत के जनमानस अपने से बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनका चरण स्पर्श करते है। आशीर्वाद प्राप्त करते है। उनके आशीर्वाद से यात्रा मंगलमय व विघ्न (बाधा) रहित होती है तथा मन से व कर्म से आत्मिक शक्ति व शांति प्राप्त होती है।

सम्पूर्ण भारत में चरण स्पर्श करने व प्रणाम करने की सुन्दर व अद्भुत परम्परा यहाँ के जनमानस में पायी जाती है। यह परम्परा एक ऐसी कड़ी है जो नयी पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी में आपसी संवाद के सुदृढ़ माध्यम को स्थापित करती है। अतः इस परम्परा को अक्षुण्ण बनाने के साथ नयी पीढ़ी को नैतिकता व दिव्य गुणों से युक्त बनाने में भी केवल राष्ट्र निर्माता शिक्षक ही नहीं हम सभी भारत भूमि पुत्र का सहभागी बनना परम कर्त्तव्य है।

रीडर, (से. नि.)
श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास
रानी बाजार, औद्योगिक क्षेत्र,
बीकानेर-334001
मो: 9530019024

पाठ्य सहगामी कार्यक्रम

विद्यार्थियों के विकास में उपयोगी

❒ अरनी राबर्ट्स

शिक्षा का उद्देश्य है बालकों का सर्वांगीण विकास। सर्वांगीण विकास में बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास (नैतिक गुणों से सम्बंधित) निहित है। ऐसी शिक्षा भारत में पूर्वकाल से ही चली आई है जब बालक आश्रमों में गुरुओं के सानिध्य में रहकर विद्याध्ययन करता था। शारीरिक विकास हेतु योगाभ्यास, घुड़सवारी, तैराकी, कुश्ती, मल्लखम्ब के व्यायाम, दंडबैठक आदि का अभ्यास अनिवार्य रूप से करवाया जाता था। मानसिक व बौद्धिक विकास हेतु वेदों का विस्तृत ज्ञान कराया जाता था। चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा आयुर्वेद के द्वारा दी जाती थी। अब बालक आश्रम से पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके निकलता था तब वह पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त कर लेता था।

यह शिक्षा व्यवस्था मुगलों व अंग्रेजों के भारत में आने तथा उनके द्वारा राज करने के बाद नष्ट हो गई या यूं कहा जाए कि सीमित हो गई। अंग्रेजी शासन में तो शिक्षा व्यवस्था का कचूमर ही निकल गया। उन्होंने भारतीयों पर ऐसा अंकुश लगाया कि वे आगे नहीं बढ़ सके, उनका एकमात्र उद्देश्य था। भारतीयों को 'क्लर्क' से आगे न बढ़ने देने का उन्हें डर था कि अधिक ज्ञान प्राप्त कर कहीं वे विद्रोही न बन जाएँ।

भारत के ब्रिटिश राज से आज़ाद होने के बाद शिक्षा व्यवस्था लाइन पर आई और फिर उसमें लगातार सुधार होता चला गया। आज हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में ऊँचाइयों को छू रहा है। शिक्षा की नींव का पत्थर है विद्यालयी शिक्षा, अगर नींव मज़बूत होगी तो इमारत भी मजबूत होगी। अतः इस विद्यालयी शिक्षा की नींव को मजबूत बनाना हर शिक्षक और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हर अधिकारी का कर्त्तव्य है।

यह उत्तम बात है कि सभी विद्यालय चाहे वह सरकारी हो या गैर-सरकारी उनमें शैक्षिक गतिविधियों, पठन-पाठन और विद्यार्थियों को अधिकतम अंक लाने पर जोर देते हैं, पर इन सब प्रयासों के बीच लगता है कि हमें बालक के जिस

पक्ष पर जितना ध्यान देना चाहिए नहीं दे पा रहे हैं और ये पक्ष है - पाठ्य सहगामी कार्यक्रम। जैसे खेलकूद, मंचीय कार्यक्रम (नाटक, नृत्य, संगीत और गायन) वाद-विवाद, निबंध लेखन, चित्रकला आदि। प्रत्येक अभिभावक और विद्यालय में पढ़ने वाला विद्यार्थी यह बात जानता है कि स्कूल फीस में खेलकूद के लिए भी फीस ली जाती है, पर कम ही विद्यार्थी खेलकूद में रुचि लेते हैं जबकि खेलकूद से जुड़ना, उनमें भाग लेना प्रत्येक विद्यार्थी का अधिकार है।

खिलाड़ी जन्म से ही कोई बनकर नहीं आता। खिलाड़ी विद्यालयों में ही प्रशिक्षित होते हैं। उनकी खेल प्रतिभा को विद्यालय ही निखारता और तराशता है। हाँ, बालक में खेल के प्रति रुचि होना आवश्यक है। जीवन की कोई भी विद्या या क्षेत्र हो उसके लिए बालक में रुचि होना आवश्यक है। जैसे हर बालक पढ़कर डॉक्टर या इंजीनियर नहीं हो जाता वैसे ही खेल का क्षेत्र भी है। सम्पूर्ण विद्यालय में पढ़ने वाला हर छात्र खिलाड़ी नहीं बन सकता। बालक के सामने बहुत-सी हॉबीज होती हैं- कोई संगीत में रुचि लेता है, कोई पढ़ाई-लिखाई के अलावा किसी बात में रुचि नहीं दिखाता, तो कोई राजनीति में रुचि रखता है, कोई चित्रकारी में तो कोई नृत्य व अभिनय में। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान इस बात पर जोर देता है कि बालक की रुचि पर आधारित शिक्षा होनी चाहिए। हमारे देश में इसी बात को नजरअंदाज किया जाता है और बालक की रुचि को महत्त्व न देते हुए उसके अभिभावक निर्धारित करते हैं कि उनके बच्चे को कौनसा संकाय दिलवाया जाए। फिर जबरन बालक की रुचि के विरुद्ध पढ़ाया जाता है और सपने देखे जाते हैं कि वह डॉक्टर, इंजीनियर या आर्किटेक्ट बनेगा। बहुत कम अभिभावक उसे प्रतियोगी परीक्षा के लिए या अन्य व्यवसायों में जाने के लिए प्रेरित करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह अच्छी पढ़ाई नहीं कर पाता और जीवन में आगे बढ़ने का उसका मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

हमारे देश में उत्तम खिलाड़ियों, कलाकारों की आवश्यकता सदैव अनुभव की जाती है। क्राफ्ट्स वर्क, चित्रकला, खेल, अभिनय, नृत्य कला, संगीत आदि की शिक्षा विद्यालय के अलावा और कौन दे सकता है। विद्यालयों में इनका प्रशिक्षण योग्य एवं पूर्ण प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा दिया जाता है और इनकी शिक्षा विधिवत् एवं पाठ्यक्रम के अनुसार होती है तथा सभी जगह मान्य होती है।

हमारे देश में नृत्य व संगीत का जो ज्ञान है वह विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। पाश्चात्य संगीत में न कोई नियम है, न कोई कायदा है। वैसा संगीत केवल शोर ही होता है जो कर्णप्रिय बिल्कुल नहीं होता। वैसे ही हमारे यहाँ का क्लासिकल संगीत तो अन्तर्रात्मा को छू लेने में सक्षम है। ऐसे संगीत को सीखने के लिए योग्य गुरुओं की आवश्यकता होती है। भारत के विद्यालयों में ऐसे गुरुजन मौजूद हैं जो संगीत एवं नृत्य में छात्रों को निपुण बनाते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान इस बात का उल्लेख करता है कि हर बालक या बालिका में प्रकृति ने कोई न कोई प्रतिभा दी है। कोई बचपन से ही खेलों में रुचि रखता है, कोई संगीत में, कोई नृत्य में, चित्रकारी में, अभिनय में, गाने में, पर्वतारोहण में, स्केटिंग या स्कीइंग में, कम्पयूटर ऑपरेटिंग या वाद-विवाद में। कोई बालक ऐसा नहीं होता है जिसमें कोई प्रतिभा न हो। कहानीकार, कवि या लेखक कोई अचानक नहीं बन जाता। वह ऐसी रुचि लेकर पैदा होता है।

अब यह विद्यालय का दायित्व बनता है कि ऐसी प्रतिभाओं को पहचाने और उन्हें उनकी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे। अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को केवल पढ़ाई के लिए ही बाध्य न करे, वरन उन्हें उनके रुचि से सम्बंधित कार्य करने में उनकी सहायता भी करे। सहगामी कार्यक्रमों के द्वारा भी बालक अपनी विशिष्ट पहचान बनाते हैं। आज जो हम कला, संगीत, गायन, खेल व रचनात्मक कार्यों में विशेष पहचान रखने वालों को भी विद्यालयों द्वारा प्रेरित किया गया होगा। शिक्षकों ने उनकी पीठ थपथपाई होगी और उनके सर पर हाथ रखकर उस क्षेत्र विशेष में आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद दिया होगा। उनके अभिभावकों ने भी हर प्रकार से उन्हें प्रेरित किया होगा।

महाकवि, नाटककार, चित्रकार व संगीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर को विद्यालय एवं अभिभावकों दोनों की ओर से उनके रुचिगत क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। कई बार ऐसे भी शिक्षक होते हैं जो ऐसी प्रतिभाओं को उनके उबरने से पहले ही डांट फटकार कर हतोत्साहित कर देते हैं या उनके घरवाले उनकी प्रशंसा करने के बजाय उन्हें बुरा भला कहकर उनके अन्दर की प्रतिभा को कुचल देते हैं। ऐसा करना सरासर अन्याय है। जापान, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी जैसे प्रगतिशील एवं विकसित देशों में विद्यालयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि कौनसा बालक किस क्षेत्र में प्रतिभाशाली है। अध्ययन के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के सम्बंध में भी विशेष ध्यान

दिया जाता है। यही कारण है कि अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, उत्तरी कोरिया व अफ्रीकन देशों से उत्तम खिलाड़ी व ऐथलिट ऑलम्पिक खेल में आते हैं जबकि अधिकतम आबादी वाला देश (भारत) होने के बाद हमारे यहाँ अच्छे खिलाड़ी नहीं मिल पाते।

यह प्रसन्नता की बात है कि जब हमारे देश में यह जागरूकता आई है कि सहगामी कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाए इस हेतु विद्यालय स्तर से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों कलाकारों, चित्रकारों एवं टेक्नीकल क्षेत्र में हुनरमंद विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। गर्मियों की छुट्टियों में विशेष केम्प इनके प्रशिक्षण के लिए लगाए जाते हैं। गायकों व संगीतकारों के लिए भी नए अवसर प्रदान किए जा रहे हैं, टी.वी. के रियेलिटी शोज में बच्चे व युवा अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय देते हैं।

भारतीय लोककलाओं, संगीत व नृत्य पर और भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं। इस हेतु प्राइमरी स्तर से प्रतिभाशाली बालकों को विशेष प्रशिक्षण मिले ताकि वे विश्व में देश का नाम रोशन कर सकें। ऐसी प्रतिभाओं की अनदेखी करना अनुचित है और ऐसा करके उनके सुंदर भविष्य को छीन लेना है। खेल शिविरों के समान बालकों के लिए मानवीय गतिविधियों चित्रकला तथा क्लासिकल नृत्य के भी शिविर जिला स्तर पर आयोजित हों। केवल बड़े शहरों में ही नहीं वरन छोटे शहरों, कस्बों तथा गाँवों में भी अनेकों बाल प्रतिभाएँ विद्यमान है। बस कमी है तो इन प्रतिभाओं को खोजने, उनको प्रेरित करने व अवसर देने की है।

वैसे तो सहगामी पाठ्येतर कार्यक्रम प्रत्येक छात्र के मानसिक व शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, परन्तु उन छात्रों के लिए और भी उपयोगी हैं जो पढ़ाई में औसत हैं लेकिन खेलों व अन्य सहगामी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हैं। वे खेल व कला को अपना अच्छा भविष्य बना सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि प्रतिभावान छात्रों को जिस क्षेत्र में वे रुचि रखते हैं प्रेरित किया जाए। विद्यालय के प्राचार्य व अन्य शिक्षकों द्वारा उनका उत्साहवर्द्धन होगा तो वे भविष्य में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
पोस्ट ऑफिस रोड,
भीमगंज मण्डी, कोटा (राज.)

कार्यस्थल पर तनाव कम करें

वर्तमान में कार्यस्थल पर तनाव होना एक सामान्य बात हो चुकी है। कार्यभार और सीनियर्स की अपेक्षाओं को मैनेज करना कठिन होता है। लंबे कामकाजी घंटे, सिस्टम व प्रोसेस का अभाव, अवास्तविक डेडलाइंस व सहयोग की कमी के कारण भी तनाव हो सकता है। जानते है कि इस तनाव को कम कैसे करें!

बेसिक्स को समझें : पता करें कि क्या आपको वाकई तनाव होता है। रिश्तों में निवेश करें, दोस्तों के साथ समय गुजारें, सेहत के लिए अपनी लाइफस्टाइल पर गौर करें, काम से नियमित अन्तराल लेते रहें। कार्यालय में सहज रहें।

समय को व्यवस्थित करें : अपने काम के तनाव को कम करने के लिए समय को मैनेज करना बहुत जरूरी होता है। यदि आप काम का दबाव महसूस करते हैं तो अपनी कार्य पद्धति में बदलाव के बारे में भी विचार कर सकते हैं।

सीमाएँ तय करें : अपनी सीमाएँ तय करें कि आप आरामदायक कैसे महसूस करते हैं और कब असहज हो जाते हैं। आपको इसके बारे में अन्य लोगों से भी बात करनी चाहिए। तनाव को मैनेज करने में प्रभावी संवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

मदद लें : अगर लगता है कि आप तनाव के शिकार हैं तो इससे निपटने के लिए काउंसलर की मदद लेनी चाहिए। ज्यादातर प्रोग्रेसिव कंपनियों में इन हाउस काउंसलर होता है। कई कंपनियां फ्लेक्सी टाइमिंग ऑफर करती हैं। इससे एम्पलॉइज का स्ट्रेस मैनेज हो सकता है। यदि कार्यस्थल पर यह विकल्प नहीं है तो आप व्यवस्थापक से कार्य और जीवनशैली के संतुलन के तरीके जान सकते हैं।

चिंतन

आखिर हम कहाँ जा रहे हैं?

❐ प्रो. मिश्री लाल मांडोत

शिक्षित समाज इस देश के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए शिक्षा एक मुख्य कुंजी है। हमारे देश की सरकार चाहती है कि देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो। समाज का कोई भी वर्ग अथवा लिंग शिक्षा से वंचित न रहे। इसी उद्देश्य से वर्तमान सरकार ने 'बेटी बचाओ-सबको पढ़ाओ' जैसा अभियान शुरू किया है।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है। अब देश में लगभग ऐसी स्थिति बन गई है कि आर्थिक कारणों के वशीभूत कोई भी व्यक्ति (बालक) शिक्षा प्राप्त करने से वंचित नहीं रह सकता। शिक्षा प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारें, राष्ट्रीयकृत बैंकों, कई समाजसेवी ट्रस्टों, दानदाताओं, सामाजिक संस्थाओं आदि से अनुदान, छात्रवृत्तियाँ दी जाती है। अनु+सूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओ.बी.सी., बी.पी. एल परिवार के सदस्यों, अल्पसंख्यकों, विकलांगों, परित्यक्ताओं, विधवाओं, मृत सैनिकों के परिवार के सदस्यों को समाज कल्याण विभाग से छात्रवृत्ति मिलती है। मेघावी छात्रों को मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति योजना कोष से तथा भारत सरकार द्वारा मेरिट स्कॉलरशिप प्रदान की जाती है। संक्षेप में कोई भी विद्यार्थी अब आर्थिक बाध्यताओं के वशीभूत शिक्षा प्राप्त करने से वंचित नहीं रह पाता।

Samuel smile ने अपने एक लेख में उचित ही लिखा है 'Good elections is a good fortune.'अर्थात् 'अच्छी शिक्षा एक व्यक्ति के लिए अच्छे जीवन का सृजन करती है।'

आधुनिक शिक्षाविद् इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि-'The best gift to a child is the least schooling'

अर्थात् 'एक अच्छा विद्यालय एक बालक के लिए सबसे अच्छा पुरष्कार है।' यही कारण है कि आज हर माता-पिता अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाने का प्रयत्न करते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें तनिक कठिनाई क्यों न झेलनी पड़े। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक सकारात्मक पहल है।

इसके विपरीत आज एक नई और विकट स्थिति भी पैदा हो गई है, जिसे देखकर मर्मान्तक पीड़ा होती है। आज का विद्यार्थी परीक्षा में नकल करके उत्तीर्ण होना चाहता है तथा पैसा (रिश्वत) देकर नौकरी प्राप्त करना चाहता है।

'1 मई, 2014 को सी.बी.आई. ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में नकल करते दो परीक्षार्थियों को पकड़ा। जाँच एजेन्सी ने ब्लूटूथ डिवाइस जब्त की, जो नकल के लिए इस्तेमाल की गई थी। सी.बी.आई. ने नकल रैकेट के सक्रिय होने की सूचना पर कई केन्द्रों पर छापेमारी की।'

'बिहार में बोर्ड परीक्षा में नकल करके एक छात्रा ने प्रथम पोजीशन प्राप्त की। जाँच के दौरान ज्ञात हुआ कि वह प्रश्न-पत्र के विषय का नाम भी भली प्रकार उच्चारण नहीं कर पा रही थी।'

इस प्रकार की कई खबरें आए दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होती रही है। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में भी विद्यार्थियों द्वारा नकल करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यद्यपि राज्य सरकार द्वारा सार्वजनिक परीक्षा में अनुचित साधनों के प्रयोग को 1992 के अधिनियम संख्या 27 के अधीन आपराधिक दंड घोषित किया जा चुका है। किन्तु प्रशासन और पुलिस की उदासीन मनोवृत्ति के कारण इसकी कठोरता से अनुपालना नहीं हो रही है तथा दिनो-दिन मर्ज बढ़ता ही जा रहा है। नकल करने के लिए विद्यार्थी तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। अब तो स्थिति यहाँ तक पहुँच गई है कि कुछ शिक्षण संस्थान अपना अच्छा परिणाम रखने के लिए तथा छात्रसंख्या बढ़ाने के प्रलोभन में संस्थान के ब्लेक बोर्ड पर परीक्षा कक्ष में छात्रों को नकल कराने पर उतारू हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि धोरीमन्ना के एक महाविद्यालय में सामूहिक नकल का मामला में विश्वविद्यालय ने उक्त महाविद्यालय के छात्रों का परीक्षा परिणाम रोक दिया तो महाविद्यालय के प्रबन्धक ने भरी सभा में माननीय कुलपति को थप्पड़ लगा दी। बड़ी दुःखद घटना है। ज्ञातव्य है कि विद्यार्थी और अभिभावक इस मर्म को भली प्रकार समझे कि विद्यार्थियों को दिए जाने वाले इस प्रकार के प्रलोभन उनके लिए एक मीठा जहर है जिसकी अनुभूति उन्हें उस समय होगी, जब कालान्तर में उन्हें कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजरना पड़ेगा और कामयाबी नहीं मिलेगी। यह दिगभ्रमित होने का मार्ग है जिसे त्यागना नितान्त आवश्यक है। हम जीवन के इस शाश्वत सत्य को क्यों भूल रहे हैं जो कभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक डारविन ने लिखा था 'Struggle for existence and survival of the fittest' अर्थात् जीवन के लिए संघर्ष करना पड़ता है और इसमें एक योग्यता की विद्या होती है। एक पत्थर को संगतराश की छैनी-हथोड़े की हजारों मार सहनी होती है, तभी वह मूर्ति का स्वरूप ले पाती है और पूजने योग्य बनती है। मनुष्य जीवन में भी सफलता का मूल मंत्र है- 'करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।'

अस्तु शिक्षाविदों का दायित्त्व है कि अपने छोत्रों को जीवन के उचित और वास्तविक धरातल पर लाने के लिए उन्हें उत्प्रेरित करें। पास-बुक्स, वन-वीक सीरिज आदि के स्थान पर पुनः पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ-ग्रन्थों, अच्छी शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों में सन्निहित ज्ञान का अर्जन करें, सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन आयोजित करें तथा उनमें प्रतिस्पर्धा और रचनात्मक प्रतिभा को उकेरने का प्रयास करें जिससे भविष्य में वे उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने में सफल हो सके।

अन्त में मेरा विनम्र अनुरोध है कि आप इस तथ्य को भली प्रकार समझ लें कि 'There is no shortcut to success' अर्थात् सफलता पाने के लिए कोई छोटा मार्ग नहीं होता। आप सफलता पाने के लिए सतत प्रयास कीजिए, आपको कामयाबी अवश्य मिलेगी। सच्ची लगन, कठोर परिश्रम, ईमानदारी और वफादारी ही आपको उन्नति के चरम शिखर पर ले जाने वाली है, अन्य किसी प्रकार के हथकंडे बर्बादी की ओर धकेलने वाले हैं।

पूर्व प्राचार्य
सी-2403, ओबेराय स्प्लेण्डर जेवीएल. आर मजास डिपो के सामने मुम्बई-4000093

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2018

● 1. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 46वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2018–19 का आयोजन। ● 2. शिविरा पंचांग वर्ष : 2018–19 में धार्मिक पर्व/जयन्ती हेतु पूर्व निर्धारित तिथि में आंशिक संशोधन हेतु। ● 3. शाला दर्शन/शाला दर्पण पोर्टल की रिपोर्ट्स का उपयोग करने एवं हार्डकॉपी में सूचनाओं का आदान–प्रदान को रोकने के संबंध में। ● 4. शालादर्पण व शालादर्शन पर उपलब्ध सूचनाओं का अधिकतम उपयोग करने के संबंध में। ● 5. शालादर्पण एवं शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग करने के संबंध में। ● 6. विधानसभा चुनाव तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के कारण तृतीय कार्यशाला की पूर्व निर्धारित तिथियों में आंशिक संशोधन हेतु। ● 7. 2018–19 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

1. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 46वीं राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2018–19 का आयोजन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 46वीं राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2018–19 का आयोजन शिविरा पंचांग में दी गई तिथियों के अनुसार निम्न स्तरों पर उनके नाम के सम्मुख अंकित अवधि में होगी :–

जिला स्तर पर चयन– दिनांक 13.12.2018 से 14.12.2018 तक
मण्डल स्तर पर चयन– दिनांक 17.12.2018 से 18.12.2018 तक
मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण– दिनांक 20.12.2018 से 23.12.2018 तक
राज्य स्तरीय प्रतियागिता– दिनांक 27.12.2018 से 30.12.2018 तक

निदेशालय इकाई का चयन दिनांक 17.12.2018 से 18.12.2018 तक एवं प्रशिक्षण 20.12.2018 से 23.12.2018 तक होगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्त्व संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) शिक्षा विभाग, उदयपुर का है जिसका आयोजन प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मण्डफिया (सांवरिया–जी) चित्तौड़गढ़ के तत्वाधान में दिनांक 27.12.2018 से 30.12.2018 तक होगा। इस प्रतियोगिता की समस्त कार्यवाही पूर्व में निदेशालय द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय कर्मचारी क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता नियमावली एवं मार्गदर्शिका तथा समय–समय पर हुए संशोधनानुसार सम्पादित होगी। उक्त प्रतियोगिता में बैडमिन्टन एवं टेबल टेनिस खेल हेतु चार–चार महिला खिलाड़ी सहित कुल 134 खिलाड़ियों से अधिक का चयन कर चित्तौड़गढ़ नहीं ले जावें। जिला एवं मण्डल स्तर पर उक्तानुसार सम्भागी संख्या रहेगी। खेलानुसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागियों की संख्या राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु इस प्रकार होगी :–

खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	एथलेटिक्स में सम्भागी कुल खिलाड़ी			सांस्कृतिक कार्यक्रम	कुल खिलाड़ी
			40 वर्ष से अधिक	40 वर्ष से कम		
बास्केटबॉल	10	100 मीटर दौड़	02	02	सुगम संगीत	02
वॉलीबॉल	10	200 मीटर दौड़	02	02	एकाभिनय	02
टेबलटेनिस	04–04 (महिला)	400 मीटर दौड़	02	02	एकलनृत्य	02
कैरम	04	800 मीटर दौड़	02	02	विचित्र वेशभूषा	02
शतरंज	02	4 गुणा 100 मीटर दौड़	04	04	हारमोनियम वादन	01
बैडमिन्टन	04–04 (महिला)	4 गुणा 400 मीटर दौड़	04	04	तबला वादन	01
कबड्डी	10	ऊँची कूद	02	02	ढोलक वादन	01
फुटबॉल	14	लम्बी कूद	02	02	झांझ वादन	01
		त्रिकूद	02	02		
		तश्तरी फेंक	02	02		
		भाला फेंक	02	02		
		गोला फेंक	02	02		

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं यथा खेल मैदान, उपकरणों, निर्णायक गण, आवास व्यवस्था, चिकित्सा एवं सुरक्षा व्यवस्था, बिजली, पानी आदि की सुनिश्चितता प्रतियोगिता आयोजन के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से की जावे। साथ ही प्रतियोगिता आयोजक विद्यालय द्वारा सम्भागी दलों को प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मण्डफिया (सांवरिया–जी) चित्तौड़गढ़ पहुँचने हेतु रेल/बस मार्गों की सूचना प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मण्डफिया (सांवरिया–जी) चित्तौड़गढ़ द्वारा प्रसारित कर समस्त सम्भागी दलों हेतु मण्डल अधिकारियों एवं निदेशालय को प्रेषित की जाए।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/खेलकूद–1/35107/2018–19/ दिनांक 24–10–2018

2. शिविरा पंचांग वर्ष : 2018-19 में धार्मिक पर्व/जयन्ती हेतु पूर्व निर्धारित तिथि में आंशिक संशोधन हेतु।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचांग/2018-19/195 दिनांक 06-11-2018 ● आदेश

शिविरा पंचांग वर्ष : 2018-19 में अग्रांकित धार्मिक पर्व/जयन्ती हेतु पूर्व निर्धारित तिथि में एतद् द्वारा आंशिक संशोधन किया जाता है :-

क्र. सं.	धार्मिक पर्व/ जयन्ती का विवरण	वर्तमान में निर्धारित तिथि	संशोधित तिथि
1	चेटीचण्ड	07 अप्रेल, 2019 (अवकाश-उत्सव)	06 अप्रेल, 2019 (अवकाश-उत्सव)
2	श्रीरामनवमी	14 अप्रेल, 2019 (अवकाश-उत्सव)	13 अप्रेल, 2019 (अवकाश-उत्सव)
3	परशुराम जयन्ती	-	7 मई, 2019 (अवकाश)

नोट :- दिनांक 07 दिसम्बर, 2018 को आयोज्य माँ-शिक्षक बैठक (MTM) विधानसभा निर्वाचन हेतु मतदान दिवस होने के कारण आयोजित नहीं हो पाएगी, अतः दिनांक 06 मार्च, 2019 को पूर्व निर्धारित अध्यापक-अभिभावक बैठक (PTM) का आयोजन माँ-शिक्षक बैठक (MTM) के रूप में किया जाएगा।

समस्त सम्बन्धित उपर्युक्तानुसार पालना सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल) आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. शालादर्शन/शालादर्पण पोर्टल की रिपोर्ट्स का उपयोग करने एवं हार्डकॉपी में सूचनाओं का आदान-प्रदान को रोकने के संबंध में।

●राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ●क्रमांक : रा.स्कूल शि.प./जय/शालादर्पण/2018/408 दिनांक 2-11-2018 ● राज्य परियोजना निदेशक, राज. स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर। निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर। ● विषय : शालादर्शन/शालादर्पण पोर्टल की रिपोर्ट्स का उपयोग करने एवं हार्डकॉपी में सूचनाओं के आदान-प्रदान को रोकने के संबंध में।

जैसा कि आप को विदित है कि स्कूल शिक्षा विभाग के एम.आई.एस. पोर्टल शालादर्पण/दर्शन पर विद्यालय स्तर से दर्ज की गई सूचनाओं के आधार पर समस्त रिपोर्ट्स राज्य, संभाग, जिला एवं ब्लॉक स्तरीय कार्यालयों के लॉगिन पर उपलब्ध है। अतः आपके अधीनस्थ कार्यालयों को निदेर्शित करावें कि विभाग की आवश्यकतानुसार सूचनाएँ पोर्टल से ही प्राप्त करें तथा विद्यालय स्तर से हार्डकॉपी या वाहन स्तर पर किसी प्रकार की सूचनाएँ नहीं मंगवाई जाए। साथ ही समस्त संस्थाप्रधानों को पोर्टल पर आवश्यक प्रविष्टियाँ समयबद्ध रूप से करने के लिए पाबंद करें जिससे पोर्टल पर अद्यतन व सही सूचनाओं की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकें। यदि किसी भी प्रकार की रिपोर्ट्स वर्तमान में पोर्टल पर उपलबध नहीं है तो संबंधित कार्यालय मय प्रारूप शालादर्शन/दर्पण प्रकोष्ठ जयपुर या बीकानेर से संपर्क कर सूचना प्राप्त कर सकते है।

उक्तानुसार निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें।

● **(डॉ. राजेश शर्मा)** आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद एवं विशिष्ट शासन सचिव स्कूल शिक्षा विभाग।

4. शालादर्पण व शालादर्शन पर उपलब्ध सूचनाओं का अधिकतम उपयोग करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा मा/माध्य/माध्यमिक/शालादर्पण/60302/2016-17/158 दिनांक 19-11-2018 ● समस्त संयुक्त निदेशक संभाग, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी-माध्यमिक/प्रारंभिक (मुख्यालय), समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी। ● विषय : शालादर्पण व शालादर्शन पर उपलब्ध सूचनाओं का अधिकतम उपयोग करने के संबंध में। ● प्रसंग : 1. श्रीमान आयुक्त महोदय के पत्रांक रा. स्कूल शि.प./जय/शालादर्पण/2018/408 दिनांक 2.11.2018 ● 2. कार्यालय के पत्रांक शिविरा-मा/माध्य/शालादर्पण/60306(2)/2017-18/दिनांक : 12.09.17

उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्रों के क्रम में लेख है कि शिक्षा विभाग के समस्त राजकीय विद्यालयों, कार्मिकों तथा विद्यार्थियों की समस्त सूचनाएं विद्यालय स्तर से दर्ज की गई सूचनाओं के आधार पर राज्य, संभाग, जिला व ब्लॉक स्तरीय शालादर्पण/शालादर्शन कार्यालय लॉगिन पर उपलब्ध हैं। प्रासंगिक पत्रों के द्वारा पूर्व में भी निर्देशित किया गया था कि शालादर्पण तथा शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं का अधिकतम उपयोग किया जावे तथा पोर्टल पर उपलब्ध सूचना विद्यालयों से सीधे नहीं माँगी जावे। पोर्टल पर उपलब्ध रिपोर्ट के अतिरिक्त अन्य प्रारूप में सूचना की आवश्यकता होने पर शालादर्पण/शालादर्शन प्रकोष्ठ बीकानेर तथा जयपुर से सम्पर्क कर सूचना प्राप्त की जाए। परंतु यह लगातार देखने में आया है कि कार्यालयों के द्वारा सीधे ही संस्था प्रधानों से सूचनाएं माँगी जा रही हैं, जिसे उच्चाधिकारियों द्वारा अत्यन्त गंभीरता से लिया गया है।

अतः समस्त कार्यालयों को पुनः निर्देशित किया जाता है कि शालादर्पण/शालादर्शन पर उपलब्ध सूचनाएं संस्था प्रधानों तथा पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पी.ई.ई.ओ.) से नहीं माँगी जावे। उक्त निर्देशों की प्रत्येक स्तर पर कठोरता से पालना सुनिश्चित करें अन्यथा नियमानुसार विभागीय कार्यवाही प्रस्तावित की जावेगी।

उपरोक्त को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. शालादर्पण एवं शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग करने के संबंध में।

●कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक शिविरा-मा/माध्य/शालादर्पण/60306(2)/2017-18 दिनांक :

12.09.2017 समस्त उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा/प्रारम्भिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा/प्रारम्भिक शिक्षा, समस्त ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी ● विषय : शालादर्पण एवं शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग करने के संबंध में। ● प्रसंग : शासन का पत्रांक प.4(16) शिक्षा-I/2014 पार्ट जयपुर दिनांक 15.11.2016 एवं इस कार्यालय का पूर्व पत्रांक शिविरा-मा/माध्य/शालादर्पण/60306/16-17/108 दिनांक 24.11.16

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्रों के संदर्भ में लेख है कि शिक्षा विभाग के अधीन संचालित माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा के समस्त विद्यालयों, कार्मिकों एवं विद्यार्थियों के संबंध में सूचनाएँ क्रमशः शालादर्पण एवं शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध हैं। प्रासंगिक पत्र द्वारा पूर्व में निर्देशित किया गया था कि पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाओं का अधिकतम उपयोग करते हुए विद्यालयों से सीधे सूचनाएँ नहीं मांगी जावे, बावजूद इसके यह देखने में आ रहा है कि कार्यालयों द्वारा सीधे ही संस्थाप्रधानों से सूचनाएँ मांगी जा रही है जिसे शासन स्तर पर गंभीरता से लिया गया है।

अतः इस पत्र द्वारा समस्त कार्यालयों को पुनः निर्देशित किया जाता है कि शालादर्पण एवं शालादर्शन पोर्टल पर उपलब्ध सूचनाएं संस्था प्रधानों तथा पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पी.ई.ई.ओ.) से नहीं मांगी जावे। आवश्यक सूचना पोर्टल पर ही अद्यतन करवाकर उपयोग करें तथा उपलब्ध सूचना के अतिरिक्त अन्य प्रारूप में आवश्यकता होने पर शालादर्पण/शालादर्शन प्रकोष्ठ बीकानेर तथा जयपुर से संपर्क करें। उक्त निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित करें अन्यथा नियमानुसार विभागीय कार्यवाही अमल में लाई जावेगी।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. विधानसभा चुनाव 2018 तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के कारण तृतीय कार्यशाला की पूर्व निर्धारित तिथियों में आंशिक संशोधन हेतु।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक शिविरा-मा/माध्य/SIQE/60828/कलस्टर कार्यशाला/2017/123 दिनांकः- 22.11.2018 ● विषयः विधानसभा चुनाव 2018 तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के कारण तृतीय कार्यशाला की पूर्व निर्धारित तिथियों में एतद्द्वारा आंशिक संशोधन हेतु।

इस कार्यालय के परिपत्र क्रमांकः शिविरा/मा/माध्य/SIQE/60828/कलस्टर कार्यशाला/ 2017/78 दिनांकः 03.08.2018 के द्वारा 2018-19 हेतु कलस्टर कार्यशालाओं की समय-सारिणी जारी की गई थी। राजस्थान विधानसभा चुनाव-2018 तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के कारण तृतीय कार्यशाला की पूर्व निर्धारित तिथियों में एतद् द्वारा आंशिक संशोधन किया जाता है-

क्र. सं.	कार्यशाला	समूह	वर्तमान तिथि	संशोधित तिथि
1.	तृतीय कार्यशाला	प्रथम समूह (हिन्दी एवं पर्यावरण)	3 से 8 दिसम्बर 2018	11 व 12 जनवरी 2019
2.		द्वितीय समूह (गणित एवं अंग्रेजी)	3 से 8 दिसम्बर 2018	15 व 16 जनवरी 2019

समस्त संबंधित उपर्युक्तानुसार पालना सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. 2018-19 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/हिनि/28203/2018-19 दिनांकः 14.11.2018 ● समस्त उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● समस्त विशिष्ट संस्थाएँ ● समस्त प्राचार्य डाइट

विषयः 2018-19 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : प.21 (7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 जयपुर दिनांक 13.10.2017 एवं पत्रांक दिनांक 15.06.2018 द्वारा अनुमोदन उपरान्त हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान 2018-19 का शिक्षा विभाग के समस्त राजपत्रित एवं अराजपत्रित संवर्ग के कार्मिकों के वेतन विपत्र माह दिसम्बर 2018 देय जनवरी 2019, पूर्व निर्धारित दर से कटौती कर भिजवाया जाना है। वेतन से कटौती बाबत जिला शिक्षा अधिकारी की कार्यशाला आयोजित की जा चुकी है तथा विस्तृत निर्देश DD/DEO/CDEO माध्यमिक/प्रारंभिक को निदेशालय के पत्र दिनांक 24.10.2018 द्वारा जरिये मेल प्रेषित किए जा चुके हैं। अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के वेतन से अनिवार्य रूप से कटौती करें।

राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित वार्षिक अंशदान की दरें

1	समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित)	रुपये 500/- प्रतिवर्ष
2	समस्त अराजपत्रित कार्मिक/ अध्यापक एवं सहायक कर्मचारी सहित	रुपये 250/- प्रतिवर्ष

हितकारी निधि कल्याणकारी योजनाएँ

इस कल्याणकारी योजनान्तर्गत प्राप्त अंशदान राशि में से सेवा में रहते कार्मिक के निधन पर उसके आश्रितों द्वारा आवेदन करने पर 1,50,000/- रुपये एवं दुर्घटना में अशक्त होने के कारण प्रमाण-पत्र के आधार पर 50,000/- रुपये की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की जाएगी।

शिक्षा विभाग के कार्मिकों के 100 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर 5,000/- रुपये से 10,000 /- तक की सहायता राशि देय है।

शिक्षा विभागीय कार्मिक एवं उसके आश्रितों में से किसी सदस्य के असाध्य रोग से पीड़ित होने पर 5,000/- रुपये की सहायता दिए जाने का

प्रावधान है।

शिक्षा विभागीय कार्मिकों को बालिका शिक्षा हेतु 50,000/- रुपये तक का ऋण दिए जाने का प्रावधान है।

अतः वर्ष 2018-19 का हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान माह दिसम्बर, 2018 देय वेतन जनवरी, 2019 से निर्देशानुसार वेतन से उक्त निर्धारित दर से प्राप्त कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

हितकारी निधि योजना की सफलता के लिए आपके अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों में इस पत्र की प्रतिलिपि मय आपके निर्देशों के भिजवाएं ताकि इसके सफल परिणाम प्राप्त हो सकें। अंशदान की कटौती होने के पश्चात् निर्देशानुसार ECS Cashbook एवं कटौती शिड्यूल की प्रति, अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से भिजवाया जाना है। कटौती शिड्यूल में कार्मिक के I.D. संख्या का आवश्यक रूप से उल्लेख करें क्योंकि यही I.D. कार्मिक का खाता संख्या होगी, तद्नानुसार खातों में प्रविष्टियाँ की जाएगी।

(नथमल डिडेल) I.A.S. निदेशक एवं अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : दिसम्बर, 2018	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.12.2018	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	विश्व एकता दिवस (उत्सव)		
03.12.2018	सोमवार	बीकानेर	8	सामाजिक विज्ञान	20	भारत की अर्थव्यवस्था पर अंग्रेजी शासन का प्रभाव
04.12.2018	मंगलवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	16	राष्ट्रीय सुरक्षा
05.12.2018	बुधवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	12	मानव संसाधन
06.12.2018	गुरुवार	जोधपुर	12	अर्थशास्त्र	19	केन्द्रीय बैंक कार्य एवं साख नियंत्रण
07.12.2018	शुक्रवार	बीकानेर	12	अर्थशास्त्र	24	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अवधारणाएँ
08.12.2018	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	मानव अधिकार दिवस		
10.12.2018	सोमवार	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश, मानव अधिकार दिवस (उत्सव)।				
11.12.2018 मंगलवार से 24.12.2018 तक अर्द्धवार्षिक परीक्षा।						
25.12.2018 मंगलवार से 07.01.2019 तक शीतकालीन अवकाश।						

● **निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग दिसम्बर, 2018

दिसम्बर-2018					
रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

दिसम्बर 2018 ● कार्य दिवस-19, रविवार-05, अवकाश-07, उत्सव-02, ● 01 दिसम्बर-विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस (SCERT)। **02 एवं 03 दिसम्बर**-विश्व विकलांग दिवस-SMSA; **07 दिसम्बर**-विधानसभा निर्वाचन हेतु मतदान दिवस पर सार्वजनिक अवकाश **10 दिसम्बर**-मानव अधिकार दिवस (उत्सव), **11-24 दिसम्बर** अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन, **13-14 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन, **17 से 18 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **20-23 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **25 दिसम्बर**-क्रिसमस डे (अवकाश), **25 दिसम्बर से 07 जनवरी**-शीतकालीन अवकाश (राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना), **26 से 28 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, **27 से 30 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **29 से 31 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **नोट-** जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। **SMSA से सम्बन्धित कार्यक्रम**: दिसम्बर-2018 से जनवरी-2019 : 10 दिवसीय एच.एम. लीडरशिप प्रशिक्षण, **शीतकालीन अवकाश के दौरान आयोज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम : 1.** कक्षा 6 से 8 के शिक्षकों हेतु छः दिवसीय विषय आधारित शिक्षक प्रशिक्षण, **2.** नवनियुक्त शिक्षक प्रशिक्षण।

बोर्ड परीक्षा की तैयारी

❒ उषा रानी स्वामी

"Dream is not that you see in the sleeping, Dream is that thing that dosenot allow you to sleep"

''सपने वह नहीं होते जो सोते समय देखे जाते हैं। सपने वह होते हैं, जो सोने नहीं देते।''

व्यक्तिगत शैक्षिक और सामाजिक जीवन में महत्त्व रखने वाली बोर्ड-परीक्षा विद्यार्थियों के लिए चुनौती भरा मार्ग हैं। इस मार्ग को सहजता से कैसे पार करें। सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने में किस प्रकार कामयाब हों, इसके लिए कुछ सुझाव बालकों को बताना चाहूँगी। अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए निम्न बातों पर अवश्य गौर करें।

1. त्याग निष्ठा एवं लगन
2. स्वास्थ्य
3. ब्रह्मचर्य
4. आध्यात्म
5. जिज्ञासा
6. संयम और सादगी
7. नियमित दिनचर्या
8. बड़ों के प्रति सम्मान
9. विनम्रता और सद्विचार

ये नौ बातें आपको उस ऊँचाई तक ले जाएगी, जहाँ आप स्वयं पहुँचने की चाह रखते हैं। आवश्यकता है इन्हें दृढ़ता से पालन करने की। परीक्षा तैयारी से पूर्व विद्यार्थियों के मन में विचारों की उथल-पुथल चलती रहती है - जैसे

- परीक्षा की तैयारी कैसे शुरू की जाए?
- दिनचर्या कैसी हो?
- क्या खेलना, बोलना व भोजन कम कर दिया जाए?
- पूरे समय स्वस्थ कैसे रहें?
- याददाश्त कैसे बढ़ायी जाए।
- क्या नोट्स बनाकर पढ़ा जाए?
- परीक्षा नजदीक आने पर पूरा कोर्स किस प्रकार पूर्ण किया जाए इत्यादि।

सर्वप्रथम दिनचर्या नियमित करें। समय सारिणी बनाएं। प्रारम्भ में प्रत्येक विषय को 2 घण्टे का समय दिया जाए। प्रारम्भ में सभी पाठ्यपुस्तकों की रीड़िंग लगायी जाए ताकि आप यह जान सकें कि पाठ्यक्रम में क्या-क्या

बातें सम्मिलित की गई हैं। गणित के सवालों को स्वयं हल करने का प्रयास करें। प्रतिदिन हिन्दी व अंग्रेजी का एक निबन्ध पढ़ें व लिखने का अभ्यास करें। विस्तृत बिन्दुओं के नोट्स तैयार करें। कठिन बिन्दुओं को बार-बार पढ़कर स्थाई करें। उनको सक्षिप्त कर याद करने का प्रयास करें जैसे word wide web.-w.w.w. होशियार और जागरूक विद्यार्थियों के लिए ट्यूशन करना समय बर्बाद करना है। कक्षा में पढ़ते समय ही अध्यापक जी से पूछकर मुश्किलें हल कर ली जाए। अंग्रेजी विषय के मीनिंग व Verbs ज्यादा याद किए जाएं ताकि परीक्षा में आने वाले Unseen Passage को आसानी से हल किया जा सके। माह जुलाई से सितम्बर तक एक बार सम्पूर्ण कोर्स पढ़ लिया जाए। अक्टूबर से दिसम्बर तक पूर्व की कमियों को दूर करते हुए दुबारा कोर्स तैयार करें। जनवरी माह से ही डेस्कवर्क व पुराने प्रश्न पत्र निर्धारित समय में हल करने का अभ्यास करें ताकि परीक्षा के समय पेपर हल करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आए।

अधिक से अधिक लिखकर अभ्यास किया जाए, जिससे मेमोरी में सभी बातें स्थाई रूप से आ सके। जनवरी माह में तीसरी बार दोहरान करें। बड़े प्रश्नों को बिन्दुवार लिखकर याद करें। परीक्षा से पूर्व शीघ्र दोहरान के लिए सभी विषयों के पाठों को बिन्दुवार लिख लें।

अन्य कुछ तथ्य :-

- अपनी दिनचर्या में योग, प्राणायाम को स्थान दे। भ्रामरी, अनुलोम-विलोम कपालभाति 5-5 मिनिट करें।
- ईश्वर में अटूट श्रद्धा रखे। 5-10 मिनिट ईश्वर आराधना अवश्य करें।
- कुछ समय परिवार के लोगों के साथ बिताऐं।
- टी.वी. नेट का प्रयोग कम से कम करें।
- सामाजिक व पारिवारिक उलझनों में नहीं पड़े।
- माता-पिता व गुरुजनों का सम्मान करें।
- अपने लक्ष्य का सदैव स्मरण रखें।

कैसे पढ़ें:-

- शान्त वातावरण में पढ़ें।
- कमरे में प्रकाश की उचित व्यवस्था हो।
- अपनी टेबल दीवार से नहीं सटाएं।
- पढ़ते समय अपना मुँह पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- मकान के ईशान कोण में (उत्तर-पूर्व दिशा) बैठकर अध्ययन करें। ऐसा करने से एकाग्रता बढ़ती है। शीघ्र याद होता है।
- लेटकर नहीं पढ़ें।
- प्रत्येक 45 मिनिट के बाद 5 मिनिट आराम करें।
- उचित खुराक लें। फलों का सेवन करें।
- जल्दी सोएं जल्दी उठें 6 घण्टे की नींद अवश्य लें।
- कक्षा में पढ़ाए गए पाठ को घर आकर अवश्य पढ़ें।
- कक्षा टेस्ट व अर्द्धवार्षिक परीक्षा में आने वाले नम्बरों से प्रभावित नहीं हों।
- समय सारिणी के अनुसार नियमित अध्ययन करते रहें।
- चाय, कॉफी मादक द्रव्य से बचें।

उपर्युक्त सभी बातों का दृढ़ता से पालन कर, ईश्वर की कृपा और माता-पिता के आशीर्वाद एवं परिजनों की शुभाषीशों से आप अवश्य ही स्वर्णिम सफलता प्राप्त करेंगे।

व. पुस्तकालयाध्यक्ष
रा.बा.उ.मा.वि. निवाई (टोंक)

यावत जीवेत सुखम जीवेत

❐ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए प्राचीन काल से ही खोज करता रहा है, प्रयत्न करता रहा है। वह जीवन को शांतिमय एवं प्रसन्नतादायक बनाने के लिए कभी आध्यात्मवाद की ओर दौड़कर शरीर को कष्टमय स्थितियों में तपाकर अनन्त सुख मोक्ष की कल्पना करता हुआ जंगलों गिरि श्रंगों एवं गुफाओं में विचरण करता है तो कभी मन रूप घोड़े की लगाम को बिल्कुल ढीला छोड़कर भौतिक जीवन के रसाप्लावित प्रवाह में बहकर अनेक सांसारिक भोगों का रसास्वादन करता है। इस संबंध में अनेक मतों, धर्मो एवं पन्थों का प्राधान्य रहा है। परन्तु उन पर चलने वाले प्रत्येक अनुयायी को वास्तविक लक्ष्य प्राप्त होना असम्भव रहा है। जिसे भागीनुशीलन में कोई त्रुटि रह जाने का कारण देकर निवारण कर दिया जाता है।

सुख को ढूँढ़ने से पहले यदि मनुष्य सुख की परिभाषा जान ले तो सम्भवतः दुःखी ही न रहे। 'मोको कहाँ ढूंढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में' को छोड़ मनुष्य सुख की खोज के लिए विद्वानों, महात्माओं और विभिन्न पंथी साधुओं के पीछे दौड़ने लगता है और 'कस्तूरी कुण्डल बसे मृग ढूँढ़े बनमाहि' की भाँति स्वयं के रास्ते से विचलित होकर धर्मान्धानुकरण करने लगता है और पथ भ्रष्ट हो जाता है क्योंकि वह स्वयं उस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग का सृजनकर्ता नहीं, अतः दुःखी का दुःखी रह जाता है।

सुख वास्तव में मन की संतुष्टि का ही दूसरा नाम है। मन की यह संतुष्टि मानव को अनन्त, असीमित कल्पनाओं और आकांक्षाओं पर निर्भर करती है। मनुष्य अनेक दिवास्वप्रमयी कल्पनाओं में आकण्ठ डूबा हुआ हवा महल के मृगमारीचिका सहश सुख का अनुभव करता है। वह यह नहीं समझता कि इन सभी इच्छाओं की पूर्ति उनके लिए असम्भव है। क्योंकि इनमें से कुछ की पूर्ति दूसरों पर भी निर्भर करती है जिनकी अपनी कल्पनाएँ होती है। अतः दो मनुष्यों के क्षेत्र में एक दूसरे का हस्तक्षेप होता है। एक दूसरे के स्वार्थ टकराते हैं। कल्पनाओं एवं आकांक्षाओं पर ब्रेक लगता है। मनुष्य का 'स्व'

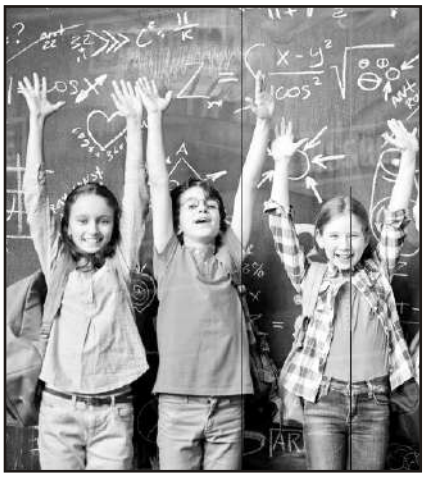

आहत होता है। मन असंतुष्ट होता है और खिन्नता जन्म लेती है। फिर खिन्नता के निवारणार्थ प्लानिंग क्रिया क्रियान्वित होती है और मनुष्य लक्ष्य सिद्धि के लिए आगे बढ़ता है। पक्ष-विपक्ष में क्रियाएँ प्रतिक्रियाएँ चलती हैं। परिणाम स्वरूप एक पक्ष हारता है तो दूसरा जीतता है। पराजित पक्ष पुनः आहत होता है। मानसिक एवं शारीरिक व्याघात पहुँचता है। फलतः अनेक शारीरिक एवं मानसिक व्याधियाँ उसे आवृत कर लेती हैं और वह भावातिरेक में विवेक शून्य हो पथ भ्रष्ट होकर एक अनजान शहर के चौराहे पर खड़े व्यक्ति की भाँति कल्याणमयी मार्ग पूछता है। भला वह कैसे सुखी हो सकता है?

अनेक लोग अपनी असफलताओं को भाग्य पर छोड़कर निराश बैठ जाते हैं और दुःख को दैवीय प्रकोप समझकर वहन करते रहते हैं। क्या कभी उन्होंने उसके मूल कारण को सोचा है? वे अपनी कमियों को भाग्य के माथे मढ़कर स्वयं दोष मुक्त हो राहत की सांस लेने की चेष्टा करते है। क्या उन्होंने एक बार असफल हो जाने की कमियों के निवारण का पुनः प्रयत्न किया है? नहीं फिर सुखी कैसे?

सुख ढूँढ़ने के लिए न तो किसी मन्दिर, मस्जिद की आवश्यकता है और न किसी साधु-सन्त की, न किसी कष्टमय जप, तप, व्रत नियमादि की और न सर्वथा भोगों में लिप्त रहने की वरन् मनुष्य को अपने लक्ष्य का निर्धारण का स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। 'सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभों जया जयौ' के अनुसार समभाव बनाए हुए जितनी सफलता मिले उसी में संतुष्टि रखे तथा शेष के लिए प्रयत्नशील रहे। कृष्ण ने गीता में कहा है- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्(कर्म करने में तेरा अधिकार है फल में नहीं क्योंकि फल तो तेरे किए हुए कार्यों का परिणाम है।) अतः फल को दूसरे के हाथ में अनिश्चित समझकर मोह नहीं करना चाहिए। मोह रहित हो जाने की स्थिति में मनुष्य को उसके सफल की आकांक्षा से संबंध नहीं रहता। अतः यदि परिणाम विपरीत भी रहता है तो कोई दुःख नहीं होता। दुःख तो हमें उस समय होता है जब हम अच्छे परिणाम की अपनी ओर से आकांक्षा कर लेते है और परिणाम उसे विपरीत मिलता है। अतः मनुष्य को बिना आसक्ति भाव के कर्तव्य करते रहना चाहिए क्योंकि 'उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपेति लक्ष्मी' उद्योगी पुरुष को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। वह जब निराश होकर बैठ जाएगा तो उसे प्राप्ति होगी भी कैसे?

सुखी रहने का दूसरा साधन अपने को व्यस्त रखना है। अपने को किसी सृजनात्मक कार्य, लेखन, अध्ययन आदि में व्यस्त रखने से अतीत की कर्मियों और असफलताओं की ओर मनुष्य चिंतित नहीं होता। डॉ. आदित्य नाथ झा कभी-कभी अकेले ही कहकहे लगा लिया करते थे। कारण, वे अपने को व्यर्थ सोचने का अवसर नहीं देते थे। दूसरे सृजनात्मक कार्य के बाद मनुष्य को एक सुखद अनुभूति होती है क्योंकि वह उसकी अपनी कृति है जिसकी सौन्दर्यानुभूति उसे अलौकिक सुख देती है।

मनुष्य ज्यों ज्यों बड़ा होता है और कार्य क्षेत्र में पदार्पण करता है उसे कृत्यों की आलोचना, समालोचना होती है। परन्तु आलोचना के भय से मनुष्य को अपना साहस नहीं खो देना चाहिए। क्योंकि आलोचना कार्य आरम्भ करने वालों की ही होती है निष्क्रिय लोगों की नहीं। दूसरे 'निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुमाय' के अनुसार आलोचना से

आपके कार्यों में निखार आएगा क्योंकि आलोचना के भय से आप सदैव अपनी कमियों पर ध्यान देते हुए पूर्णता की ओर बढ़ेगी। प्रशंसा से मनुष्य अपने को पूर्ण ज्ञाता मान लेता है। इसलिए उसकी आगे बढ़ने और सुधार करने की गति कम हो जाती है और जीवन में गतिरोध आ जाती है। अतः विकास की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए आलोचकों का स्वागत करो और प्रशंसा से दूर बचो।

सुख का एक साधन अपने से 'स्व' को हटाना है। जीवन छोटा और संसार अपार है। अतः थोड़े से समय के लिए अपने मे 'स्व' को पैदा कर दुःखी करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जन्म के समय सभी की स्थिति एक जैसी होती है। सभी में एक जैसा हाड़ माँस और प्राण होता है फिर छोटा, बड़ा, उच्च नीच आदि स्वयं के बनाए दायरे केवल अपने को एक कृत्रिम बन्धन में बांधकर दुःख देने के अतिरिक्त और क्या है? अतः सभी के साथ अपने को मिलाकर रखिए। फिर देखिए आप अपने को कितना सुखी, सम्पन्न और स्वस्थ अनुभव करते है।

इस प्रकार दुःख केवल स्वयं से ही उत्पन्न होता है जिसके निवारण में मनुष्य स्वयं ही उत्तर दायी है। बाह्य साधन तो एक माध्यम है जिसमें मन को दुःखानुभूति से दूर रखने का प्रयत्न किया जाता है। जिस प्रकार ईश्वर आपके अन्दर है उसी प्रकार सुख भी आपके अन्दर समाविष्ट है। अन्तर है तो केवल देखने का।

4182,चौटाला रोड, वार्ड-23
संगरिया (राज.) 335063
जिला- हनुमानगढ़

ग्लोबल वार्मिंग

❐ कैलाश कुमार जाटोल

जैसा की हम सब जानते हैं कि ब्रह्माण्ड में अब तक केवल हमारे सौरमण्डल में पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है। जहाँ जीवन पाया जाता है जिसका कारण सूर्य व पृथ्वी की स्थितियाँ हैं। लेकिन अब ये भी धीरे-धीरे खतरे में पड़ती जा रही है क्योंकि मानव जंगलों का काटकर वनों का विनाश किया गया। जिसके परिणामस्वरूप ऑक्सीजन में कमी आ रही है तथा जहाँ कभी वर्षा अच्छी होती थी वहीं आज सूखा पड़ रहा है। जिसके कारण भोज्य पदार्थों में कमी होती जा रही है तथा कार्बनडाई-ऑक्साइड में वृद्धि होती जा रही है। जिसके कारण पृथ्वी पर तापमान दिनों - दिन बढ़ता जा रहा है।

क्या है कि जिसके कारण तापमान में अचानक इतनी वृद्धि होती जा रही है। क्या कहीं पृथ्वी सूर्य की स्थितियों में कोई परिवर्तन तो नहीं हो रहा है। ऐसा नहीं हुआ हैं। तो आज पृथ्वी से सूर्य की दूरी, पृथ्वी का अपने अक्ष पर झुकाव, धुर्णन गति मार्ग सभी समान है। फिर भी पृथ्वी के तापमान में इतनी वृद्धि क्यों? क्योंकि मानव द्वारा की गई आधुनिक दुनिया के विकास के लिए गलत मनमानी तरीके का परिणाम है। मानवों के अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रकृति में अवांछनीय परिवर्तन करने लगे। जिसमें किसी ईधन को जलाने से ऐसी कई गैसे निकलती है। जो सूर्य से निकलने वाले ताप को सोख कर हमारे वायुमण्डल के तापमान को बढ़ाती हैं। जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहते है। आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग हमारे सामने महत्त्वपूर्ण समस्या बनकर खड़ी है। हम ये भी कह सकते है। ये समस्या नहीं खतरा है। पृथ्वी पर जिसका प्रभाव मनुष्य, जीव-जन्तु, पेड़-पौधों तथा जैविक कारकों पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

इस समस्या का महत्त्वपूर्ण कारण आज का आधुनिक युग है। क्या हम लोगों ने आधुनिक युग व विकास की दौड़ में प्रकृति के साथ खिलवाड़ तो नहीं किया है। जिसके कारण आज हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग जैसी विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा है। मनुष्य ने अपने विकास के नाम पर ओद्योगिकरण के काम में आने वाली सुविधाओं का अत्यधिक तथा नगरीकरण के लिऐ जंगलों को काटकर जनसंख्या की बढ़ती दर से ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग कोई व्यक्ति विशेष, देश या महाद्वीप नहीं पूरे विश्व को विनाश की ओर ले जाने वाली समस्या हैं। जो विश्व को विनाश की ओर ले जा रही हैं। जिसके कारण कई देशों के तटीय भाग जलमग्न हो जाएगे या फिर होने की कगार पर खड़े है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग से वायुमण्डल में ऐसी गैसों की वृद्धि होती जा रही है जो सूर्य के ताप को सोखती है। जिसके कारण वायुमण्डल, स्थलमण्डल गर्म होते जा रहे है। जिसके कारण द्रवीय भाग व हिमाच्छदित प्रदेशों से बर्फ पिघलकर समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। और भविष्य में ओर जल स्तर बढ़ जाएगा।

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से केवल समुद्र के जल स्तर में वृद्धि नहीं अपितु आज के युग में फसलों की कम पैदावार भी इसी का परिणाम है। मिट्टी के पोषण तत्व व उर्वरता में भी कमी आती जा रहीं है। तापमान में वृद्धि से मिट्टी में नमी की मात्रा वाष्पीकरण होता जा रहा है। जिसके कारण उत्पादन बढ़ाने की चाहत में लोगों ने इन फसलों में कृत्रिम सिंचाई, रसायनिक खाद व कीटनाशक दवाईयों का उपयोग अधिक करने से फसले विषाक्त होती जा रही है। जिसका मानव सेवन करने से अनेक बीमारियों से ग्रस्त होते जा रहे है। इन समस्याओं के अलावा कई समस्या है जिसकी जननी ग्लोबल वार्मिंग है। जिसके कारण बाढ़, सूखा, अकाल व महामारी की समस्या बढ़ती जा रही है।

अतः ग्लोबल वार्मिंग के प्रति लोगों को जागरूक करना अनिवार्य है कि ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं को बढ़ावा देने वाले कारकों का न्यूनतम उपयोग करना चाहिए। हम लोगों ने ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या का जल्द से जल्द कठोर कदम नहीं उठाए तो मानव को पानी में रहना सीख लेना चाहिए क्योंकि वो दिन दूर नहीं जब हमारी दुनिया का आधे से अधिक धरातल पानी के अन्दर होगा और मानव के रहने के लिए भूमि कम हो जाएगी।

प्रधानाचार्य
राजकीय आर्दश उच्च माध्यमिक
विद्यालय, पारलू जिला-बाड़मेर(राज.)
मो. 9413291619

सेवाकाल का स्वर्णिम युग

❐ शिव दयाल शर्मा

मैं ने 03 अगस्त 2015 को राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय लापुन्दड़ा पं. स. गिडा जिला बाड़मेर में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य ग्रहण किया। मैंने पूरे सेवा काल में मेरे गृह जिले अलवर में ही अपनी सेवाएँ दी थी। प्रधानाचार्य पद पर पदोन्नति होने पर जब पदस्थापन बाड़मेर जिले में हुआ तब बड़ी मानसिक वेदना हुई कि सेवा काल के अन्तिम पड़ाव में इतनी दूर किस प्रकार से व्यवस्थित रूप में कार्य सम्पादित होगा। लेकिन मेरे एक स्टाफ सदस्य श्री मनोहरलाल शर्मा जिनकी प्रथम नियुक्ति रा. उ. मा. वि. कवास (बाड़मेर) में हुई थी उन्होंने मुझे कार्यग्रहण के लिए उत्प्रेरित किया और उन्होंने मार्गदर्शित किया कि बाड़मेर के लोग सहृदय एवं भोले हैं। उन्होंने बाड़मेर से फोन नं. प्राप्त कर विद्यालय में पदस्थापित अध्यापक श्री रामकुमार यादव से मेरी वार्ता कराई। श्री राम कुमार यादव ने विस्तारपूर्वक मुझे अवगत कराके कार्यग्रहण करने के लिए कहा।

जब विद्यालय के स्टाफ सदस्यों को मेरे कार्यग्रहण करने की सूचना मिली तो उन्होंने विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री लोकेश कुमार मंगल को मुझे लेने बालोतरा भेज दिया। बस स्टेण्ड बालोत्तरा से जब बस लापुन्दड़ा के लिए चली तो मरुभूमि के मिट्टी के धोरों को देखकर में बड़ा अविभूत हुआ। पचपदरा नगर से निकलते ही नमक की खान और चारों तरफ बड़े-बड़े धोरे थे जो मैंने पहिले कभी नही देखे थे।

रा. आ.उ.मा. वि. लापुन्दड़ा पहुँचने पर सभी अध्यापकों ने मेरा गर्म जोशी से स्वागत किया। छात्राओं द्वारा रोली, मोली एवं मंगलगीत से स्वागत कराया। विद्यालय प्रांगण में पादप रोप कर कार्यग्रहण करवाया। विद्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों से परिचय हुआ। स्टाफ सदस्यों की कार्यशैली एवं व्यवहार से प्रतीत हुआ जैसे विद्यालय नहीं घर का वातावरण हो। छात्र/छात्राओं का शैक्षिक स्तर अच्छा था। विषयाध्यापक साप्ताहिक परीक्षा लेते थे और शैक्षिक स्तर जिनका नहीं सुधरता उनके अभिभावकों को बुलाया जाता।

कुछ दिनों बाद स्वतन्त्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व विद्यालय प्रांगण में मनाया गया शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया और समस्त गणमान्य नागरिकों ने मेरा भी स्वागत किया मैंने विद्यालय की शैक्षिक, सहशैक्षिक व भौतिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समस्त ग्रामवासियों ने विद्यालय के भौतिक संसाधन जुटाने में पूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान करने का वचन दिया।

उसी दिन सरपंच श्री बांका राम ने चारदीवारी निर्माण पूर्व सरपंच श्री करणाराम ने फर्नीचर के लिए एक लाख रुपये की राशि पूर्व पंचायत समिति सदस्य श्री धनसिंह जाने मिड-डे मिल में खाना खाने हेतु एक लाख पचास हजार का टीन-शैड, श्री देवी सिंह जी ग्राम सहकारी समिति के अध्यक्ष द्वारा जल मन्दिर का निर्माण, श्री शंकरदान जी द्वारा पीपल के वृक्ष हेतु चबूतरे का निर्माण मास्टर राजूराम लेगा द्वारा मंच के चबूतरे के निर्माण की घोषणा की गई।

जब मैंने समस्त ग्रामवासियों को इस प्रकार का आर्थिक सहयोग एवं समर्पण भाव देखा तो मैं बड़ा आश्चर्य चकित था क्योंकि मेरे सेवाकाल में इस प्रकार घोषणाएँ मैंने कभी नहीं सुनी। मैंने विद्यालय के पिछले बोर्ड के परीक्षा परिणामों की जानकारी ली विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत था और छात्र ताजाराम के गणित में 100 अंक थे। इसका श्रेय गणित विषय के वरिष्ठ अध्यापक श्री सुनील सिंह को था जो रविवार को भी कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं को अध्यापन कराते थे।

विद्यालय के समस्त अध्यापक पूर्ण निष्ठा से अध्यापन कराते थे और शाला समय पश्चात विद्यालय के अन्य कार्य शाला दर्पण की प्रविष्ठि करना, गृह कार्य की जाँच करना, रोकड़ पंजिकाओं की प्रविष्ठि एवं अन्य समस्त कार्य विद्यालय समय के बाद सम्पादित करते थे। सायंकालीन वेला में स्टाफ एवं विद्यालय में छात्र वॉलीबाल खेलते थे। रविवार को भी विषयाध्यापक बोर्ड की कक्षाओं का अध्यापन कराते थे। सत्र 2015-16 में विद्यालय में कक्षा 11 ही चल रही थी लेकिन कक्षा दशम् का परीक्षा परिणाम प्रतिशत रहा। विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के निर्माण में श्री रामकुमार यादव, श्री सुनील सिंह, श्री लोकेश कुमार मंगल, श्री नत्थूराम, श्री धन्नाराम एवं श्री भीमसिंह का प्रमुख योगदान था।

आगामी शैक्षिक सत्र शुरू हुआ 2016-17 में नामांकन में आशातीत वृद्धि हुई नामांकन 336 से 550 तक हो गया। विद्यालय में सभी शैक्षिक सहशैक्षिक एवं भौतिक गतिविधियों का भली भाँति सम्पादन किया गया। इस वर्ष कक्षा 12 का प्रथम बेच था। अधिकांशत छात्र/छात्राएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए जबकि विद्यालय में एक भी व्याख्याता नहीं था। कई छात्र/छात्राओं का BSTC. में चयन हुआ। कई छात्राओं को गार्गी पुरस्कार मिला। विद्यालय के करीब दस छात्र/छात्राओं को NMMS. की छात्रवृत्ति भी मिली।

निदेशक महोदय द्वारा विद्यालय को बधाई सन्देश भी प्रेषित किया गया। जब कक्षा 12 का आशीर्वाद समारोह विद्यालय में आयोजित हो रहा था। उस समय कक्षा 12 की छात्राएँ जोर-जोर से रो रही थी। जब मैंने जानकारी प्राप्त की तो छात्राओं ने बताया कि इस प्रकार का शैक्षिक परिवेश एवं पितृवृत स्नेह करने वाले शिक्षक नहीं मिलेंगे। उस समय मुझे गुरूत्ता के महत्त्व का वास्तविक ज्ञान हुआ और उसी समय द्रोर्णाचार्य एवं एकलव्य का संस्मरण याद आया।

सत्र 2017-18 में आगामी सत्र शुरू हुआ। छात्र संख्या में आशातीत वृद्धि हुई नामांकन 620 तक हो गया। इस स्टाफिग पैर्टन में लेवल-2 के अध्यापक आ गए। नए व्याख्याताओं ने भी कार्य ग्रहण किया। विद्यालय की समस्त गतिविधियाँ भली भाँति सम्पादित हो रही थी। विद्यालय में नये पादप लगाए गए, दो नये कमरो का निर्माण एवं श्री जोगा राम रहेला द्वारा सरस्वती मन्दिर का निर्माण भी करवाया गया। इस सत्र में एक साथ विद्यालय की 9 छात्राओं को गार्गी पुरस्कार मिला जो न केवल ब्लाक स्तर पर अपितु जिले स्तर पर प्रथम स्थान छात्र संख्या के अनुपात में था।

इस वर्ष NMMS. की छात्रवृत्तियाँ भी विद्यालय के छात्र/छात्राओं को मिली थी।

आगामी सत्र 2018-19 के शुरू होने से पहिले ही विद्यालय के लेवल-2 के समस्त अध्यापक/अध्यापिका का स्थानान्तरण उनके गृह जिलों में हो गया और वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता पद पर समस्त वरिष्ठ अध्यापकों की पदोन्नति हो गई। केवल वरिष्ठ अध्यापकों में से सुनील सिहं जी रहे। लेकिन धीरे-धीरे स्टाफ सदस्यों ने कार्य ग्रहण किया।

विद्यालय की छवि आस-पास के क्षेत्र में इतनी बढ़ गई कि अन्य ग्राम पंचायतों से छात्र/छात्राएँ प्रवेश के लिए आने लगे नामांकन करीब 700 के आस-पास हो गया। नामांकन की तुलना में विद्यालय में स्टाफ बहुत ही कम था। दूर-दराज के जो छात्र/छात्राएँ प्रवेश के लिए आ रहे थे उन्हें समझाकर वापिस भेजा और उन्हें मार्गदर्शित किया कि वे अपने ग्राम पंचायत क्षेत्र में ही प्रवेश लें। 15 अगस्त 2018 को राष्ट्रीय पर्व के बाद सभी ग्रामीण एकत्रित हुए और इन्होंने विद्यालय से स्थानान्तरित शिक्षकों की विदाई के कार्यक्रम की पेशकश की। दिनांक 08.09.2018 को विदाई समारोह में ग्राम पंचायत के गणमान्य नागरिक प्रधान मंडल अध्यक्ष, आस पास के पंचायत प्रांरभिक शिक्षा अधिकारी ब्लाक प्रांरभिक शिक्षा अधिकारी, प्रधानाचार्य उपस्थित हुए विद्यालय में करीब एक हजार व्यक्तियों के भोज का आयोजन किया इसमें श्री धनसिंह पूर्व पंचायत समिति सदस्य श्री आवडकरण अध्यापक का प्रमुख योगदान था।

विदाई लेने वाले शिक्षकों को उपहार स्वरूप सूटकेश, साफा, शाल भेंट किए एवं सराहनीय कार्यों के सम्पादन के लिए प्रशस्ति पत्र भेंट किए। भोजन के पश्चात विदाई लेने वाले कार्मिको को विद्यालय के छात्र/छात्राएँ, स्टाफ सदस्य, समस्त ग्रामीण खुले वाहन में बैठाकर बस स्टैण्ड तक विदा करने गए। इस विदाई वेला में विदाई लेने वाले शिक्षकों एवं स्टाफ सदस्यों के अश्रुधारा बह रही थी। आज यह विद्यालय 5 स्टार रैंकिंग का बाड़मेर जिले का अग्रणी विद्यालय है। मेरी सेवा-निवृति 30.04.2019 को है। मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि यह विद्यालय इसी तरह उत्तरोत्तर शैक्षिक, सहशैक्षिक, भौतिक क्षेत्र में प्रगति करता रहे।

प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि. लापुन्दडा,
तह. गिडा, जिला- बाड़मेर
मो: 9460470045

अपना विद्यालय

कैसे लगाएँ शाला की शोभा में चार चाँद

❒ ओमदत्त जोशी

किसी स्थान, वस्तु, भवन आदि से व्यक्ति का निजता का सम्बन्ध जुड़ जाता है तो वह उसे स्वयं का अपना, मेरा, अपनी आदि सर्वनामों से सम्बोधित करने लगता है। उसमें स्वतः ही अपनत्व की भावना उत्पन्न हो जाती है। वह उसे श्रेष्ठ रखता है। दूसरों से अच्छा अर्थात् सर्वोत्तम बनाने का हर सम्भव-असम्भव प्रयास करता है क्योकि वह स्थान, वस्तु, व्यक्ति निजता से जुड़ गया है।

यहाँ मैं विद्यालय की बात कर रहा हूँ, चाहे वह प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक या फिर उच्च माध्यमिक स्तर का हो। सभी प्रधानाध्यापक अथवा प्रधानाचार्य, जो अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण लगन, निष्ठा, आस्था, रखते हैं अथवा समर्पण की भावना से विद्यालय में सेवारत हैं। वे रचनात्मक, सृजनात्मक एवं संवेदनशील है। उन सब में यह हार्दिक कामना रहती है कि मेरे विद्यालय की प्रतिष्ठा की महक कस्तूरी की तरह, आसपास के नगरों, शहरों, गाँवों में महके। उसका प्रचार-प्रसार हो। जहाँ चाह होती है वहाँ राह भी मिल जाती है इसके लिए चाहिए दृढ़ इच्छा शक्ति। कहा भी है कि- मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

तो आइए हम उन बिन्दुओं पर बात करते हैं जो विद्यालय की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाए। प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर हो आपके विद्यालय की वाह-वाही के चर्चे, तो इन पर गम्भीरता से विचारिए।

भवन व्यवस्था- विद्यालय के लिए भवन की उचित व्यवस्था हो। भवन जो भी बना हुआ है, उसी का हमें अपनी सूझ-बूझ से उपयोग करना है। यह भी एक कला है। यदि विधायक, सांसद, भामाशाह की ओर से नवीन कक्ष का निर्माण होने जा रहा है तो विद्यालय प्रधान अपनी विशेष कुशलता का परिचय दे सकता है। वह किस स्थान पर बने, जिसका उपयोग उत्तम ढंग से हो सके। उसमें क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सके।

भवन के रखरखाव के लिए राज्य सरकार, जन सहयोग हेतु सतत् सम्पर्क रखना होगा। प्रतिवर्ष भवन का रंग-रोगन हो ऐसी व्यवस्था के प्रयास करने चाहिए।

सहयोगियों के प्रति व्यवहार- भवन सुन्दर है, शिक्षण के उपकरण भी है लेकिन उनका समुचित उपयोग नहीं हो पाता तो सब निरर्थक है। अतः उनके उपयोग हेतु अध्यापक बंधुओं को प्रेरित करना होगा प्रेमपूर्वक। शिक्षकों का छात्रों, अपने साथियों, प्रधानाचार्य, अभिभावकों के प्रति मधुर सम्बन्ध होने चाहिए। छात्रों में शिक्षकों के प्रति किसी प्रकार का भय, आतंक न हो इससे शिक्षण सुगम होगा। प्रधानाचार्य, विद्यालय की धुरी है। अतः उसका सभी के प्रति उत्तम व्यवहार, सहानुभूति, संवेदना होनी चाहिए। प्रधानाचार्य को प्रत्येक छात्र, शिक्षक, सहायक कर्मचारी की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनना चाहिए तथा उनका उचित उदारतापूर्वक समाधान मिल बैठकर करना हितकर होगा। कोई भी समस्या ज्यादा लम्बी अवधि तक नहीं चले। हो सके तो प्रत्येक माह के अंतिम दिन को सभी कर्मचारियों के साथ प्रधानाचार्य को बैठकर रखनी चाहिए जिसमें समस्याओं का निराकरण एवं विद्यालय विकास प्रगति के लिए अथवा अन्य सुझावों पर विचार हो।

शिक्षण व्यवस्था- जिस विद्यालय की

शिक्षण व्यवस्था सुचारू रूप से चलती है उस विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों को जन समुदाय आदर की दृष्टि से देखता हैं। शिक्षण कार्य में तनिक भी विघ्न, व्यवधान मेधावी छात्र, जागरूक अभिभावक सहन नहीं करते। शिक्षक के अभाव में अथवा अवकाश के कारण किसी भी कक्षा का कोई भी कालाँश रिक्त नहीं रहे। शाला प्रधान को ऐसी व्यवस्था प्रार्थना सभा के पूर्व ही कर लेनी चाहिए। इससे समस्त कक्षाएँ व्यस्त रहेगी, अनुशासन हीनता नहीं पनपेगी। अवसर आने पर स्वयं शाला प्रधान को भी कालाँश लेना चाहिए। यदि किसी विषय से सम्बन्धित शिक्षक नहीं है तो प्रधानाचार्य का दायित्व है कि वह शीघ्रातिशीघ्र उसकी व्यवस्था करें। यह शाला की कार्य कुशलता का परिचायक है। शिक्षण सम्बन्धी समस्त चार्ट्स, मॉडल्स, मानचित्र आदि सहायक सामग्री सत्र प्रारम्भ होते ही विद्यालय में उपलब्ध इस हेतु प्रधानाचार्य चाहे तो समस्त विषयाध्यापकों से, शिक्षण हेतु सहायक सामग्री की सूची बनवाकर, उसी के अनुसार सामग्री क्रय की जाए तो उत्तम होगा।

परीक्षा परिणाम– शिक्षण की परख होती है उस शाला के बोर्ड के परीक्षा परिणाम पर। जो कि गुणात्मक एवं संख्यात्मक रूप से उत्तम हो। आज के युग में अभिभावक अत्यन्त जागरूक हो गए हैं। यदि आपके विद्यालय का परीक्षा परिणाम न्यून रहा तो अभिभावकों में आक्रोश भड़क उठेगा।

परीक्षा परिणाम न्यून रहने के अनेक कारण हो सकते हैं–विषय अध्यापकों का अभाव, अध्यापक के लम्बे अवकाश पर जाना, भवन का अभाव, शिक्षण सामग्री का न होना आदि। लेकिन ये सब बातें गौण हो जाती है। यद्यपि ये तर्क वास्तविक हैं लेकिन ये ऐसे ही होंगे जैसे नक्कारखाने में तूती की आवाज। अतः इस हेतु जितने भी प्रयास किए जाए उत्तम होगा।

कार्य की अधिकता से नहीं, आदमी उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।

इसके लिए अतिरिक्त कक्षाएँ, रात्रिकालीन कक्षाओं की व्यवस्था भी शाला के परीक्षा परिणाम सोने में सुहागा के समान होगा। अभिभावकों की भागीदारी भी होनी चाहिए ताकि उन्हें अहसास हो कि शाला परिवार हमारे बालकों के लिए शिक्षण हेतु कितने प्रयत्नशील है।

शिक्षा के साथ संस्कार– शिक्षण के साथ-साथ संस्कारों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। संस्कार के बिना शिक्षा अधूरी है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बालकों में जीवन मूल्य, ईमानदारी, उत्तम व्यवहार, परस्पर सहयोग, सहकार, सच्चरित्रता, सेवाभाव, देशभक्ति आदि के प्रति बालक जागरूकता है। आपकी शाला के छात्र अन्य छात्रों से कैसा व्यवहार करते है? परस्पर वार्तालाप करते समय कैसी भाषा का प्रयोग करते हैं। अच्छे संस्कार हेतु प्रार्थना सभा में ऐसे प्रवचनों, कहानियों, दोहों, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों पर चर्चा की जा सकती हैं। समय-समय पर सन्तों महात्माओं के प्रवचनों के आयोजन भी रखे जा सकते है।

छात्रों का सर्वांगीण विकास– शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि बालक का सर्वांगीण विकास हो। अर्थात बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, प्राणिक, सामाजिक आदि। इसके लिए विद्यालय को ऐसे अवसर छात्रों को प्रदान करवान चाहिए, जिससे उनमें छिपी हुई प्रतिमा उजागर हो सके। न जाने किस छात्र में वैज्ञानिक, साहित्यकार, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्त्ता के नेतृत्व के गुण विद्यमान है लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण विकसित नहीं हो पाती। ऐसे बालकों को उचित अवसर प्रदान कराने का हमारा दायित्व है। उन्हें ऐसा वातावरण प्रदान ताकि अपनी प्रतिभा को उजागर कर सके।

उपर्युक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य अनेक बिन्दु भी हो सकते है। हो सकता है मेरी सामान्य बुद्धि से परे भी रह गए हो। आप अपने गम्भीर चिन्तन, मनन, मंथन से उनको ध्यान में रखते हुए प्रभावी ढंग से उनका उपयोग, प्रयोग कर सकते हैं मुख्य उद्देश्य यही होना चाहिए कि शाला की प्रतिष्ठा कैसे बढ़ायी जाए।

पूर्व व्याख्याता
साहित्य सदन, वर्धमान कॉलेज के पास
ब्यावर-305901
मो: 9309353637

उतना बोलिए जितना आवश्यक हो

अपने द्वारा बोले गए प्रत्येक बुरे शब्द के लिए मनुष्य को फैसले के दिन सफाई देनी होगी। बुरे शब्दों से हम मौन के द्वारा ही बच सकते हैं।

स्मरण रहे सहज मौन ही हमारे ज्ञान की कसौटी है। जानने वाला बोलता नहीं और बोलने वाला जानता नहीं। इस कहावत के अनुसार जब हम सूक्ष्म रहस्यों को जान लेते हैं, तो हमारी वाणी बंद हो जाती है। ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका में सहज मौन स्वयंमेव पैदा हो जाता है।

स्थिर जल बड़ा गहरा होता है। उसी तरह मौन मनुष्य के ज्ञान की गंभीरता का चिह्न है। वाचालता पांडित्य की कसौटी नहीं है, वरन् गहन गंभीर मौन ही मनुष्य के पंडित और ज्ञानी होने का प्रमाण है। मौन ही मनुष्य की विपत्ति का सच्चा साथी है, जो अनेक कठिनाइयों से उसे बचा लेता है।

आत्मा की वाणी सुनने के लिए, जीवन और जगत के रहस्यों को जानने के लिए, लड़ाई-झगड़े, वाद-विवादों को नष्ट करने के लिए, वाचिक-पाप से बचने के लिए, ज्ञान की साधना के लिए, विपत्तियों के दिनों को गुजारने के लिए, वाणी के तप के लिए तथा अन्यान्य हितकर परिणामों के लिए हमें मौन का अवलंबन लेना चाहिए। दैनिक जीवन में मित-भाषण और हित-भाषण की आदत डालकर हम लौकिक और आध्यात्मिक प्रगति का द्वार प्रशस्त कर सकते हैं।

समाज निर्माण

बालिका शिक्षा की भूमिका

❒ गायत्री शर्मा

देश एवं समाज के विकास में बालिका शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जब तक बालिका शिक्षित नहीं होगी तब तक समाज एवं देश के संपूर्ण विकास की परिकल्पना पूरी नहीं हो सकती हैं। यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो समाज के उत्थान के लिए बालिका शिक्षा अति आवश्यक है। बालिका शिक्षा के बिना एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की कल्पना करना भी मुश्किल है। एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज के निर्माण में बालिका शिक्षा का महत्त्वपूर्ण आधार होता है। बालिका शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं–''एक बालक को शिक्षित करने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को शिक्षित करने से एक परिवार शिक्षित होता है।'' यदि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दिए गए इस विचार की गहराई तक जाएँ तो यह सौ प्रतिशत सत्य है क्योंकि एक बालिका ही आगे चलकर एक सफल माँ और शिक्षिका बनती है और वही सभ्य एवं संस्कारित बच्चे तैयार कर सकती है। अतः एक योग्य एवं सुशिक्षित महिला ही भविष्य में स्वस्थ एवं शिक्षित समाज की संरचना में भागीदार हो सकती है। किसी भी समाज की उन्नति बालिका शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है। समाज के विकास में बालिका शिक्षा का विशेष महत्त्व है। बालिकाएँ अपने माता–पिता एवं शिक्षकों से प्राप्त संस्कारों से दूसरे घर को संस्कारित करती हैं। देश के विकास में बालिका शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है, इस बात को नकारा नहीं जा सकता। पिछले कुछ दशकों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है, जिसका प्रभाव समाज एवं देश में दिखाई दे रहा है।

आज आवश्यकता है सरकार एवं समाज द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के साथ ही नए–नए प्रयासों द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिए जाने की। बालिकाओं के शिक्षित होने से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा। बालिकाओं के अधिकाधिक शिक्षित होने से न केवल जनसंख्या

के तीव्र विस्तार को कम किया जा सकता है बल्कि गरीबी की समस्या, स्वास्थ्य से संबंधित समस्या, बाल–विवाह एवं दहेज–प्रथा जैसी दानवी कुरीतियों को तथा अन्य कुप्रथाओं एवं बुराइयों को भी दूर किया जा सकता है।

यह तो हम सब भली भाँति जानते ही हैं कि यदि बालिकाओं को शिक्षित नहीं किया गया तो सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। इसी उद्देश्य से केन्द्र एवं राज्य सरकारें बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अनेक प्रोत्साहनकारी योजनाएँ संचालित कर रही है। यथा– बालिकाओं का शिक्षण शुल्क माफ करना, निःशुल्क पाठ्य–पुस्तकें, प्रतिभाशाली बालिकाओं को नई प्रौद्योगिकी से जोड़ने हेतु टेबलेट का निःशुल्क वितरण, राज्य सरकार ने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए लैपटॉप एवं स्कूटी योजना, नवीं कक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं को साइकिल का वितरण आदि। इसी प्रकार राज्य सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बालिका फाउण्डेशन की स्थापना की गई है। राज्य सरकार द्वारा इस प्रकार की गतिविधियों से बालिका शिक्षा को तीव्रता के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है।

यह बालिका शिक्षा का ही प्रभाव है कि भारतीय नारियाँ जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़

रही हैं। चिकित्सा, मनोविज्ञान, भौतिकी, कानून, सेना, खेल, प्रबंधन, शिक्षा, राजनीति आदि क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों से पीछे नहीं हैं। शिक्षा के द्वारा ही स्त्रियों की सामाजिक चेतना जाग्रत हुई है। वे समाज की दुर्दशा के प्रति सजग एवं सावधान है, साथ ही समाज सुधार के कार्यक्रमों में व्यस्त है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, साहित्यकार महादेवी वर्मा, मन्नू भण्डारी आदि ऐसी नारियाँ हैं जिन पर भारतवर्ष को सदैव गर्व रहेगा। नारी ने अपने गौरवपूर्ण अतीत को ध्यान में रखकर त्याग, समर्पण, सरलता आदि गुणों को नहीं भूला है। नारी के चिरकल्याणमय रूप को लक्ष्य कर कवि जयशंकर प्रसाद नारी का अत्यन्त सजीव चित्रण करते हैं–

'नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
निरवाद रजत–नग–पग–तल में।
पीयूष स्रोत–सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।।'

वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि प्रौढ़ शिक्षा द्वारा महिलाओं को अधिक से अधिक शिक्षित किया जाए। साक्षरता अभियान के लिए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ जन भागीदारी के द्वारा भी बालिका शिक्षा को महत्त्व दिया जाए एवं पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न होकर सम्पूर्ण ज्ञान से जोड़ा जाए। बालिकाओं के साथ–साथ अशिक्षित महिलाओं को भी शिक्षित किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में जब हम शिक्षा को सबके लिए आवश्यक मानते हैं तो उपेक्षित वर्ग की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता है समाज में बालिका चेतना जागृत करने की, क्योंकि शिक्षित माँ ही बच्चों का अच्छी तरह पालन–पोषण कर उन्हें शिक्षित करके अच्छा नागरिक बना सकती है। इस प्रकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं एवं राज्य सरकार का महत्त्वपूर्ण कार्य है। अन्त में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि एक बालक को शिक्षित कर एक परिवार को समृद्ध कर रहे हैं जबकि एक बालिका को शिक्षित कर देश एवं समाज को समृद्ध कर रहे हैं।

शिक्षिका
5/279, एस.एफ.एस.,
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर–302020
मो. 8829075513

शिक्षक का दायित्व-बोध

❒ वृद्धि चन्द गोठवाल

एक शिक्षक बोलता है, यह कैसा समाज? लोग अन्य विभाग के कर्मचारियों को झुक-झुककर नमस्कार करते हैं, पर शिक्षक का उसकी निगाह में कोई मूल्य नहीं?

समाज के व्यक्ति की सुनते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कहते है शिक्षा तो धूल धाणी हो गई। बालकों में ज्ञान वृद्धि और नैतिक आचरण जैसी कोई प्रगति नहीं। पढ़ाई का कोई स्तर नहीं, शिक्षक तो हराम की तनख्वाह खाते हैं। जब देखो आपस में गपशप लगाते रहते हैं, कौन समझाए, हर वर्ष बोर्ड के बालकों का परीक्षा परिणाम निर्धारित नापतौल का भी नहीं रहता। भगवान ही मालिक है, हमारे बच्चों का।

आप क्या कहना चाहेंगे इन दोनों बातों पर? मैं समझ सकता हूँ सद्गुणी सच्ची सेवा और उपलब्धियों के बिना तो इच्छा पूर्ति नहीं होती। जहाँ सम्मान की बात आती है तो कोई रास्ते चलते नहीं मिलता एवं राह माँगने से भी कोई नहीं देता बल्कि राह तो कार्यों की श्रेष्ठता का फल है। आज के शिक्षकों पर दायित्व निर्वाह की सन्देहः भरी बातें आए दिन उभरती हैं।

विद्यालयों में पढ़ाई नहीं होती है। यह घटिया स्तर की अशोभनीय सोच ही है। उच्च कोटी के न्यायाधीश, उद्योगपति, समाज सेवक, प्रशासनिक अधिकारी, बड़े-बड़े शिक्षाविद्, कुशल कर्मचारी, राष्ट्राध्यक्ष और राजनेताओं का निर्माण कहाँ और कौन कर रहा है?

विश्व में हमारा भारत उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता है। आज भी विद्वान एवं महापुरुष लोग वशिष्ट मुनि संदीपन ऋषि, चाणक्य, गुरु रामदास और स्वामी रामकृष्ण परमहंस का उदाहरण देकर शिक्षक की महानता एवं गुणगान प्रकट करते हैं। क्योंकि इन्होंने श्री रामचन्द्र भगवान, श्री कृष्ण भगवान, शिवाजी, विवेकानन्द जैसी महान विभूतियों का निर्माण किया है। निःसन्देह शिक्षक पूजनीय है। कोई गुरु पुकारता है, तो कोई शिक्षक, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक पुकारता अथवा टीचर। शिक्षक का कार्य ज्ञान देना और राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है, उसे राष्ट्र निर्माता कहा जाता है।

चिन्तनीय एवं विचारणीय प्रश्न यही है कि समाज में शिक्षक के प्रति सम्मानजनक एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका के स्थान पर शिक्षक की

महानता क्यों घट रही है? इसकी थोड़ी बहुत जानकारी समाचार पत्रों में आती है, जैसे- कर्त्तव्य के प्रति उदासीनता, बालकों को असहनीय दण्ड देना, बालक-बालिकाओं के साथ नाजायज व्यवहार करना, निम्न स्तर का परीक्षा परिणाम, नशीली वस्तुओं का सेवन, अध्यापन कार्य की कमजोरी, अनुशासनहीनता आदि। एक शिक्षक चरित्रवान एवं कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं हो तो छात्रों के सर्वांगीण विकास की आशा किससे की जाए? हमारी संस्कृति में तो शिक्षक का दर्जा माता-पिता तो क्या ईश्वर से भी बढ़कर माना जाता है।

समाज द्वारा कई मरतबा शिक्षा नीति पर कटाक्ष करते हुए शिक्षक की कार्यशैली का बचाव किया जाता है। लेकिन एक सच्चा शिक्षक बेकार शिक्षा नीति हो या जटिल, अपने दायित्व का निर्वाह ईमानदारीपूर्वक करेगा तो ही वह मान-सम्मान का अधिकारी होता है। एक बार सन् 1986 ई. में मेरे एक सहयोगी शिक्षक ने एक छात्र की शिकायत करते हुए कहा कि सर- यह बालक आठवीं कक्षा का है, पर इसे पूरी तरह पुस्तक पढ़ना भी नहीं आता। मुझे भी अचम्भा हुआ। मैंने शिक्षक भाई से पूछा आप इस विद्यालय में कितने वर्षों से सेवा दे रहे हैं? उनका प्रत्युत्तर था, सर-चौदह वर्ष हो गए। तब मैंने कहा यह बालक आठ वर्ष से आपसे ही शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इसको आठवी कक्षा तक लाने का श्रेय किसका है? शिक्षक महोदय निरुत्तर हो गए। शिक्षक को दायित्व बोध की खैर-खबर नहीं रहे? यही कमजोरी तो महानता पर प्रश्न खड़ा करती है। तो कहा जा सकता है कि जैसी औपचारिकता शिक्षक दिखा रहे हैं, उसी अनुरूप समाज भी सम्मान दे रहा है।

शिक्षक का जीवन बहुत सुखदायी है। छात्रों को ज्ञान देना पवित्र कार्य है। शिक्षक की दायित्व भरी सेवा मानवता का मार्ग है। बहुत सरल एवं सीधी बात है कि शिक्षक को समाज का प्यार एवं सम्मान चाहिए तो उसे शिक्षा की समस्याएँ हल करने एवं कर्त्तव्य बोध की तरह ध्यान देना चाहिए। रास्ते चलते कौन सम्मान देगा? दायित्व के प्रति सच्ची लगन हो तो गगन दूर नहीं लगता, लेकिन इतनी लगन कहाँ है? शिक्षक एवं शिक्षार्थी में निकटता का सम्बन्ध बनाने के लिए छात्र का नाम पुकार कर बात करें। किन्तु यदि शिक्षक अपनी कक्षा या विषय के छात्रों के नाम भी नहीं जानता तो चिंता की बात है। दुःख भरी बात तो यह देखी जाती है कि अनेक शिक्षक वह सब कुछ कर रहे हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए और अधिकांशतः ऐसा नहीं कर रहे जो उनसे अपेक्षित है। फिर सामाजिक महत्त्व कैसे बढ़े? धैर्य, शान्ति, कुशलता और संन्तोष के साथ शैक्षिक गतिविधि के निर्वाह में न्याय करना चाहिए। मैंने तो यह पाया है कि आज भले ही डिग्रीधारी शिक्षक तो सुलभ हैं परन्तु उनमें दायित्व बोध भी वैसा ही अपेक्षित है।

वे शिक्षक धन्य हैं जिन्होंने शिक्षा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर समय-समय पर राष्ट्रीय कार्यों को एवं सामाजिक मूल्यों को महत्त्व दिया। ऐसे प्रतिभा के धनी शिक्षकों की समाज एवं प्रशासन को तलाश रहती है। मेरी तो मान्यता है कि शिक्षक सेवा धन्धा नहीं, एक मानवीय धर्म है। जिसको धर्म-कर्म का ख्याल होता है, उसके लिए सफलताएँ एवं सम्मान की व्यवस्था प्रकृति पहले ही कर देती है। क्या हम शिक्षक इस बात को समझ सकते हैं? दायित्व बोध शिक्षक के लिए परमावश्यक है। कहा भी जाता है कि शिक्षक महान तो राष्ट्र महान।

व्याख्याता (से.नि.)
पो. कपासन, चित्तौड़गढ़-312202
मो: 9414372090

- ''जीवन साइकिल की सवारी जैसा। अपना संतुलन बनाइए और चलते रहिए।'' **–आइंस्टीन।**
- ''जीवन में कोई चीज इतनी खतरनाक और हानिकारक नहीं होती, जितना डावांडोल रहना।'' **–सुभाषचन्द्र बोस**
- ''मैं कभी यह नहीं देखता कि क्या हो चुका है, बल्कि यह देखता हूँ कि क्या होना शेष है।'' **– गौत्तम बुद्ध**
- ''मैं अतीत की घोषणा करता हूँ, वर्तमान का अनुसंधान करता हूँ और भविष्य को बाँचता हूँ।'' **–हिप्पोक्रेट्स**
- ''जब मैं जान जाता हूँ कि मैं क्या हूँ, तब मैं जान जाता हूँ कि मैं क्या हो सकता हूँ।'' **–लाओत्से**

चिन्तन

जीवन : चलने का नाम

❐ किशन गिरि गोस्वामी

जीवन अनगिनत अन्धेरी पगडंडियों को रौंदता हुआ आगे बढ़ता रहता है– कभी कारवाँ की तलाश में... कभी मंजिल की तलाश में। इन्सान किसी से हार नहीं मानता, क्योंकि उसके पास एक हथियार है–चलते रहने का। इसी हथियार के सहारे वह अतीत को पीठ पर लादे, भविष्य को बाँहों में उठाए, अनादि काल से अपनी उलझनों से लड़ रहा है और तय कर रहा है– कल से कल तक का सफर। भले ही पसीने और आँसुओं से लथपथ, जीवन का पथ अग्निपथ में तब्दील हो जाए, लेकिन इन्सान नहीं रुकता, वह चलता रहता है यह जानते हुए कि जीवन पथ पर ठोकरें अधिक है।

यह सही है कि जीतने के लिए दौड़ना जरूरी है लेकिन खरगोश और कछुए की पुरानी कहानी के अनुसार–कई बार दौड़ने से भी ज्यादा जरूरी हो जाता है–अनवरत चलते रहना, क्योंकि दौड़ने वाला थक कर अपने लक्ष्य से भ्रमित हो जाता है, लेकिन विश्वास की लाठी थामे चलते रहने वाला अन्ततः मंजिल तक पहुँच ही जाता है।

जीवन किसी को एक जगह ठहर जाने की अनुमति नहीं देता। जीवन की सार्थकता के लिए गति अनिवार्य है। हर सदी का दर्शन हमसे

यही कहता रहा है कि चलना ही जिंदगी है। मनोवैज्ञानिक जोसफ के अनुसार ''अज्ञात भविष्य का भय, आत्म निर्णयों का भय, अन्त का भय और दूसरों की टिप्पणियों का भय इन्सान को पहल करने से रोकता है। लेकिन कभी सोचा है कि तालाब और नदी को बारिश एक समान ही पानी से सींचती है फिर क्यों तालाब का पानी मौसम बीतने के बाद गंदला हो जाता है? दरअसल नदी और तालाब में यही अन्तर है कि तालाब ठहर जाता है, पर नदी नहीं ठहरती। इन्सान कुछ भी हो सकता है– नदी भी और तालाब भी। जीवन उसे दोनों विकल्प देता है।''

एक बात हमेशा याद रखें कि जीवन में सोचे हुए महान परिणाम तत्काल ही नहीं पाए जा सकते। उन तक पहुँचने के लिए जरूरी है–संतोष के साथ चलते रहना। अपने पैरों पर खड़े होने की प्रक्रिया में इन्सान न जाने कितनी बार गिरता है। गिरकर संभलता है और गिरते–संभलते एक दिन सरपट भागना सीख जाता है। हम उस अँधेरे में बैठे रहें या इन अँधेरों के बावजूद रुकें नहीं, चलते रहें और उजालों तक पहुँच जाएँ। हय हमारे विवेक पर निर्भर है। दुनिया के सफलतम व्यक्तियों के जीवन में ऐसी अँधेरी गलियाँ थी, जिनको पार कर रोशन सड़क तक पहुँचने की सोचना भी कठिन था, लेकिन वे इसमें सफल हुए क्योंकि वे बढ़ते रहे।

जीवन में कभी–कभी सवाल उठता है सफर कहाँ की तैयारी है? रास्ते तो दिख रहे हैं, मगर इस सफर की मंजिल क्या है? इस सवाल का जवाब शायद ही किसी के पास हो। क्योंकि जिन्दगी कोई छः घण्टे का सफर नहीं कि इस बस में बैठे और उधर उतर गए। जिन्दगी एक लम्बी कहानी है, जिसका हर पन्ना आने वाले दिन में छिपा है। इन्सान दौड़ता–भागता है, शायद इन्हीं पन्नों को बटोरने और अपनी जिन्दगी की किताब को मुकम्मल करने के लिए। यह जानते हुए कि जिस दिन यह किताब मुकम्मल होगी, साँसें छूट जाएँगी और आखिरी पन्ना दोबारा उसकी नजरों के सामने नहीं गुजरेगा। फिर भी वह बाहर की दुनिया और रास्ते तलाशना नहीं छोड़ता।

कि अगर जिन्दगी सचमुच एक सफर है और इन्सान एक मुसाफिर। तो भला यह सफर कहाँ की तैयारी है? रास्ते तो दिख रहे हैं, मगर इस सफर की मंजिल क्या है? इस सवाल का जवाब शायद ही किसी के पास हो। क्योंकि जिन्दगी कोई छः घण्टे का सफर नहीं कि इस बस में बैठे और उधर उतर गए। जिन्दगी एक लम्बी कहानी है, जिसका हर पन्ना आने वाले दिन में छिपा है। इन्सान दौड़ता–भागता है, शायद इन्हीं पन्नों को बटोरने और अपनी जिन्दगी की किताब को मुकम्मल करने के लिए। यह जानते हुए कि जिस दिन यह किताब मुकम्मल होगी, साँसें छूट जाएँगी और आखिरी पन्ना दोबारा उसकी नजरों के सामने नहीं गुजरेगा। फिर भी वह बाहर की दुनिया और रास्ते तलाशना नहीं छोड़ता।

यह हमारे वक्त की खुश किस्मती है कि हमारे वक्त का 'आदमी' रुकने का फैसला नहीं करता। वह सड़क से संसद का प्रयोग करता है। वह किसी से कैफ़ियत नहीं माँगता, फैसले सुनाता है और खुद अपने सवालों के जवाब तलाशता है क्योंकि उसकी आशाएँ, उसका विश्वास, उसके सपने.. उसका मन रोज एक नई दुनिया का रास्ता खोलते हैं, जिन्हें थाम कर वो काल के कपाल पर जयघोष लिखता हुआ चलता रहता है। आखिर हौसले कभी मात नहीं खाते...।

हमारे हौसलों की इंतिहा, मत पूछिए साहिब,
बहुत दूर है मंजिल, पर मंजिल को पा लेंगे।
हमारी बाजुओं में जोर है, संकल्प है मन में,
कलेजा चीर कर चट्टान का, रास्ता बना लेंगे।।

मु.पो. रामगढ़, जैसलमेर
(राज.)–345022

विद्यालय-गतिविधि

बाल संसद

❒ टेकाराम रेगर

हमारे देश में प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली है। इसकी सफलता नागरिकों पर निर्भर करती है। इसके लिए व्यक्ति जागरुक, कर्त्तव्यनिष्ठ व उत्तरदायी नेतृत्व प्रदान करने वाला होना चाहिए। इन्ही गुणों का विकास विद्यार्थियों में भी हो, इसके लिए विभिन्न विद्यालयों में 'बाल संसद' का गठन किया जाता है। इससे विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में राजनैतिक जागरुकता उत्तरदायित्व की भावना व मिलजुल कर कार्य करने की भावना का विकास होता है।

बाल संसद के उद्देश्यः–

1. विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का विकास करते हुए देश के लिए अच्छे चरित्रवान, सेवाभावी व सामाजिक कार्यकर्त्ता तैयार करना।
2. विद्यार्थियों के मध्य परस्पर संबंध स्थापित करना।
3. विद्यालय विकास को मद्देनजर रखते हुए विद्यालय-व्यवस्था व कार्यक्रमों में सहयोग करना।
4. सभी विद्यार्थियों से विद्यालय-नियमों का पालन करवाना तथा अनुशासन में रहकर उसकी गरिमा बनाए रखते हुए विद्यार्थियों की उचित आकांक्षाओं को संस्थाप्रधान के समक्ष रखना।
5. विद्यार्थियों में जागरुकता, कर्त्तव्यनिष्ठा व उत्तरदायी होने की भावना का विकास करना।

बाल संसद के कार्यः–

1. विद्यालय के दैनिक कार्य यथा खेल, प्रार्थना सभा, विद्यार्थियों में स्वच्छता, उनके स्वास्थ्य आदि के लिए बनाए जा रहे कार्यक्रमों की व्यवस्था में सहयोग करना।
2. समय-समय पर संचालित व विद्यालय में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं जैसे वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध, चित्रकला, आशुभाषण आदि के

आयोजन में सहयोग प्रदान करना।

3. श्रम-सेवा कार्यक्रम संचालित करना।
4. विद्यालय परिसर की सफाई, पीने के पानी की टंकियों की साफ-सफाई।
5. विद्यालय में आयोजित होने वाले वार्षिकोत्सव, विज्ञान मेला, उत्सव, जयंति, पर्व, त्यौहार, भ्रमण आदि कार्यक्रमों में सहयोग करना।

बाल संसद के चुनावः–

चुनाव प्रक्रिया में कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाग लेते हैं। विद्यार्थी अपनी पसंद के मंत्री चुनते हैं। जिसमें विद्यार्थी अपना मत मतपेटी में डालकर मंत्री चुनते हैं।

बाल संसद का कार्यकाल एक वर्ष का होता है। चुने हुए मंत्रियों को संस्थाप्रधान द्वारा शपथ दिलाई जाती है।

मंत्रियों के कार्य में सहयोग तथा मार्गदर्शन देने हेतु विद्यालय के अध्यापक परामर्शदाता की भूमिका में होते हैं।

1. **प्रधानमंत्री–** बाल संसद की संपूर्ण कार्यवाही का लेखा जोखा रखना, संसद की बैठकों की अध्यक्षता करना, अपने सहयोगी मंत्रियों के कार्यों की देखरेख करना, मार्गदर्शन देना, संपूर्ण संसद का कार्यभार संभालना।
2. **उपप्रधानमंत्री–** प्रधानमंत्री के कार्यों में सहयोग देना तथा उसकी अनुपस्थिति में कार्यभार संभालना।
3. **अनुशासन मंत्री–** प्रार्थना सभा, उत्सवों, पर्वों, अन्य कार्यक्रमों में मंत्रियों के सहयोग से अनुशासन में भागीदारी निभाना।
4. **साहित्य एवं सांस्कृतिक मंत्री–** समस्त साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना व उनकी उचित व्यवस्था करना।
5. **खेल मंत्री–** विद्यालय में आयोजित होने वाले खेल प्रतियोगिताओं का प्रबंध करना। खेलों को प्रोत्साहित करना।
6. **पर्यावरण एवं जल संसाधन मंत्री–** विद्यालय में वृक्षारोपण कर पेड़-पौधों की नियमित देखभाल करना व जल प्रबंधन की व्यवस्था करना।
7. **श्रम मंत्री–** श्रम, सेवा, स्वास्थ्य एवं सफाई, विद्यालय परिसर की सफाई, पर्यावरण, वृक्षारोपण आदि कार्यों में सहयोग करना।
8. **योजना मंत्री–** विद्यालय की योजना बनाना तथा अन्य सरकारी योजनाओं से छात्रों को अवगत करवाना तथा जागरुक करना।

मंत्रिमंडल बनने के बाद एक दिवसीय शिविर आयोजित किया जाता है, जिसमें बाल संसद के सभी पदाधिकारी, परामर्शदाता, कक्षा मुखी, संस्थाप्रधान व अध्यापक भाग लेते हैं। संसद के सभी पदाधिकारी अपनी-अपनी वार्षिक योजना बनाकर लाते हैं।

सभी पदाधिकारी मासिक शिविर आयोजित कर विभिन्न योजनाओं तथा कार्यों को मूर्त रूप देते हैं तथा विद्यालय विकास में भागीदारी निभाते हैं और विद्यालय में उत्साहपूर्ण माहौल, अनुशासित व सबका सर्वांगीण विकास करते हुए स्वच्छ, आदर्श और सुन्दर विद्यालय निर्माण की नींव रखते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.आ.उ.मा.विद्यालय डायलाना कला, पाली
मो. 8058707190

स्कूल समय में विद्यार्थियों द्वारा छुट्टी मांगने पर विचार करें।

❐ भूरमल सोनी

स्कूल से किसी भी प्रकार का बहाना बनाकर विद्यार्थी छुट्टी लेने में कामयाब तो हो जाता है परन्तु स्कूल समय में वह कहाँ गया और उसके साथ क्या घटना घट जाए, कहीं उसका बहाना झूठा तो नहीं, घर का बहाना, बीमारी, शादी, खेत, पोशाक लेने जाना, सिरदर्द, पेट दर्द, चक्कर, शिक्षण सामग्री घर से या बाहर से लाने जाने आदि के कई बहाने स्कूल समय में विद्यार्थी बनाते रहते हैं।

स्कूल समय में स्कूल से छुट्टी अपने स्तर पर लेने के पीछे कई मकसद भी हो सकते हैं। कच्ची उम्र व ना समझी के कारण विद्यार्थी असमाजिक तत्वों के फरेब में भी आकर स्कूल से भागने की फिराक में रहते हैं। जिससे वे हादसों एवं गलत कार्यों के शिकार हो जाते हैं। उनका जीवन शुरुआत में ही बर्बाद हो जाता है।

अपहरण यौन शोषण, दुर्घटना फिरोती, मर्डर आदि की खबरें विद्यार्थियों के साथ होने की सुनने को मिलती है। जिससे शिक्षक एवं शिक्षा के मंदिरों को बदनामी झेलनी पड़ती है। अपराधिक किस्म के व्यक्ति स्कूली-छात्र-छात्राओं को बहला-फुसलाकर, लोभ प्रलोभन देकर उनके साथ या उनके द्वारा गलत कार्य करवाने की ताक में रहते हैं। ऐसे कार्यों में छात्र के सहपाठी, बस ड्राईवर आदि चपरासी आदि की भी भूमिका कई बार सामने आती है।

शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकगणों एवं माता-पिता, अभिभावकों के सामंजस्य से ऐसी घटनाओं को अवश्य रोका जा सकता है। शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी में विशेषतौर पर इस विषय पर चर्चा की जानी चाहिए।

विद्यार्थियों को छुट्टी देने से पहले कुछ महत्त्वपूर्ण बातें-

1. माता-पिता/संरक्षक की अनुमति, स्वयं के उपस्थित होने पर ही विद्यार्थी को स्कूल से छुट्टी देवे। छात्राओं के लिए तो सख्त निर्णय ले उनकी किसी भी छुट्टी को लेकर कही गई बात पर शीघ्र निर्णय न ले। मोबाइल फोन द्वारा बच्चों को छुट्टी देने की माँग पर संरक्षक अथवा माता-पिता की अनुमति व जाँच करले।
2. यदि कोई माता-पिता, संरक्षक बच्चे को स्कूल से जल्दी छुट्टी के लिए फोन से कहते है तो टेलीफोन वार्ता के पहचान की पुष्टि करें तथा स्कूल रिकार्ड में अंकित उसके टेलीफोन न पर फोन करें यदि फोन घर से बाहर से किया गया हो तो सुनिश्चित करने के लिये बच्चे के स्कूल रिकार्ड कक्षा अध्यापक से उसके विवरण अनुसार प्रश्न करें।
3. यह सुनिश्चित करें कि स्कूल में विद्यार्थी को छुट्टी दिलाने आने वाले आगंतुक परख लिए गए और उनका स्टॉफ अपरिचित व्यक्तियों पर निगरानी रखे हुऐ हैं।
4. अध्यापक बच्चों को सीधे छुट्टी न देकर संस्था प्रधान को अवगत करवाकर लिखित प्रार्थना-पत्र लेने के बाद ही उसे घर भेजें।
5. जहाँ तक हो सके स्कूल समय में किसी भी विद्यार्थी को स्कूल परिसर (चार दिवारी) से बाहर जाने की अनुमति न दे।
6. बस ड्राईवर, पड़ोसी, सहपाठी, चपरासी या विद्यार्थी के सम्पर्क में आए व्यक्ति बहला-फुसलाकर, झूठी आकस्मिक परिवारिक दुर्घटनाओं का हवाला देकर छात्र-छात्राओं को स्कूल से छुट्टी दिलवाने के बहाने बनाकर अपने गलत उद्देश्यों में कामयाब हो जाते हैं अतः ऐसे लोगों से सतर्क रहे।
7. स्कूलों में कई छात्र-छात्राएँ बाहरी लोगों के बहकावे में (नासमझी के कारण) आकर तरह-तरह के बहाने यथा माँ-बाप बीमार, बुखार, पेट दर्द, शादी, चक्कर आना, सिरदर्द, खेत का काम, बहिन के ससुराल जाना, पेन-पेन्सिल कापी किताब, स्कूल यूनिफार्म लेने जाना जैसे बहाने बनाकर हरहाल में स्कूल से बाहर जाने के प्रयास करते रहते हैं। कई विद्यार्थियों का तो रोज का कार्य हो जाता है ऐसे में छुट्टी के लिए स्पष्ट मना करें।
8. प्रार्थना-सभा, छात्र अभिभावक संगोष्ठी में विद्यार्थियों को स्कूल समय में छुट्टी व बाहर जाने के निर्देश स्पष्ट रूप से जारी करें।
9. छात्र-छात्राओं, छोटे बच्चों को सुरक्षित रहने के लिये नियमित हिदायते समय-समय पर अभिभावकों एवं शिक्षकों को देते रहना चाहिए।
10. अवकाश हेतु अभिभावकों व विद्यार्थियों माता-पिता द्वारा लिखी अर्जी का रिकार्ड जरूर रखें।

प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए कुछ आवश्यक बातें

- छोटे बच्चे नासमझ होते हैं अतः उन्हें समझाए कि वे अनजान व्यक्तियों से बात न करें। अनजान व्यक्ति द्वारा दी गई किसी वस्तु को न लेवे, न ही खायें। गिफ्ट या पैसा दे तो अकेले में बिलकुल नहीं लेवे।
- किसी भी स्थिति में उनके वाहन में न बैठे तथा अनजान से लिफ्ट न लें।
- यदि कोई अनजान व्यक्ति अपनी कार या अन्य वाहन में बहला-फुसलाकर, धमकाकर बैठाने का प्रयास करें तो-चिल्लाइए और भाग जाए। स्कूल के रास्ते में जहाँ तक हो सके झुण्ड या किसी के साथ आना-जाना करें।
- किसी प्रकार की अनहोनी से बचाने के लिए एक-दूसरे साथी को तुरंत, अपने अध्यापक, माता-पिता, अभिभावक को सूचना कर समझाएँ। उन्हें बताया जाय कि व्यक्ति का हुलिया, वाहन के नम्बर, रंग आदि का ध्यान ये हैं।
- बच्चों के खेलने के स्थान के आसपास, शौचालय, पेशाबघर के नजदीक कोई संदिग्ध अकेला व्यक्ति दिखाई दे तो तुरंत उसकी सूचना स्कूल में शिक्षकों को करवाई जाए।
- अनजान व्यक्ति व उसकी गाड़ी स्कूल परिसर के बाहरी क्षेत्र में कहीं छिपाकर खड़ी की गई है तो उसकी सूचना पुलिस को तुरंत दें।
- एकान्त या सुनसान कमरों, स्थान व

बिल्डिंगों में जाने से बच्चों व उनके दोस्तों को मना करें। खासकर छात्राओं को चेतावनी देकर विशेष समझाएँ।

- छात्र-छात्राओं को निर्देशित कर दे कि किसी बाहरी अनजान व्यक्ति, औरत, साधु, भिखारी, शराबी द्वारा उनके साथ की गई अप्रत्याशित व संदिग्ध बात को तुरंत अध्यापक, माता-पिता या जिम्मेदार व्यक्ति को अवश्य बताएँ। माता-पिता, अभिभावक को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि स्कूल का समय कब-से-कब तक है जल्दी जाने व स्कूल से देरी से आने पर कारण जानें।
- छात्र-छात्राएँ घर देरी से लौटने का कारण स्कूल बताएँ तो दूसरे दिन स्कूल प्रबंधन से सम्पर्क साधे।
- स्कूल में बिना उचित कारण अनुपस्थित छात्र-छात्राओं के कक्षा अध्यापक संस्थाप्रधान को सूचित करना जरूरी समझे।
- अगर छात्राएँ बिना सूचना स्कूल नहीं आए तो दूसरे दिन हाजिर होने पर उनके घरवालों से सम्पर्क कर जानकारी करें कि वह कहीं झूठ तो नहीं है।
- विद्यार्थी बस, टेक्सी या अन्य वाहनों से स्कूल आ जा रहे हैं तो ड्राईवर, परिचालक के मोबाइल नं, ड्राईविंग-लाइसेंस, आधार कार्ड व स्कूल प्रबंधन से अन्य जानकारी अवश्य रखें।
- वाहनों के माध्यम से बच्चें स्कूल आ रहे हैं तो आने-जाने का समय ज्ञात रखें। जरा भी देरी होने पर शीघ्र बस चालक एवं स्कूल में सम्पर्क करें।
- स्कूल समय में किसी भी प्रकार की अप्रत्याशित घटना की जानकारी विद्यार्थियों के माता-पिता/अभिभावक को तुरंत कर दी जाए ताकि वे वस्तुस्थिति से अवगत हो जाएँ।

स्कूल में अध्यापक, अध्यापिकाओं, स्टाफ की सजगता से छात्र-छात्राओं के साथ घटित घटनाओं को रोका जा सकता है।

कला शिक्षक
रा.आ.उ.मा.वि., पलाना,
बीकानेर
मो: 9252176253

शैक्षिक प्रक्रिया

निर्देशन एवं परामर्श : आवश्यकता एवं महत्त्व

❐ दिनेश कुमार गुप्ता

प्रसिद्ध विचारक बरट्रेन्ड रसेल द्वारा अपनी पुस्तक 'ऑन एजुकेशन' में व्यक्त किए गए विचार शैक्षणिक प्रक्रिया एवं शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति के संदर्भ में आज अत्यंत प्रासंगिक हैं। रसेल ने लिखा है- ''Knowledge wielded by love if this really were the basis of education the World could be transformed'' उक्त कथन में रसेल ने सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में एवं ज्ञान हस्तान्तरण में प्रेम एवं स्नेह के महत्त्व को रेखांकित किया है।

रसेल की दृष्टि में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में दो उद्देश्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं-

1. सद्आचरण के लिए बालक को प्रशिक्षित करके उसे भयमुक्तता एवं प्रेम, स्नेह जैसे उदात्त भावों के विकास का अवसर सुलभ कराना।
2. ज्ञान शक्ति एवं अन्तर्निहित प्रतिभा के पूर्ण प्रस्फुटन के लिए परिवेश निर्मित करना। इन उद्देश्यों की प्राप्ति में माता-पिता द्वारा समझदारी भरा पालन-पोषण एवं शिशु पाठशालाओं में प्रदत्त कुशल निर्देशन तथा अन्य बालकों के साथ स्वस्थ अन्तःक्रिया का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है-

शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु रसेल ने निम्नांकित बिन्दुओं को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है-

1. प्रेम अभिसिंचित शैक्षिक प्रक्रिया
2. माता-पिता द्वारा समझदारीपूर्ण पालन-पोषण।
3. कुशल निर्देशन।

वर्तमान भारतीय परिदृश्य शिक्षा जगत में छात्रों की अनेक उपलब्धियों से परिपूर्ण है, परन्तु कतिपय शिक्षण संस्थाओं में अनेक ऐसी घटनाएँ देखी जा रही हैं, जो बालकों के अन्दर पनप रही निषेधात्मक प्रवृत्तियों को प्रदर्शित कर रही हैं। छात्रों में अनुशासनहीनता, तनाव, अवसाद, आत्महत्या जैसी अनेक निषेधात्मक प्रवृत्तियों का पनपना हमें यह सोचने को विवश करता है कि क्या शिक्षा प्रक्रिया में वांछित कुशल निर्देशन, परिपक्व मार्गदर्शन एवं ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया में प्रेम, स्नेह का अभाव तो नहीं है। व्यावसायिक शिक्षा के इस युग में शिक्षा के वृहत्तर उद्देश्यों एवं मानवीय पहलुओं को वांछित महत्त्व न देकर कहीं हम भावी पीढ़ी को अप्रत्यक्ष रूप से यह संदेश तो नहीं दे रहे हैं कि शिक्षा केवल व्यवसाय प्राप्त करने का साधन मात्र है। यदि शिक्षण प्रक्रिया मानवीय संवेदनाओं के प्रति बालक को जागरुक न कर सके, मानवीय मूल्यों के विकास का माध्यम न बन सके, स्वस्थ एवं मानसिक विकास कल्याण बोध का भाव न उत्पन्न कर सके तो निश्चित ही शैक्षिक प्रक्रिया में कोई न कोई कमी अवश्य है, ऐसा मानना अनुचित न होगा। ऐसी स्थिति में शिक्षाविदों, विचारकों को गंभीर चिंतन करने की आवश्यकता है। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए समय-समय पर भारत में अनेक आयोगों का गठन हुआ, जिनमें शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है। मुदालियर शिक्षा आयोग (1952-53) ने निर्देशन केन्द्रों के गठन की सिफारिश की है। कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) में प्रत्येक स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए निर्देशन को महत्त्वपूर्ण माना गया है। एनपीई. (1986), पीओए. (1992) की संस्तुतियों में भी निर्देशन सेवाओं को व्यावसायिक शिक्षा, बालिकाओं की शिक्षा, बालिकाओं की व्यावसायिक शिक्षा, प्राविधिक एवं शैक्षिक प्रबंधन के विकास के साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। एससीएफएसई. (2000), एनसीएफ. (2005) में भी शैक्षिक निर्देशन को व्यवसाय चयन, मानसिक स्वास्थ्य रक्षा, स्कूलों में अनुभूतियों की उपलब्धि एवं छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु महत्त्वपूर्ण माना गया है। शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन के मुख्य उद्देश्य हैं-

1. बालकों का सर्वांगीण विकास।
2. बालकों की अधिगम, स्मृति क्षमता में

वृद्धि।
3. शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि।
4. समायोजन की प्रक्रिया को सहज बनाने में सहायता।
5. अधिगम, अध्ययन के प्रति विधेयात्मक अभिवृत्ति का विकास।
6. स्व के प्रति, कार्य के प्रति एवं अन्य व्यक्तियों के प्रति स्वस्थ अभिवृत्ति एवं स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।

1. प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन कार्य– किंडर गार्टन विद्यालयों की प्रथम कक्षा के विद्यार्थियों को निर्देशन की अधिक आवश्यकता होती है। ये बालक अपने घर को छोड़कर नवीन वातावरण में प्रवेश करते हैं। घर में वे स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु विद्यालय का जीवन अधिशासित होता हैं। यहाँ पर स्वतंत्रता के साथ कुछ प्रतिबंध भी होते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों को स्वयं समयानुकूल मार्गदर्शन एवं निर्देशन प्रदान करना चाहिए। साथ ही सेवा पूर्व एवं सेवा अवधि में प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर खेल-खेल में, पीयर ग्रुप लर्निंग के माध्यम से वांछित निर्देशन प्रदान करना चाहिए। कुशल निर्देशन के अभाव में इस अवस्था में बहुत से छात्र-छात्राएँ कुसमायोजन के शिकार हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव उनके भावी जीवन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। कुसमायोजन के कारण मानसिक विक्षोभ एवं निषेधात्मक मनोवृत्ति विद्यार्थियों में उत्पन्न हो सकती है, जो शैक्षणिक उपलब्धि एवं व्यक्तिगत समायोजन के लिए प्रतिकूल परिवेश का निर्माण करती है। प्राथमिक स्तर पर ही विभिन्न व्यावसायिक कौशलों, जैसे मिट्टी के खिलौने, गुड़िया बनाना, कागज के फूल एवं माला बनाना, कठपुतली इत्यादि के निर्माण द्वारा विद्यार्थियों के अंदर व्यावसायिक रुचि को जागृत किया जा सकता है, जो भविष्य में लक्ष्य निर्धारण एवं शिक्षा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने में सहायक हो सकते हैं।

प्राथमिक स्तर पर अध्यापक का कार्य महत्त्वपूर्ण होता है। वह अध्यापक होने के साथ ही परामर्शदाता एवं सहयोगी का कार्य भी करता है। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य आधारभूत कौशल में निपुणता प्राप्त करना तथा मूलभूत विषयों का ज्ञान प्राप्त करना है। अध्यापक अपनी कक्षा में विद्यार्थियों के अधिक सम्पर्क में रहते हैं। अतः वे झगड़ालु, शर्मीले, डरपोक स्वभाव वाले बालकों का पता लगा सकते हैं। अध्यापक आवश्यक परामर्श एवं निर्देशन द्वारा माता-पिता से सम्पर्क स्थापित कर तथा कुछ विचार संगठित कर बालकों की इन कमियों पर विजय प्राप्त करने में सहायक हो सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर निर्देशन कार्य प्रभावशाली ढंग से चलाने के लिए विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के समस्त अभिभावकों एवं प्रशासकों का सक्रिय सहयोग आवश्यक है।

2. जूनियर हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता– इस स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी वयःसंधि एवं किशोरावस्था की आयु के होते हैं। इस आयु में विद्यार्थियों के समक्ष ऐसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनका समाधान व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श के द्वारा ही संभव होता है। जूनियर हाई स्कूल स्तर पर व्यक्तिगत निर्देशन में निम्न प्रयोजन होते हैं-

- विद्यार्थियों को अपने विचारों, अभिरुचियों और भावनाओं को प्रकट करने के अवसर प्रदान करना।
- इस आयु में व्यवहार से संबंधित अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अतः अध्यापक को भावनात्मक नियंत्रण रखते हुए समस्त स्थिति को बुद्धिमानी से समझकर ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए, ताकि विद्यार्थी आत्मानुशासन की तकनीक को सीख सकें।
- अध्यापक को इस प्रकार का नेतृत्व प्रदान करना चाहिए कि इस आयु के समस्त विद्यार्थी जो चाहे अति सक्रिय हों, व्यग्र हों, उठी अथवा सृजनात्मक हो, वे अपने हित और समस्त समुह के लाभ के लिए कार्य करने के लिए अभिप्रेरित हों।
- विद्यार्थियों को अपनी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुरूप व्यवसाय की धारणा विकसित करने में सहायता, परामर्श एवं निर्देशन देना चाहिए।

3. हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन की आवश्यकता– हाई स्कूल स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं। यह आयु का ऐसा पड़ाव है जब भावी जीवन की आधारशिला रखी जाती है। इस आयु में किशोरों के विचारों में भारी उथल-पुथल रहती है। अतः इस स्तर पर किशोरों की आवश्यकताओं एवं रुचियों को दृष्टि में रखते हुए व्यक्तिगत परामर्श एवं निर्देशन प्रदान करने की आवश्यकता होती है। क्रो एण्ड क्रो ने इस स्तर पर व्यक्तिगत निर्देशन के उपायों एवं उद्देश्यों में निम्नलिखित बिन्दु सम्मिलित किए हैं-

- विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता देना कि इस अवस्था में मानसिक उथल-पुथल होना स्वाभाविक है। उक्त परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को अध्ययन-अध्यापन के साथ पाठ्येत्तर, रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों में भी सम्मिलित करे।
- स्वास्थ्य, सुरक्षा और शारीरिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने एवं जारी रखने के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों एवं संबंधित समस्याओं को बुद्धिमत्तापूर्वक तथा नियंत्रित भावना से समझाने का प्रयत्न करना चाहिए तथा आत्मानुशासन के महत्त्व से विद्यार्थियों को परिचित कराना चाहिए।
- सामाजिक जीवन से लाभ उठाने के लिए विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा कार्यों एवं जनसेवा के कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को परावलम्बन से हटकर स्वतंत्र निर्णय और कार्य करने में सहायता देनी चाहिए।

4. कॉलेज स्तर पर शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन की आवश्यकता– कॉलेज स्तर पर पहुँचते ही विद्यार्थी किशोरावस्था को पार करके परिपक्वता की ओर अग्रसर होने लगते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों के सम्मुख व्यवसाय संबंधी, विवाह संबंधी एवं आर्थिक समस्याएँ होती हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु विद्यार्थियों को व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। उसके लिए निम्नवत सुझाव एवं सलाह अपेक्षित हैं, जिन्हें अध्यापकों, शैक्षिक

प्रशासकों एवं शैक्षिक नीति निर्माताओं द्वारा छात्रों को प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा के वांछित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। शिक्षकों-शैक्षिक प्रशासकों हेतु कुछ सुझाव एवं विचारणीय बिन्दु निम्नांकित हैं-

- शिक्षकों को विद्यार्थियों के बीच परामर्शदाता, सहयोगी एवं मित्र के रूप में उपस्थित होना चाहिए।
- शिक्षकों को शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन के क्षेत्र में ऐसा प्रशिक्षण व्यापक स्तर पर दिया जाना चाहिए जो स्वयं शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के साथ ही साथ विद्यार्थियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण हो तथा जो 'शैक्षिक विजन-2020' के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो।
- शिक्षकों को चाहिए कि वे बाल्यमन व विद्यार्थियों के मनोविज्ञान को समझें और वैसा ही व्यवहार करें जैसे व्यवहार की अपेक्षा वे अपने विद्यार्थी जीवन में शिक्षकों से करते थे।
- शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को प्रतिदिन कम से कम आधे घंटे समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ एवं रोजगार समाचार पढ़ने के लिए समय उपलब्ध कराएँ, जिससे छात्र-छात्राएँ रोजगार संबंधी और कैरियर संबंधी विभिन्न सूचनाओं से अवगत हो सकें एवं भविष्य के लिए स्वयं को तैयार कर सकें, ताकि भविष्य में कुंठा एवं तनाव से बच सकें।
- शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए कि विद्यालयों में शैक्षिक परामर्श एवं शैक्षिक निर्देशन की एक इकाई गठित करें और उस इकाई का एक प्रभारी बनाएँ, जिसे यह उत्तरदायित्व सौंपा जाए कि वह प्रतिदिन सूचनापट्ट पर रोजगार से संबंधित सूचना अंकित करे, ताकि प्रत्येक छात्र-छात्रा रोजगार एवं कैरियर संबंधी सूचनाओं से अवगत हो सकें।
- शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए कि प्रार्थना में रोजगार एवं कैरियर संबंधी सूचना का प्रसारण करें क्योंकि ऐसा देखा गया है दुगम स्थानों के विद्यार्थी के विशिष्ट एवं विलक्षण प्रतिभाओं के होने के बावजूद वांछित मार्गदर्शन के अभाव में उचित कैरियर एवं रोजगार का चुनाव नहीं कर पाते और वे अच्छे भविष्य हेतु प्रभावी कदम नहीं उठा पाते।
- शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, अभिवृत्तियों, रुचियों, आदतों, संवेगों एवं आकांक्षाओं आदि को ध्यान में रखकर चतुर्दिक मार्गदर्शन एवं निर्देशन प्रदान करें।
- शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को समय-समय पर विभिन्न व्यवसायों को चुनते समय पुरस्कारों एवं प्रत्याशित हानियों को भी बताएँ।
- शिक्षकों को चाहिए कि विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं उपलब्धि स्तर का अध्ययन करके शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन प्रदान करें, ताकि उनके उपलब्धि स्तर पर एवं रुचि के अनुसार उनको अपेक्षित लाभ मिल सके।
- शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को समय-समय पर विषय विशेषज्ञों द्वारा छात्र-छात्राओं के मध्य रोजगार एवं कैरियर संबंधी विषयों पर चर्चाएँ तथा सम्मेलन कराने चाहिए।

शैक्षिक प्रशासकों, शैक्षिक नीति-निर्माताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे शैक्षिक परामर्श एवं निर्देशन के क्षेत्र में विशेष कार्यनीति एवं कार्य योजना बनाकर प्राथमिकता क्रम में क्रियान्वित कराने का प्रयास करें ताकि शिक्षा के क्षेत्र में 'विजन-2020' के लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रभावी गति मिल सके। इससे शिक्षा के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का लाभ समाज के अपवंचित वर्ग एवं दुर्गम स्थानों के विद्यार्थियों को मिल सकेगा। एवं प्रतिभा पलायन रुक सकेगा और सुगम स्थानों के विद्यार्थियों को रोजगार एवं कैरियर का चुनाव करके आत्मनिर्भर बनने का सुअवसर प्राप्त हो सकेगा। साथ ही छात्र भी मानवीय मूल्यों पर आधारित संबंधों की आधारशिला निर्मित करने में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकेंगे।

प्रवक्ता, चौधरी मौहल्ला, ग्रा.पो. मण्डावरी,
तह. लालसोट, जिला दौसा-303504
मो: 9462607259

सच्ची सफलता का एक मात्र साधन

ईमानदारी, सफलता का सबसे प्रधान साधन है। एक दिन ऐसा जरूर आता है, जब बेईमान आदमी दुःख और विपत्ति में फँसकर अपनी बेईमानी पर पश्चाताप करने लगता है। ऐसा कोई भी आदमी नहीं, जिसे अपनी ईमानदारी पर पश्चाताप करना पड़ा हो। हालांकि कभी-कभी ईमानदार आदमी भी असफल हो जाते हैं, क्योंकि वे मितव्ययिता, योजना तथा व्यवस्था जैसे तीन स्तंभों का निर्माण करने में असफल रहते हैं, परंतु उनकी असफलता इतनी अधिक दुःखदायी नहीं होती, जितनी कि बेईमान व्यक्ति की होती है। कम से कम उन्हें इतना संतोष तो होता है कि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति को धोखा नहीं दिया। अपने जीवन के अंधकारयुक्त क्षणों में भी वे अपनी आंतरिक-पवित्रता पर संतोष अनुभव कर सकते हैं।

अज्ञानी लोग यह सोचते हैं कि समृद्धि प्राप्त करने के लिए बेईमानी ही सबसे सीधा मार्ग है। बेईमान आदमी धन को अपनी जेब में रखकर भले ही यह सोच लें कि कितनी चालाकी और सफलता के साथ हमने दूसरे को ठग लिया, लेकिन उस समय हम इस यथार्थता को नहीं समझ पाते कि वास्तव में हमने अपने को ही छला है। बेईमानी से प्राप्त पैसे को मय सूद के जाना पड़ेगा और इस न्याय से हम किसी प्रकार न बच सकेंगे। जिस प्रकार आकाश में फेंका हुआ पत्थर आकर्षण-शक्ति के सिद्धांतानुसार पृथ्वी पर ही लौटकर आता है, उसी प्रकार नैतिक गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत भी अटल रूप से काम करता रहता है।

(अखण्ड ज्योति-सितम्बर 1967, पृष्ठ-22)

पुस्तक समीक्षा

धरती पुत्र

लेखिका : करुणा श्री **प्रकाशक** : दीपक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर **संस्करण** : 2016
पृष्ठ संख्या : 124 **मूल्य** : ₹ 250

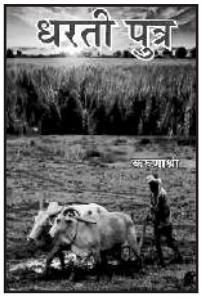

महान ऋषियों की वाणी में जिसे पृथ्वी-पुत्र कहा गया है (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः) वही उदययुगीन शब्दावली में 'धरती पुत्र' संज्ञा धारण कर चुका है प्रस्तुत कथा-संग्रह 'धरती पुत्र' का शीर्षक कहानीकार करुणाश्री ने खूब सोच-समझ के साथ रखा है। राष्ट्रीय कृषि और किसान को प्रोत्साहित करने की उत्कट आकांक्षा से पुस्तक के मुखपृष्ठ के चित्र को भी बड़ा आकर्षक बनाया है जिसमें एक कृषक को बैलों की जोड़ी द्वारा हल जोतता दिखाया गया है। संग्रह की बारह कहानियों में से पहली कहानी भी 'धरती पुत्र' संज्ञक ही है।

हाँ, 'धरती पुत्र' कथा-संग्रह की बात करने के पूर्व कहानीकार का परिचय सुधी पाठकों को कराना समीचीन होगा। पुस्तक-गत परिचय के अनुसार लेखिका करुणाश्री, सुश्री करुणा श्रीवास्तव हैं जबकि 'करुणाश्री' उनका साहित्यिक नाम है। कहानी-संग्रहों के अतिरिक्त ग्रंथ-रूप में उनकी रूपक-कहानियाँ, उपन्यास, काव्य-संग्रह, बालोपयोगी उपन्यास बोध-कथाएँ एवं लघुकथाएँ आदि प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कुछेक पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में अनुदित हुई हैं और कुछेक के गुजराती तथा मराठी अनुवाद प्रकाशित होने को हैं। अनेक राज्य-स्तरीय एवं राष्ट्रीय साहित्य-क्षेत्रीय पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त करुणाश्री यशस्वी व्याख्याता भी रह चुकी हैं। वर्तमान में वे स्वतंत्र लेखन तथा अध्यापन-कार्य में प्रवृत्त हैं।

'धरती पुत्र' करुणाश्री का नया कहानी-संग्रह है। पुस्तक के आवरण-पृष्ठ पर लेखिका ने जीवन में समय के खेल की कीमत की ओर इंगित करते हुए लिखा है- 'समय की महिमा भी निराली, अनोखी है। समय ही राजा बनाता है, समय ही रंक बना देता है। 'धरती पुत्र' कथा-संग्रह में आस्था का, समय का मूल्य है। हमारे जीवन में किसी के प्रति आस्था का मूल्य नहीं होगा तो जीवन में बिखराव आ जाएगा।' (उनकी 'समय का खेल' कहानी से भी यही प्रतिध्वनित होता है।) लेखन के क्षेत्र में सफलता की सीढ़ियाँ छूने के लिए चिंतन, मनन और मंथन को अत्यावश्यक बतलाती हुई वे आगे लिखती हैं, 'इससे ज्यदा जरूरी है, भावनाएँ, संवेदनाएँ और इंसानियत के रिश्तों की। आज के समय इनका मूल्य अधिक है। हम चाहे भौतिकवाद में जिए लेकिन भौतिकवाद भी इन तीन शब्दों के साथ जुड़ा-बंधा है। तभी जीवन में चमक बनी रहती है। आज सब कुछ संभव है लेकिन प्रकृति से लड़ना मुश्किल। हम सबको चाहिए जो हमारा संसार का जीवन चला रहा है उसकी कद्र करें। उसके दुःखों का सहारा बनें। तभी धरती का अन्नदाता और देश की माँ की कीमत समझ सकेंगे और आने वाली पीढ़ी इसका महत्त्व समझ पाएगी।' धरती का अन्नदाता और 'देश की माँ' से कहानीकार का अभिप्राय उनकी दो प्रमुख कहानियों से है जिन पर हम पहले दृष्टिपात कर लेते हैं।

धरती का अन्नदाता है किसान-धरतीपुत्र। 'धरतीपुत्र' कहानी में अपने संघर्ष-भरे जीवन में आजमगढ़ का 75 वर्ष का किसान हरमन ठकराल जब राज्य सरकार द्वारा अच्छी कृषि हेतु मुख्यमंत्री के हाथों पुरस्कृत होता है तो कार्यक्रम में वह अपने पोते भरत को साथ लेकर जाता है। दो लाख रुपयों का पुरस्कार पाकर भी जब हरमन के चेहरे पर उदासी छा जाती है तब पोते के कुरेदने पर वह बतलाता है कि उसके पास दो बीघा जमीन थी जो पारिवारिक बंटवारे में पाँच भाइयों में बंट गई। घर-खर्च चलाने के लिए वह साहूकारों के चंगुल में फंस गया। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के कारण पत्नी नवेली के स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दे पाया था और गुर्दे की बीमारी के कारण उसका देहावसान हो गया। यही उसकी उदासी का कारण था। पत्नी की याद। कहानी में जन-सहयोग में भाग लेने वाली गणिका रहमत खान का जिक्र भी आता है जिसने उक्त कार्यक्रम हेतु अपनी निजी संपत्ति से पाँच लाख रुपये सरकार को दान दिया और इस प्रकार किसानों का उत्साहवर्धन और सम्मान हुआ। किसानों की व्यथा और विवशताओं का कहानी में बड़ा सजीव चित्रण हुआ है।

कहानी 'देश की माँ' में गाय-माता का माहात्म्य दरसाया गया है। 'भूख की सजा मध्यप्रदेश के आदिवासी जिला रायगढ़ के सीधे-सादे जवान रमैया और उनकी पत्नी गोमती की कहानी है। रमैया शहद बेचकर घर-परिवार का काम चला रहा था। एक बार अच्छी कमाई के लिए महीने-बीस दिन वह बाहर जाता है। गोमती पीछे-से गृहस्थी के भरण-पोषण का काम संभालती है। पर एक दिन टोटे के मारे उसकी सास, ससुर बेटियों, बुआ का पेट भरने को घर में कुछ नहीं होता है तो अपने एक बेटी को बीस रुपयों में गिरवी रख कर मिले पैसों से खाने का सामान ले आती है। घर के सब लोग बड़ी बेटी लट्टू को नहीं पाकर और स्थिति को समझ कर बड़े दुःखी होते हैं। किंतु हालत यह कि उसे रमैया द्वारा कमाकर लाए पैसों के बिना किस प्रकार छुड़ाया जाए। रमैया के आने की प्रतीक्षा में ही इस दर्दनाक कहानी का अंत हो जाता है।

'मंगल सूत्र' कहानी में यह बतलाया गया है कि आज नारी कुछ पुराने रिवाजों को अपने आंचल में संजोए रखे तो समाज में नारी का एक नया रूप देखा जा सकता है। विपत्ति के समय पिता विधवा पुत्री कमली को सलाह देता है कि तू मंगलसूत्र हमेशा पहने रखना जिससे तेरी रक्षा होगी। कमली दलित जाति की थी। विधवा होने पर साहस, चतुराई और धैर्य से काम लेकर बच्चों को पालते हुए पढ़-लिखकर नगर-निगम में सीनियर सुपरवाइजर पद तक पहुँच जाती है। आगे चलकर हरिजन समाज में क्रांति लाती हुई एक शिक्षा निकेतन खोलती है और शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने लगी। मंगलसूत्र ठेठ तक उसके मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करता है।

यही मंगलसूत्र 'रास्ते और भी है' नामक कहानी में काम आता है। दया का पिता भीखू उससे कहता है, 'अकेली नारी और विधवा को समाज चैन से नहीं बैठने देता। इसलिए तूं संपूर्ण समाज के सामने विधवा होकर भी अपना मंगलसूत्र पहने रहेगी ताकि तेरी लाज की रक्षा हो सके।' मंगलसूत्र के सहारे विधवा दया वर्मा घरों में बर्तन माँजने का काम करते-करते अपने बच्चों

का पालन करती हुई पढ़ती भी है और नौकरी भी करने लग जाती है। अपने स्वाभिमान और आत्मसंयम के बल पर वह सुपरवाइजर की पोस्ट तक पहुँच जाती है। प्रकृति ने उसका सब-कुछ उजाड़ दिया था तो ईश्वर ने उसे सब-कुछ दे दिया- उसका स्वाभिमान, आत्मसम्मान।

कहानी दहेज विरुद्ध विवाह का भी एक उत्कृष्ट उदाहरण मानी जा सकती हैं।

संग्रह की कहानियों पर विचार करें तो हम पाएँगे कि अधिकांश कहानियों में लेखिका ने एक बहुत बड़े पाप की ओर इंगित किया है और वह है मदिरा-पान। उसके कारण अच्छे-भले आदमी का अधःपतन हो जाता है और वह सभ्य समाज की नज़रों से गिर जाता है। 'रसिकी' कहानी आदिवासी परिवार की कहानी है। रसिकी राजघराने में कटाई-बुवाई का काम करती थी। गंगू उसका पति था जो न के बराबर। वह शराब तो पीता ही था, अधिक उम्र का होने के कारण संतान पैदा करने में अक्षम होते हुए भी रसिकी को बांझ कहता और उसे पीटता भी था। इसी बीच रसिकी राजा प्रवीण भंजदेव के भतीजे मानवेंद्रसिंह के चंगुल में फंस गई। वह नशे में था। उसने उसकी इज्जत लूटने के बाद उसे मुँह बंद करने के लिए हीरे की अंगूठी दी। समाज ने युक्तिपूर्वक न्याय दिलाया। इधर रसिकी ने अपनी आश्रयदाता बूढ़ी दादी के पोते से, जो लंगड़ा था, पर मजदूरी करता था, विवाह कर लिया। फिर उससे रसिकी के पुत्र उत्पन्न हुआ। इस प्रकार उसने गंगू का सिर नीचा करा ही दिया। सर्वत्र उसका मान-सम्मान हुआ।

'घर की बगिया और घर का ही फूल' सत्य घटना पर आश्रित है। मध्यप्रदेश के एक सुखी सोनी परिवार की कथा है जिसमें पत्नी के पीहर जाने पर पति अपनी बेटी पर शराब के वशीभूत होकर, डोरे डालता है और बेशर्मी की हद तक जाकर दोनों पति-पत्नी बन जाते हैं और अंततः दोनों ही मुहल्ले वालों द्वारा निष्कासित किए जाते हैं।

करुणाश्री की कहानियाँ का सबसे बड़ा गुण है उनकी संप्रेषणीयता। पढ़ते समय लगता है जैसे लेखिका पाठकों से सीधी बात कर रही है। घटनाएँ बड़ी सहजता से सामने आती रहती हैं जो पाठकों को अभिभूत कर लेती हैं। प्रत्येक कहानी प्रारंभ से अंत तक पाठकों को बाँधे रहती है। भाषा प्रवाहमयी है जिसमें प्रांतीय बोली का पुट भी निराला जायका देता है। श्री श्रीकृष्ण शर्मा का कहानियों का परिचयात्मक आलेख सोने में सुहागे का काम करता है। अतः श्री शर्मा भी लेखिका के साथ-साथ धन्यवाद के पात्र हैं।

समीक्षक : डॉ. सत्यनारायण स्वामी
नयाशहर थाने के पीछे,
बीकानेर (राजस्थान-334004)
मो: 9461448470

काळजो कसमसावै

लेखिका : डॉ. कृष्णा आचार्य **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण** : प्रथम 2017 **पृष्ठ संख्या** : 80 **मूल्य** : ₹ 200

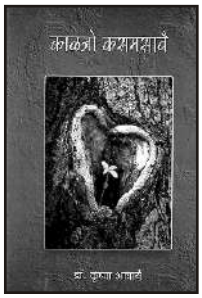

राजस्थान रै मरुभोम री साख सवाई करणै सारू अठै रा साहित्यकार आपरी कलम सूं लगोलग लिखता रैया है। अे आपरै लेखन रै स्यारै सूं मिनख री संवेदना नै कागद माथै उतारण रो जतन करै। इणी विगत मांय अेक नांव ओजू जुड़ग्यो, बो है लेखिका- डॉ. कृष्णा आचार्य। लेखिका आपरै मन री दाज नै समाज रै सामी अेक पोथी रै स्यारै पुरसण रो काम करै, वा है- 'काळजो कसमसावै।'

डॉ. कृष्णा आचार्य आपरी इण पोथी रो नांव इण भांत रो क्यूं दियो, कोई पीड़ है लेखिका नै, कै बा बगत सूं बथोबथ करती लखावै? तो इण रो उथळो पौथी मांय आपरै सिरजण री साख राखता कहाणीकार प्रो मदन सैनी लिखै- 'काळजो कसमसावै' संग्रै मांय जीया जूण, घर-गिरस्थी, परियावरण, समाज हेतु-हिवळास अर अंवळाया-अबखायां रो जथारथ परखत हुवै। सौ टका साच है कै कवयित्री आपरै अंतस मांय घर बीती पर बीती बातां नै परोट'र पोथी रै रूप में पाछो समाज आगे मेल'र इण बात माथै सोचण नै मजबूर कर देवै कै बातां बणावणी घणी सोरी, पण उणनै सरावणी दोरी घणी है।

आपरै धुन री धणियाणी कवेसरी डॉ. आचार्य इण पोथी मांय बावन कवितावां अर चवदै गीतां रो रचाव कर आपरा भाव उजागर करिया है। कवयित्री रो नारी मन आपरै घर-परिवार रै ओळै-दोळै फिरै, जिणरो परभाव आपरै लेखन मांय साफ झळके। माँ रै पगां मांय लेखिका जद अपणै-आपणै अबखायां सूं भरी देखे अर इण समाज रै कुचक्रा सूं बथोबथ कर नै आपरैं अंतस दाज नै ठारी करण सारू कोई ठावी ठौड़ जोवै तद उणनै मां रै खोळै रै सिवा कोई दूजी ठौड़ नीं दीसै, क्यूं कै उठै उणनै मां री ममता रूपी इमरत सूं सरोबार हुय'र नूवै जीवन में पग मांडण रो मौको मिलै। जिण भांत कवयित्री नै मां रै हेत री आस है उणी'ज भांत उणनै आपरै घरै कूंकू पगलिया रा चितराम हरखित करै। नूंवां पगलियां मांय आपरै हरख री सींव नै पार करती लिखै -

मांड्या नूंवां पगलिया/पालणै रै मांय
मुळकण लाग्यो आंगणियों/कूंकू रंग लगाय/हिवड़ो
हरख मनावतो/ढोली ढोल बजाय/बरसी किरपा
नाथ री/कमल कळी खिलाय!

इणी'ज भांत 'बेटी रो बाप' कविता मांय अेक बाप री बेटी रै वास्तै अदीठ प्रीत नै सामै चौड़ी करी है, जिण नै हरेक बाप आपरै अंतस मांय लुकाय राखै। पण 'सासरै री पिरोळ' कविता मांय अेक मां री सीख बेटी नै देइजै-सुख-दुख रो औई आसरो, लाज-शरम थारो सासरो।' आपणै अठै अेक कैबत है, बेटी हरखती आवै तो इ चोखी लागै। 'बेटी रो दुख' कविता मांय मां रो आपरै धीवड़ सारू अबोली चींत नै लेखिका घणी मारमिकता सूं साम्ही लाई है। माँ तो माँ ही हुवै, बा बेटी रै चैरे रा भाव ओळख'र उण री अंतस पीड़ नैं समझ लेवै। डॉ. कृष्णा आचार्य अेक मां बण'र आपरी बेटी री गैरी पीड़ नै समझ'र लिखै-

''आवै बेटी/पीहर मा! मुळक सूं पैचाण लेवै
बींरी राजी-खुसी अर/सुख-दुख रा अैसास''

पण दूजी कानी माँ री इण चींत नै परखर बेटी भी माँ नै धीजो बंधावती सी लखावै। माँ बेटी री इण अबुझी चींत माथै मींट राखती कवयित्री लिखै-

''डर लागै/जद-जद बेटी पीहर/रैवण आवै
म्हूं नीं पूछूं दिनां री संख्या/पण बा भांप लै/म्हारै
मनड़ै री चिंता अर/म्हारै साम्हीं मुळकती पडूतर देवै
कै-मां फिकर ना कर सब राजी है.... ।''

समाज अंतरद्वंद्व नै अळगी राखर कवयित्री 'बेटी' नांव रै गीत मांय बेटी री महिमा नै बखाणती थकी आज रै संदर्भ में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' रै भाव नै सारथक कर अलख जगावती लिखै-

''बेटी है अनमोल रतन/देवै सुख
अपार/जिण घर आंगण आ ना खेलै/बो घर है
बेकार''

जद मायड़ भासा नै मान नीं मिलै तो उणरो दाशतो मन 'कूंची लुकगी' रै स्सारै लिखै

''मूंढै ताळो मारियो/कूंची दी लटकाय
काळजियै री पीड़ नै कंठां में दबाय बिना जीभ रै
बोलणो, स्वाद नीं पैचाण!''

कवयित्री डॉ. कृष्णा आचार्य नै आपरी

मातभोम अर आपरी मायड़ भासा सूं गैरो हेत है। कवयित्री आपरै सैर रो बखाण करती लिखै–

चौखो लागै रे म्हारै शहर बीकाणो/ बालो/लागै रे क चोखो लागै रे/चार खूंट चौफेर देवता भैरूं भोमिया जागे रे बुरजां माथै दौड़े टिंगर किन्नो कटग्यो रे .....

इणी'ज भांत आपरी दूजी कवितावां गीत 'समरस बीकाणो, आवो म्हारै सैहर, मायड़ भासा मांय भी आपरी माटी अर बोली रै सारू घाढै हेत नै प्रकटै। लेखिका प्रकृति रा फूटरा चितराम नै आपरी आंख्यां सूं ओझळ कोनी हुवण देवै। मरूथळ माथै जद उणनै हरिया–भरिया रूंख दिखै तो बा हरखित हुया बिना कोनी रैवै, पण जद धरती रै इण सिंगार नै उजाड़ै तद उणरो मन रोवण लागै। रूंख कविता मांय अे ही'ज भाव निगै आवै'

''जळमभोम रो सिणगार रूंख/जिणरी महिमा न्यारी/मानखै रो जीवण संवारै/देवै घणा उपयोग/जद कोई रूंख कटै है/मायड़ रो मन रोवै है''

कवयित्री राग–रंग अर हेत–प्रीत नै प्रकृति रै खोळै मांय देखै, पण उणरै लारै आपरै हिये मांय उकळती भोमर नै साम्हीं लावै। अबकी बिरखा मांय मरुभोम माथै काळी–कळायण नै देख'र सोचै मिनखाचारै रो पाणी भी आज सूख रैयो है। लोग कूड़ा हिसाब–किताब मांड'र गरीबां सूं गरीबी रो चीर हरण'करै जिणरै कारण उणरी स्थिति घणी कोजी अर माड़ी हो जावै। उण रै जीवणै में कोई सार कोनी रैवै। दोरो घणो जीणों मांय इण मारमिकता रो वरणाव चंद ओळयां मांय मांडली वा लिखै–

''सळ पड़योड़ै/मूंढै माथै/सूख गयो नैणां रो पाणी/अंधारै सूं घिरयोड़ै/काळजो लियां अर/भूख री लाय में तपतो/सूनै मारग डगमगावतों डग भरतो छाला पड़्या पगथली मांय''

इण सूं दोरो जीवणो और कांई हो सकै? लेखिका रो ओ सवाल सगळा साम्ही है। आज लेखिका रो काळजो कसमसावतो लागै। जीवण रै जथारथ नै उधेड़ती लेखिका खुद कंई छिया–तावड़ा देख्या है। मिनखाचारै रो लीरा–लीर हुवणो, आपसरी मांय छळ रा भाव हुवणा, अेरू–दूजै नै फूटी आंख्यां नी भावणो, जीयाजूण री दोरप आद रै कारणै संवेदणा सूं भरी कवेसरी रो काळजो कसमसावै, जिणनै बा आखरां रै स्सारै दरसावै। 'गायां रा गवाळ' मांय आप रै सुवास्थ पेटै गाय नै माँ नी मान'र फगत मसीन मानणो, 'कठपुतळया', माय मिनख कठतुलळी बण'र स्वास्थ्य रो खेल खेलै तो 'धूंवो' कविता मांय भी इणी स्वास्थ रै कोजै धूवै सूं मिनखपणों कजळाइज रैयो है।

'काळजो कसमसावै' कविता मांय लेखिका रो मानवीय चिंतण उभरै। उखड़ता जीवन–मूल्यां सूं लेखिका बेराजी हुवै अर बा लिखै–

सैवै तावड़ो अर बगत री पीड़/पड़ै लू पण राखै मोकळी धीर/उणी रा टाबर जद बहावै नीर– काळजो कसमसावै।

जुग जीवन में लाग लगाता/राम–रहीम नै खूब भिड़ाता/थूक–फजीती जग में देखे –काळजो कसमसावै

डॉ. कृष्णा आचार्य री कवितावां मांय संप्रेषणीयता रा गुण निजर में आवै जिकी पोथी री सबळता है। इण सारू लेखिका सोरी अर सहज भासा नै काम में लियो है। 'धणी रो कुण धणी' बोल्यां बोर बिकसी, लाय लगावणो, थूक–फजीती, पराई थाळी में घी, गुड़कणियां लोटा, कागद रो फूल, बैठाय दीनो हाशियै पर, नाक में डाली नकेल, काळजो ठंडो करणो जैड़ी कैबता अर मुहावरा भासा री मठोठ नै बणाई राखै। लेखिका भासा रै सागै आपरै गीतां मांय लयात्मकता रा गुण भी अंवेरया है' जिणनै पाठक आपरै होठा माथै लावण अर गुणगुणा नै मजबूर हो जावै।

गीत अर कविता रा भाव आम मिनख रै हियै रा ही भाव है। इण नै उजागर करणै सारू डॉ. आचार्य ठेठ सबदावली नै काम में लियो है। लेखिका आपरै अंतस री कसमसाहट नै मथ'र सबदां रै स्सारै सांम्ही लाय'र पाठक रै मरम नै जगाय देवै। आपरै गीत अर कवितावां मायं केई ठौड़ ध्वन्यात्मक सबदावली रो प्रयोग कर लेखिता अेक साकार रूप खड़ो करै। आप केई ठौड़ बिंब अर प्रतीकां रै स्सारै पाठक वरग सांम्है आपरी बात नै राखै। जठै तांई पोथी रै पूठै रै चितराम री बात करूं तो गौरीशंकर आचार्य अेक बार फेरूं इण कला माथे इकधार अर आचार्यत्व साफ निगै आवै। पोथी रै अतस नै चितराम बतावतो–सो लखावै।

सूखै ठूंठ रै कोचरै मांय उमाव सूं भरी ऊगती कळी साफ सैनाण है कै लेखिका रै कमससावतै काळजै रै लारै अेक आस री किरण भी निकळै जकि बतावै–

मरणो सांचो संगळां नै/फेरूं क्यूं बाथेड़ो पाळो/थारो म्हारो एक ही मारग/ज्यूं अंबर में हुवै उजाळो।

डॉ. कृष्णा आचार्य रै गीत अर कवितावां रा अेक–अेक सबद हियै में उतरण री खिमता राखै अर घणी विराळ करिया पछे लागै कै ओ काव्य–संग्रै राजस्थानी काव्य–जगत मांय अेक नूंवौ अध्याय जोड़न री खिमता राखै।

समीक्षक : डॉ. नमामी शंकर आचार्य
व्याख्याता राजस्थानी, कोट गेट के अन्दर, जोशी वाडा, बीकानेर, **मो: 9829321692**

कठै गई बा (राजस्थानी काव्य संग्रह)

लेखक : दुष्यन्त जोशी **प्रकाशक** : ज्योति पब्लिकेशन्स, बीकानेर, राज. **संस्करण** : 2017
पृष्ठ संख्या : 88 **मूल्य** : ₹150

आधुनिकतावाद के आगमन के साथ परम्परा के अस्वीकार की बात भी उठी। इमरिस की दृष्टि में साहित्यिक क्रांति को अर्थवान् बनाने के लिए परम्परा के निषेध की धारणा की आवश्यकता है। सम्भवतः उसका अभिप्राय प्रचलित सतही परम्परा से है। आधुनिक के प्रौढ़ होने के पहले ही फ्रेडरिक नीत्शे ने परम्परा का विरोध किया था। उसके विचार से इतिहास को ढोना वार्धक्य का चिह्न है। डी. मन के मत में लिखने का अर्थ है इतिहास को खंडित और विघटित कर के लिखना। पर इतिहास को पूर्णतः खंडित कर के नहीं लिखा जा सकता था। उनका मानना था कि हम आधुनिकवादी और परम्परावादी एक साथ होते हैं।

इसी आलोक में युवा कवि दुष्यंत जोशी की कविताओं की परख की जानी समीचीन प्रतीत होती है। कवि का परम्परा–प्रेम खेत–खलिहान एवं गाँव के चित्रों से मुखरित हुआ हैं। वे 'गाँव' शीर्षक से रची दो कविताओं के जरिए अपनी बात कहते हैं। उनको दर्द है कि गाँव भी शहर की उपभोक्तावादी संस्कृति के चपेट में आ रहा है। जहाँ राजस्थान में छाछ और बेटी माँगना कोई बुरा नहीं माना जाता वहाँ गाँव में छाछ दूध की भाँति बिकने लगी है। गाँव शहर से इस कद्र जुड़ गया है कि खुद गाँव ने गाँव से मुँह मोड़ लिया है– गाँव सैहर सूं जुड़ग्यौ/गाँव/गाँव सूं मुड़ग्यौ/ इसी तरह दूसरी कविता में गाँव की भौतिक प्रगति की नंगी तस्वीर दिखाई गई है। इस कविता में कवि कहते हैं कि गाँव में शहर की तर्ज़ पर बिजली, पानी , शिक्षा आदि का पूरा प्रबंध तो किया गया है, परन्तु यह प्रबंध है दिखावटी। स्कूल में शिक्षक नहीं, नलों में पानी नहीं, तार में करंट नहीं, यही वास्तविक दशा है गाँवों की।

कवि ने परम्परा–आधुनिकता के बीच तालमेल बैठाते हुए 'मिनख अर भगवान'

शीर्षक में चार कविताएँ लिखी है। वे इन कविताओं में अध्यात्म की बात करते हैं। उनका तर्क है कि जब ईश्वर कण-कण में मौजूद है तो फिर भगवा वेश धारण कर उसके लिए संसार से मुक्त क्यों हुआ जाए। भगवौ बानौ/पळेट'र/ कांई ढूँढ़ै मिनख। वे रेगिस्तानी हरिण की भाँति मृगतृष्णा में भटकते रहते हैं और आखिर में प्यासे रह जाते हैं। इसलिए सच्चे मन से भगवान को याद करने की जरूरत है। केशन-मुंडन या भगवाधारण से ईश प्राप्ति संभव नहीं है।

कवि की काव्य-भाषा में व्यंग्य का प्रयोग बहुत बार हुआ है। कभी-कभी तो सपाटबयानी में भी अन्तर्युक्त यह व्यंग्य-स्वर फूट पड़ता है। कविता 'जादूगर' में कवि की यही भाषा प्रयुक्त हुई है- जादूगरां री नगरी है/ म्हारौ सैहर सड़कां खावै/ पुळ खावै/ अर लोहै रा सरिया तकात चबावै/ आंरौ हाजमो/ सांतरौ। कई बार कवि व्यंग्य की जल्दबाजी में प्रतिक्रियात्मक कथन भी कह उठता है और उसे ही कविता मान लेता है। 'इस्कूल' शीर्षक कविता में कवि का यही' उतावलापन उजागर हुआ है। स्कूल का जो चित्र खींचा गया है, वह तो आधुनिक शिक्षा दर्शन/मनोविज्ञान के अनुकूल है, परन्तु आगे चलकर वे कविता को पोषाहार/तनख्वाह पर खत्म कर कविता को बिलकुल सतही बना देते हैं और तो मेंढक/मुर्गा/कुर्सी बनना बच्चों का सहज स्वभाव है, उसके साथ-साथ तालीम दी जाए, तो बेहतर है, परन्तु इसको भी तिरछी निगाह से देखना एक तरह से लेखकीय कमजोरी का प्रकटीकरण ही है।

इसी तरह कवि की कुछ कविताएँ विवरण प्रधान है, वे कविताएँ अगर किसी कथा रूप में रची जाती, तो बेशक अच्छी बन पाती। 'गरीबी', 'धरम', 'पेट' आदि इसी प्रकार की बैम कविताएँ है, जिनमें न तो कविता का भाव है और न संवेदना। कविता कविता तो लगनी ही लगनी चाहिए, अन्यथा कविता और लेख में क्या अंतर रह जाएगा। आशा है, भविष्य की कविताएँ इस मूल मंतव्य से जरूर आप्लावित होगी। जोशी कविता 'कठै गई बा' में बलात्कार की शिकार लड़की की जीवन व्यथा को नारकीय बनाने पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। वे इस परिस्थिति पर कटाक्ष करने से बिलकुल नहीं हिचकते। वे इसलिए व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर बल देते हैं- कविता 'चिन्त्या' में वे लिखते हैं- ''थूं खुद सुधर, समाज सुधर ज्यासी आपीआप।'' कवि कविता 'नूंवौ सूरज' में परम्परा की जकड़न से बाहर निकलने को उत्प्रेरित करते हैं।

युवा कवि बालमन की समझ को बखूबी समझते हैं। वे बच्चे के बचपन की मनगत को बहुत सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करते हैं। बड़ों के द्वारा उन पर लगाई गई पाबंदियों से वे खीझते हैं-

''पण टाबर री, नी कोइ औकात
टाबर री मिटगी स्सा सौगात।
(पृष्ठ-27)

कवि केवल अंध आधुनिकता से ही सराबोर कवि नहीं है। इसलिए जहाँ उन्हें महसूस हुआ, कि यह परम्परा मानव विरोधी है केवल उसी का तिरस्कार/बहिष्कार किया, अन्य का नहीं। कविता 'तरक्की' उनकी इसी मानसिकता का बोध कराती है- ''स्सौ की'', तैस-नैस करण सारू, बटण ई, वी दबाणो पड़ै, कोई अेड़ो काम करां।'' कविता 'संवेदणा' में कवि फेसबुक/वाट्सअप जैसे सोशल मीडिया की अनशोसल प्रकृति पर व्यंग्य करते है-

''लाइक अर कमेण्ट घणाई आया
पण
अरथी नै कांधा देवणियां किरायै माथै बुलाया''

जोशी की कविताएँ विविधवर्णी है, उसमें गाँव, खेत, परंपरा, बच्चे, मानव, रिश्ते जैसे कई विषय शामिल है। कवि सभी कविताओं में संवेदना तलाशने की कोशिश में लगे रहते हैं। उनकी कविताओं की चित्रात्मक शैली बहुत खुबसूरत है। हालांकि कहीं कहीं चित्र यर्थाथता से दूर छिटकते हुए प्रतीत होते है, जैसे 'ओळयूं: दोय' कविता में पेड़ के नीचे 'आँख मिचौनी' खेल का जिक्र हुआ, जबकि यह खेल खुले में खेला जाना ही संभव नहीं है। खैर कई चित्र बहुत सटीक और सुन्दर बने हैं। कवि में एक सिद्धहस्त कवि बनने की संभावना नज़र आती है। उम्मीद है अगले संग्रह की कविताएँ और अधिक प्रांजल और ग्राहय बन कर पाठक समाज को आहलादित-उद्वेलित करेगी। अस्तु।

समीक्षक : डॉ. मूलचन्द बोहरा
उपनिदेशक, आर. टी.ई.
प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414031502

एंड्रयू कारनेगी ने शिक्षा को समर्पित की अपनी सम्पति

❐ सांवलाराम नामा

इतिहास में सर्व समृद्ध सम्पन्न तो असंख्य व्यक्ति हुए हैं, पर उनके पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से नाम तो उन्हीं दिलेर और बिरलों का अमिट अंकित है, जिनने अर्जित धन व संपदा को मानवता की उन्नति व विकास के लिए हार्दिक दिल से समर्पित कर दी। ऐसे ही एक पुण्यात्मा का नाम है 'एंड्रयू कारनेगी' विश्व के द्वितीय सर्वाधिक धनाढ्य (धनी) व्यक्ति के नाम से विख्यात, एंड्रयू का जन्म स्कॉटलैंड के एक अत्यन्त गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता रूई के कारखाने में कारीगर थे माँ जूतों की सिलाई करके जैसे-तैसे पूरे परिवार का गुजारा चलाती थीं। ऐसी विकट विषम परिस्थितियों में एंड्रयू ने पुस्तकें उधार लेकर अपनी शिक्षा की मंशा पूरी की और अपनी कठोर मेहनत व लगन तथा कार्यकुशलता के बलबूते टेलीग्राफ ऑपरेटर के पद पर पहुँचे। आगे के वर्षों में गहन परिश्रम व आगे बढ़ने की अदम्य इच्छा शक्ति ने उन्हें दुनिया की विशालतम स्टील कंपनी का मालिक बनाया। प्रशंसा की बात यह कि जब उनके समकालीन पूँजीपति धन को अनाप-शनाप कामों में उड़ाने में व्यस्त थे, तब एंड्रयू कारनेगी ने अपनी आधे से ज्यादा संपत्ति इंग्लैंड, अमेरिका, यूरोप तथा ऑस्ट्रेलिया में निःशुल्क पुस्तकालयों व विश्वविद्यालयों को बनाने में समर्पित कर दी। उनका कहना था कि धन के अभाव में शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा वह चाहते थे कि उस कारण किसी और जरूरतमंद को निरक्षर न रहना पड़े। भौतिकवाद के अंधड़ में फँसे लोगों के लिए उनका जीवन दीए की तरह है, जो उनके शरीर छोड़ने के सौ वर्ष के बाद भी अनेकों को राह दिखा रहा है। धन्य जीवन पुण्यात्मा एंड्रयू कारनेगी।

व्याख्याता (से.नि.)
सदर बाजार रोड़, निकट बड़ा चौराहा,
भीनमाल-343029, जालोर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

खो-खो में राजसमंद के स्काउटों ने बाजी मारी

राजसमन्द के कुंभलगढ़ के राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड इकाई की खेल प्रतियोगिता महाराणा भूपाल स्टेडियम उदयपुर में सहायक निदेशक कॉलेज शिक्षा डॉ. वीना सनाढ्य के मुख्य आतिथ्य एवं श्री सुरेन्द्र सिंह झाला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। प्रधानाचार्य ने बताया कि रा.आ.उ.मा.वि. कुचौली के शा.शि. व स्काउटर श्री राकेश टांक के मार्गदर्शन में राजसमन्द जिले की स्काउट टीम ने खो-खो प्रतियोगिता में संभाग स्तर पर फाइनल मैच में बाँसवाड़ा को 1 पारी व 3 अंकों से जीतकर मंडल स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस विजेता टीम में राजसमन्द के सर्वश्री पदाराम भील, हिम्मतकुमार भील, जवेरीलाल भील, दिनेशकुमार भील, धूलचन्द भील, रमेशलाल भील, स्वरूपलाल भील, राहुल कुमार भील, जीतमल दर्जी व दोवड़ा आमेट के रघुनन्दन शर्मा शामिल रहे। इस जीत पर सम्पूर्ण विद्यालय परिवार ने प्रसन्नता प्रकट की। सी.ओ. स्काउट श्री सुरेन्द्र कुमार पांडे ने बताया कि इस विजेता टीम से चयनित स्काउट खिलाड़ी आगामी आयोजित राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता, जगतपुरा जयपुर में उदयपुर मंडल का प्रतिनिधित्व करेंगे।

विद्यार्थियों का चिकित्सा शिविर सम्पन्न

बीकानेर के लूनकरणसर के रामबाग स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. अविनाश के नेतृत्व में चिकित्सा कार्मिकों के दल ने विद्यालय के विद्यार्थियों की गहन जाँच की। दिनांक 6 अक्टूबर 2018 को आयोजित इस शिविर में कक्षा 1 से 11 तक के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की जाँच करने के साथ उनको स्वस्थ रहने के बारे में भी चिकित्सक दल ने जानकारी प्रदान की। संस्थाप्रधान डॉ. मदनगोपाल लड्ढा ने दल को धन्यवाद दिया।

संभाग स्तरीय निबन्ध, पोस्टर,पेंटिंग व वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर व श्री राजेन्द्र कुमार पारीक अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बीकानेर के निर्देशानुसार संभाग स्तरीय निबंध, पोस्टर, पेंटिंग व वाद विवाद प्रतियोगिताएँ राजकीय महारानी उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में आयोजित कराई गयी। संभाग स्तरीय निबंध, पोस्टर, पेंटिंग, प्रतियोगिता के लिए बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ जिले के प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्रतिभागियों की प्रविष्टियों का मूल्यांकन निर्णायक मण्डल द्वारा किया गया एवं वाद विवाद प्रतियोगिता के लिए उक्त जिलों के प्रतिभागियों के मध्य प्रतियोगिता आयोजित करवाकर निर्णायक मण्डल द्वारा परिणाम घोषित किया गया। प्रतियोगिता का मुख्य विषय 'रैंगिंग विरोधी कानून' रहा। कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बीकानेर के सचिव श्री पवन कुमार अग्रवाल (अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश) उपस्थित थे जिनके द्वारा प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया। उक्त प्रतियोगिता श्री महावीर सिंह पूनिया, संयुक्त निदेशक बीकानेर मंडल, श्री भूपसिंह तिवाड़ी अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.) बीकानेर, श्री प्रधानाचार्या राजकीय महारानी बालिका उ.मा.वि. बीकानेर ने परस्पर समन्वय स्थापित कर आयोजित करवायी। इसके अतिरिक्त जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बीकानेर के स्टाफ, निर्णायक मंडल व अध्यापकगणों ने भाग लिया।

देशनोक में अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित

बीकानेर के देशनोक की राजकीय करणी उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस' के अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शाला प्रधानाचार्य श्री कौशल किशोर पंवार ने बताया कि इस अवसर पर भाषण, चित्रकला व निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में मोनू शर्मा प्रथम, मुदिता शर्मा द्वितीय, कंचन सोनगरा तृतीय, चित्रकला में भुवनेश्वरी प्रथम, सोनू शर्मा द्वितीय, इसी तरह निबंध प्रतियोगिता में कोमल भार्गव प्रथम, दुर्गा उपाध्याय द्वितीय तथा माया चारण तृतीय स्थान पर रही। इस अवसर पर सोनू चारण ने संस्थाप्रधान की भूमिका का निर्वहन किया। कार्यक्रम के अंत में बालिकाओं ने शपथ ग्रहण करते हुए बताया कि वे अपनी पढ़ाई जारी रखेंगे तथा जीवन में आत्मनिर्भर बनेगी एवं अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास करेगी।

झझु में मनाया बालिका दिवस

बीकानेर के कोलायत के झझु गाँव में राजकीय आदर्श उ.मा.वि. में 'अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस' पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थाप्रधान श्रीमती गीता स्वामी ने बालिकाओं को इस अवसर पर शिक्षा व स्वच्छता हेतु प्रेरित किया। उरमूल सीमांत समिति बज्जू की श्रीमती दमयन्ती ओझा ने सेनेट्री नेपकीन डिस्पोजल मशीन के रखरखाव पर प्रकाश डालते हुए साफ-सफाई एवं स्वच्छता के बारे में जानकारी दी। गार्गी मंच प्रभारी श्रीमती लक्ष्मी राठी के निर्देशन में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

बालिका दिवस पर सम्पन्न हुई विभिन्न प्रतियोगिताएँ

बीकानेर के आम्बासर स्थित रा.आ.उ.मा.वि. में बालिकाओं के साथ 'अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस' यूनिसेफ राजस्थान के वित्तीय सहयोग से उरमूल ट्रस्ट द्वारा संचालित 'लाडो परियोजना' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। संस्थाप्रधान ने बताया कि ब्लॉक समन्वयक श्री मनोज जनागल के मार्गदर्शन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें अध्यापक श्री अशोक कुमार ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि 2018 की थीम बालिकाओं को सशक्त, सक्षम, सबल बनाना है। चाइल्ड लाइन टीम

सदस्या श्रीमती सरिता राठौड़ ने बालिकाओं को हर समय मदद देने वाली सेवा 'चाइल्ड लाइन 1098' के बारे में बताया।

इसी प्रकार रा.उ.मा.वि. सारूण्डा में बालिका दिवस को धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रधानाचार्य श्री प्रमोद कुमार शर्मा ने बताया कि कक्षा 12 की छात्रा कौशल जाजड़ा ने बेटियों पर 'रोशनी एक ये सारे चरागों पर भारी है' सुनाकर वाहवाही लूटी, कक्षा 9 की छात्रा प्रियंका काकड़ ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' पर भाषण दिया। ममता, कलावती, शिवानी, राधा व लिछमा प्रजापत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र गौरा, श्रीमती सरस्वती पंवार व श्री अजीत सिंह चारण ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन कक्षा 12 की छात्रा आरती जोशी ने किया।

श्रीडूंगरगढ तहसील के ठुकरियासर के उदरासर गांव की राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में समारोह आयोजन कर बालिकाओं को सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती विमला गुर्जर ने कहा कि बालक और बालिकाओं के बीच भेदभाव की प्रथा खत्म होनी चाहिए। गुर्जर ने कहा कि बेटा व बेटी को समान हक मिलना चाहिए क्योंकि आज हर कार्य क्षेत्र में बेटियाँ भी बेटों के समान प्रदर्शन करती हैं। पूजा बारूपाल ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पर कविता का वाचन किया तथा अन्य बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर हुई एकता दौड़

बाड़मेर जिले के गुड़ामालानी ब्लॉक के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, भेडाना में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया गया। इसके तहत विद्यालय में 'एकता दौड़, राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ, पोस्टर निर्माण व निबंध लेखन' जैसे विभिन्न कार्यक्रम हुए जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया ।

विद्यालय की छात्राओं ने 'रन फॉर युनिटी (एकता दौड़)' करके राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का संदेश दिया। कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री दुर्गाराम गोयल ने विद्यार्थियों को 'राष्ट्रीय एकता की शपथ' दिलाते हुए राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को दृढ़ बनाने के लिए सत्यनिष्ठा से कर्त्तव्यों का पालन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर व्याख्याता श्री नरपत परमार ने कहा कि हमें सरदार पटेल के जीवन, व्यक्तित्व एवं राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को दृष्टिगत रख उनके जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के एकीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं बंधुत्व को बढ़ाने के लिए अविराम देश हित में कर्त्तव्य पालन करना होगा।

कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता श्री पूनमाराम ने किया। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ सर्वश्री हेमेंद्र कुमार विश्नोई, फरसाराम गर्ग, बाबूराम गोयल सहित सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पटेल जयंती पर प्रतियोगिताएँ आयोजित

चूरू जिले के रा.मा.वि. दांदू में पटेल जयंती समारोह पूर्वक मनाई, जिसमें पोस्टर व निबंध प्रतियोगिता, रन फॉर यूनिटि, हैण्डराइटिंग इम्प्रूवमेंट तथा केलिग्राफी कॉम्पिटिशन का आयोजन किया गया। सीनियर वर्ग की कक्षा 10 की प्रतियोगिताओं (हिन्दी) में प्रथम, द्वितीय व तृतीय क्रमश: सुनीता, लक्ष्मी व पिंकी राठौड़, (अंग्रेजी) में मोनिका, पिंकी व सुनीता इसी प्रकार कक्षा 9 में (हिन्दी व अंग्रेजी) ज्योति कंवर, निकिता व खूशबू ने स्थान प्राप्त किया। जूनियर वर्ग में हेमलता और मनीषा प्रथम, अंजू मेघवाल द्वितीय व पूनम तृतीय रही। इस अवसर पर श्री नेमीचन्द सुडिया ने पटेल जी के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के संचालन में श्री राजेन्द्र सुंडा व श्री सुल्तान तेतरवाल ने भूमिका निभाई।

छात्र जय अवस्थी का जापान यात्रा से लौटने पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम ने किया सम्मानित

श्री सालगराम परिहार जिलाध्यक्ष पुरस्कृत शिक्षक फोरम, बाड़मेर ने बताया कि माह नवंबर की 'शिविरा' पत्रिका में प्रकाशित रपट-'मेरी जापान यात्रा के अविस्मरणीय पल' जो कि डॉ. कल्पना शर्मा के जीवंत पहलू का अनूठा संयोग है । श्री परिहार ने कहा 'शिविरा' के अवलोकन करने पर मुझे भी प्रेरणा मिली कि जापान एशिया यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत राजस्थान की छ: प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन जापान यात्रा के लिए हुआ है एवं विद्यार्थियों ने साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में जापान की संस्कृति, नवीन तकनीक, वहाँ के जन-जीवन को समझने का प्रयास किया जो कि उन विद्यार्थियों के लिए सुनहरे पल रहे। पड़ोसी जिले जालोर का छात्र जय अवस्थी को जालोर जाकर सम्मानित करने का अवसर मिला जो कि मेरे लिए अपने आप में अनुपम मिसाल है। विद्यार्थी के उत्साह को बढ़ाने में छोटी सी भूमिका भी उन्हें असीम ऊर्जा प्रदान करती है। छात्र जय अवस्थी का पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा शॉल ओढ़ाकर व माला पहनाकर बहुमान किया गया।

भामाशाह ने विद्यालय को भेंट किया साउण्ड सिस्टम

बाड़मेर जिले में रा.उ.प्रा.वि. लूंगी नाडी, दूधू में भामाशाह एवं समाजसेवी श्री पुरखारामजी सारण शिव शक्ति इन्टरप्राइजेज धोरीमना वालों ने विद्यार्थियों के लिए डीजे साउण्ड सिस्टम जिसकी कीमत 28000/- रुपये (आहुजा डीजे साउण्ड) भेंट किया गया है। इस अवसर पर संस्थाप्रधान ने बताया कि इसके अलावा आप हमारे विद्यालय के फेसबुक पेज पर विद्यालय में आयोजित होने वाली हर गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

होलोचेन तकनीक में कम्प्यूटर में सर्वर

टोक्यो– ऑनलाइन दुनिया में आज की सबसे बड़ी चिंता है डेटा की चोरी। लेकिन एक नई तकनीक में इस समस्या का हल मिल सकता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि इंटरनेट प्रोटोकॉल डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू की जगह अगर होलोचेन का इस्तेमाल करें तो डेटा लीक नहीं होगा। अभी यूजर अपने स्मार्टफोन में जो भी करें वह पहले सर्वर पर जाता है और सारा डाटा फेसबुक और गूगल जैसी कंपनियों के पास पहुँच जाता है। इसके विपरीत होलोचेन में डेटा यूजर के हाथों में रहेगा। डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू प्रोटोकॉल की तरह ही होलोचेन एक ऐसी तकनीक है जो कम्प्यूटर को आपस में संपर्क करने के लिए तैयार करती है। लेकिन डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू अधिकतर कॉरपोरेट कंपनियों के सर्वर पर चलता है। इसके तहत स्मार्टफोन या कम्प्यूटर फेसबुक या गूगल जैसी कंपनियों के सर्वर से जुड़ने की रिक्वेस्ट भेजता है और फिर उन्हीं सर्वरों से डेटा का आदान-प्रदान करता है। कम्प्यूटिंग व डेटा स्टोरेज इन्हीं कॉरपोरेट सर्वर में होता है, जिसे कॉरपोरेट क्लाउड कहते हैं। इसके उलट होलोचेन तकनीक को पूरी तरह से पर्सनल कम्प्यूटर और स्मार्टफोन के ही डिस्ट्रिब्यूटेड नेटवर्क पर चलाने के लिए बना है। इसका मतलब है कि होलोचेन में डेटा स्टोरेज कॉरपोरेट सर्वर में नहीं होता, बल्कि नेटवर्क में जुड़े स्मार्टफोन व कम्प्यूटरों में होता है। इसे 'पियर टू पियर' टेक्नोलॉजी कहते हैं। सीधे शब्दों में कम्प्यूटर ही सर्वर का काम करेगा।

अंतरिक्ष में 79 चन्द्रमा

एक ताजा खोज में बृहस्पति ग्रह के पास और 12 चंद्रमा पाए गए हैं। इस खुलासे के बाद वृहस्पति ग्रह के पास चंद्रमा की कुल संख्या 79 हो गई है। यह सोलर सिस्टम में किसी भी ग्रह पर सर्वाधिक है। खगोलविदों ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। कार्नेज इंस्टीट्यूट फॉर साइंस के शोधकर्त्ता स्कॉट शेपार्ड ने एक नया चंद्रमा खोजा। यह काफी छोटा है जो महज एक किलोमीटर आकार में है। इसकी भी अपनी कक्षा है। इसे वृहस्पति का सबसे छोटा चंद्रमा बताया गया। यह वृहस्पति के चारों ओर एक चक्कर लगाने में करीब डेढ़ साल लगाता है। इसकी कक्षा झुके हुए कोण की स्थिति में है। शेपार्ड कहते हैं कि हालांकि यह इसकी अस्थाई स्थिति है। इसके अलावा दो अलग चंद्रमा खोजे गए जो बृहस्पति की दिशा में ही घूमते हैं। आंतरिक हिस्से में जो चंद्रमा है उसे बृहस्पति का एक चक्कर लगाने में लगभग एक साल लगता है। खगोलविदों ने चंद्रमा के इस समूह को वैल्यूट्रुडो नाम देने का प्रस्ताव किया है। इटली के खगोलविद गैलिलिओ गैलिली ने बृहस्पति के पहले चार चंद्रमा की खोज 1610 में की थी।

डायबिटीज पर किए शोध को मिली सराहना

बीकानेर– 'रिसर्च सोसायटी फॉर दी स्टडीज ऑफ डायबिटीज इन इंडिया' का वार्षिक सम्मेलन 22 से 25 नवंबर, 2018 तक अहमदाबाद में आयोजित हुआ। इसमें देशभर में डायबिटीज पर हुए शोध कार्यों पर मंथन हुआ। सम्मेलन में देश-विदेश के करीब पाँच हजार से अधिक चिकित्सा पेशे से जुड़े लोगों ने शिरकत की। सम्मेलन में डायबिटीज पर पीजी मेडिक्विज हुई, जिसमें सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज के रेजीडेंट डॉ. विपिन सिंघल व डॉ. नैंसी गर्ग प्रथम स्थान पर रहे। इसके अलावा डॉ. नैंसी को पत्रवाचन के लिए पुरस्कृत भी किया गया। सम्मेलन में बीकानेर मेडिकल कॉलेज के डॉ. रित्विक अग्रवाल, डॉ. प्रीति, डॉ. खेताराम सहित कई फिजिशियंस ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्राचार्य डॉ. आर. पी. अग्रवाल ने बताया कि सम्मेलन में डायबिटीज पर कैमल मिल्क पर किए गए शोध कार्यों को काफी सराहा गया।

हौसले में जान होती है, एक पैर से नाप लिया लद्दाख और हिमालय

मुंबई– मायानगरी के विनोद जीत सिंह रावत ने एक पैर गंवाने के बाद भी यह मिसाल कायम की है। छह वर्ष की उम्र में ट्रक की टक्कर में उन्हें अपना एक पैर गंवाना पड़ा था। पैर बच सकता था, लेकिन 25 हजार रुपयों की जरूरत थी। परिवार नहीं जुटा पाया तो उनका पैर काटना पड़ा। 15 साल की उम्र में विनोद ने घर छोड़ दिया और असामाजिक तत्वों की संगत में पड़ गए। तभी एक सज्जन ने उन्हें लोअर परेल 'मुंबई टीन चैलेंज' संस्था में दाखिल कराया। यहाँ उन्होंने सकारात्मक जिंदगी के गुर सीखे। यहीं नकली पैर भी मिला।

46 करोड़ किमी. तय कर मंगल पर उतरा इनसाइट

वाशिंगटन– नासा का इनसाइट लैंडर रोवर सोमवार रात मंगल की सतह पर उतर गया है। इनसाइट 45.8 करोड़ किलोमीटर की दूरी तय कर मंगल पर पहुँचा है। मिशन ने उतरने के साथ ही रोबोटिक आर्म में लगे कैमरे की मदद से मंगल ग्रह की जमीन पर ली गई पहली सेल्फी धरती पर भेजी। मिशन मंगल ग्रह की आंतरिक हलचल, भूकंपीय गतिविधियों, पानी के गुप्त स्रोतों आदि की जानकारी जुटाएगा। जिससे वहाँ पर भविष्य में जीवन की संभावनाओं को तलाशा जा सकेगा। फिलहाल, मिशन अपने सोलर पैनल रिचार्ज कर रहा है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

बीकानेर

रा.मा.वि., श्रीरामसर (बीकानेर) को श्री ओमप्रकाश जोशी (सी.ओ. सिटी) से एक प्रोजेक्टर प्राप्त हुआ, श्री बलभद्र व्यास से प्लास्टिक कुर्सी 10 प्राप्त जिसकी लागत 5,500 रुपये, श्री जगदीश प्रसाद रामावत (प्र.अ.) से प्लास्टिक कुर्सी 20 प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्रीमती पुष्पा देवी आचार्य से प्लास्टिक कुर्सी 10 नग जिसकी लागत 5,500 रुपये, 2 छत पंखे जिसकी लागत 2,800 रु., 2 नग लोहे की भोजन बनाने की भट्टी जिसकी लागत 6,000 रुपये, डिजिटल लेब लाईट फिटिंग का कार्य, किचन व कार्यालय की मरम्मत एवं पुट्टी व कलर सहित कुल खर्चा 30,000 रुपये, आद्या बोहरा से 4 बड़ी दरी (10'×4') जिसकी लागत 5,660 रुपये, श्री मोडाराम, शिव शंकर व जगदीश चौधरी से एक बड़ी दरी (12×8) जिसकी लागत 3,400 रुपये, कंचन मेंहदीरता से 2 बड़ी दरी (12×8) जिसकी लागत 6,820 रुपये, श्री हरिकिशन जोशी से 3 छत पंखे जिसकी लागत 4,200 रुपये, 3 ग्रीन बोर्ड प्राप्त, श्री ब्रह्मदेव नाई (स.क.) से 01 छत पंखा जिसकी लागत 1,400 रुपये, शकुन्तला देवी आचार्य से एक छत पंखा जिसकी लागत 1,400 रुपये, बलविन्द्र कौर से 2 छत पंखे प्राप्त जिसकी लागत 2,800 रुपये, यशोदा चौधरी से एक छत पंखा प्राप्त जिसकी लागत 1,400 रुपये, कुसुम चावला (व.अ.) से लोहे की 5 मेजे व 5 स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, कांता देवी सागर मल राठी से एक वाटर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 28,500 रुपये, श्री राजेश व योगिता सारड़ा से दो सीजर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 26,000 रुपये, श्री संजीव स्वामी विशाल एस.टी.डी. से 2 साइड वाल फैन प्राप्त जिसकी लागत 4,200 रुपये, वीरेन्द्र अभाणी से एक गोदरेज बड़ी अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 4,500 रुपये, श्री मुकेश कुमार सुराणा से 2 बड़ी गोदरेज अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 9,000 रुपये, किस्मत सारस्वत, सुशील सारस्वत से एक बड़ी गोदरेज अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 4,500 रुपये, महेश्वरी उद्योग बीकानेर से पानी की टंकी 2 नग (500 लीटर) जिसकी लागत 5,000 रुपये, तारा स्वामी (व्याख्याता) से ट्यूब लाईट 6 नग प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये, डॉ. कृष्णा आचार्य से लकड़ी बोर्ड डिसप्ले 3 नग प्राप्त जिसकी लागत 6,000 रुपये, श्याम लता व्यास से लकड़ी मेज कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, लक्ष्मी बारूपाल से स्पीच स्टैंड प्राप्त लागत 4,500 रुपये, श्री श्रीनारायण साध से एक वाटर कूलर व एक पानी की टंकी प्राप्त जिसकी लागत 31,000 रुपये, श्री विष्णु, स्वाती सिवास राठी से डेसटॉप कम्प्यूटर व सी.पी.यू. प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री मंगतूराम गहलोत से डिजिटल लैब लाईट फिटिंग का कार्य करवाया गया जिसका खर्चा 30,000 रुपये।

बून्दी

रा.उ.मा.वि., भीया को श्री मदन लाल नागर (व.अ.) से विद्यालय में टिनशेड निर्माण हेतु 30,000 रुपये सप्रेम भेंट, श्री नेमीचन्द मीणा (व.अ.) से साइकिल स्टैण्ड हेतु 5,000 रुपये नकद, श्री भैरू लाल मीणा (ग्राम सेवा सहकारी समीति अध्यक्ष) से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 30,000 रुपये तथा आर.ओ. सिस्टम हेतु 18,000 रुपये नकद प्राप्त।

भरतपुर

रा.आ.उ.मा.वि., अऊ में श्री लक्ष्मण कुमार शर्मा (अध्यक्ष), श्री वल्लभ राम शर्मा (मानव सेवा समिति अऊ तह. डीग) अपने पिता श्री बल्लभराम शर्मा की स्मृति में 10,00,000 रुपये की लागत से 32×25 वर्ग फीट का सुसज्जित प्रधानाचार्य कक्ष मय पेंट्री लेट बाथ कक्ष निर्मित करवाया गया तथा शर्मा जी ने किचन शैड निर्माण हेतु 61,000 रुपये मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना में दान दिया साथ ही विद्यालय के छात्र-छात्राओं को बैठने के लिए 2,000 मीटर दरी पट्टी विद्यालय को सप्रेम भेंट, विद्यालय के 100 छात्र-छात्राओं को स्वेटर भी वितरित किए। **रा.आ.उ.मा.वि., ऐंचैरा (नदबई)** को श्री शिवराम सिंह चाहर (व.अ.) द्वारा 65 विद्यार्थियों को विद्यालय पोषाक प्रदान, डॉ. धर्मवीर सिंह से 5,100 रुपये सहयोग राशि प्रदान की गई, भूतपूर्व सरपंच श्री दिगम्बर सिंह से 13 प्रतिभावान छात्रों को रजत मैडल, अभिभावकों को शाल एवं गुरुजनों को राधाकृष्ण की प्रतिमाएँ भेंट। **रा.आ.उ.मा.वि., खानुआँ** को श्री भगवान दास गावड़ी से पानी की टंकी प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री लेखराज गावड़ी से (बच्चों हेतु) प्याऊ जिसकी लागत 52,000 रुपये, श्री चन्द्रशेखर शर्मा (से.नि. प्र.अ.) से 61 ड्रेस जिसकी लागत 22,000 रुपये, लुपिन फाउण्डेशन भरतपुर द्वारा 10 पंखें, 10 फर्श, 200 मीटर चटाई, खेल सामग्री, 10 कुर्सी, 2 गेट लोहे आदि हेतु 60,000 रुपये विद्यालय को भेंट, श्री अजीज खाँ द्वारा एक बरामदा (30×8 फुट) जिसकी लागत 1,15,000 रुपये, श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा (क्रेशर वाले) से 11,000 रुपये नकद, श्री बाबूद्दीन खाँ से 3,000 रुपये नकद, सर्व श्री महेश चन्द चन्देल, वीरेन्द्र कुमार, मँसूर मौहम्मद (पिन्टू), लख्मीचन्द, भूपसिंह (व्याख्याता), सोहनलाल गर्ग प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये नकद प्राप्त, श्री अहमद हुसैन से 5,100 रुपये नकद प्राप्त, सर्व श्री मोहन सिंह (व्या.), शेर सिंह (अ.) प्रत्येक से 3,100-3,100 रुपये नकद प्राप्त, सर्व श्री हमदानी खाँ, बहादुर सिंह चांदौली प्रत्येक से 2,000-2,000 रुपये नकद प्राप्त, सर्व श्री अरमान खाँ, रामलाल, महावीर सिंह जोगीपुरा, राम विजय भोपुर, रसीद खाँ, अख्तर खाँ, प्रेम सिंह प्रत्येक से 1,500-1,500 रुपये नकद प्राप्त, सर्व श्री तेज सिंह, जवाहर सिंह, मनोज कुमार, गीतम सिंह, मनीत खाँ, नरेन्द्र गर्ग, सूरजाराम कोली, डॉ. अलीखान, कृपाल सिंह पूणिया, महेश गर्ग से 1,100-1,100 रुपये नकद प्राप्त सर्व श्री हजारी सिंह, सुरेन्द्र सिंह, सुरज कुमार, देवी सिंह, हाकिम सिंह, मुंशी लाल प्रत्येक से 1,000-1,000 रुपये नकद, श्री चन्द्रशेखर शर्मा से 60 जर्सी प्राप्त जिसकी लागत 12,000 रुपये, श्री जगन्नाथ प्रसाद शर्मा से 10 जर्सी प्राप्त जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्री तुलसीराम (व्या.) से 5 जर्सी जिसकी लागत 1,500 रुपये, सर्वश्री हर विलास, रवैभी, ज्ञान सिंह, प्रकाश चन्द, मुरारी लाल शर्मा, अरविन्द सिंह, विनोद गुप्ता, दीपचन्द से 1,500-1,500 रुपये नकद प्राप्त, सर्वश्री बाबू सिंह, मेघसिंह, केशव, जगदीश प्रसाद, हरि किशन, कप्तान मान पाल, बाबू सिंह से 2,000-2,000 रुपये प्राप्त, रा.उ.मा.वि. खानुआँ स्टॉप से एक प्रिंटर प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये तथा सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,30,000 रुपये, श्री पदम सिंह से एक छोटी अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये। **ठा. देशराज रा.आ.उ.मा.वि., जघीना** को श्री जवाहर सिंह (से.नि. उपनिदेशक पशु पालन विभाग) से 40 स्टूल-मेज सेट प्राप्त जिसकी लागत 56,000 रुपये।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. रुपाहेली खुर्द, पं.स. बनेड़ा में श्री शिवसिंह राठौड़ द्वारा माँ सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया साथ ही प्रतिमा भेंट, श्री प्रेमलाल सामरिया द्वारा अपने प्रियजनों की स्मृति में शीतल पेय हेतु वाटर कुलर भेंट, श्री नारायण लाल बैरवा (पूर्व छात्र स्थानीय विद्यालय) 50 छात्र-छात्राओं को शाला गणवेश एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार , विद्यालय में अक्षय पेटिका में सर्व सहयोग से 5,500 रुपये प्राप्त हुए। **प्रेमीदेवी बेद रा.बा.उ.मा.वि., बागोर** को श्रीमती विमला गुर्जर (अ.) द्वारा सेवा निवृत्ति के अवसर पर 41,000 रुपये चैक विद्यालय परिवार को सप्रेम भेंट।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर, 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः संतोष शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

जिला एवं ब्लॉक स्तरीय एकीकृत शिक्षा संकुलों के शिक्षा अधिकारियों की एक दिवसीय कार्यशाला

(15 व 16 नवम्बर, 2018)

नागौर

कोटा

करौली

चूरू

अजमेर

जोधपुर

भरतपुर

बूँदी

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● दिसम्बर, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2018 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5–6 तारीख

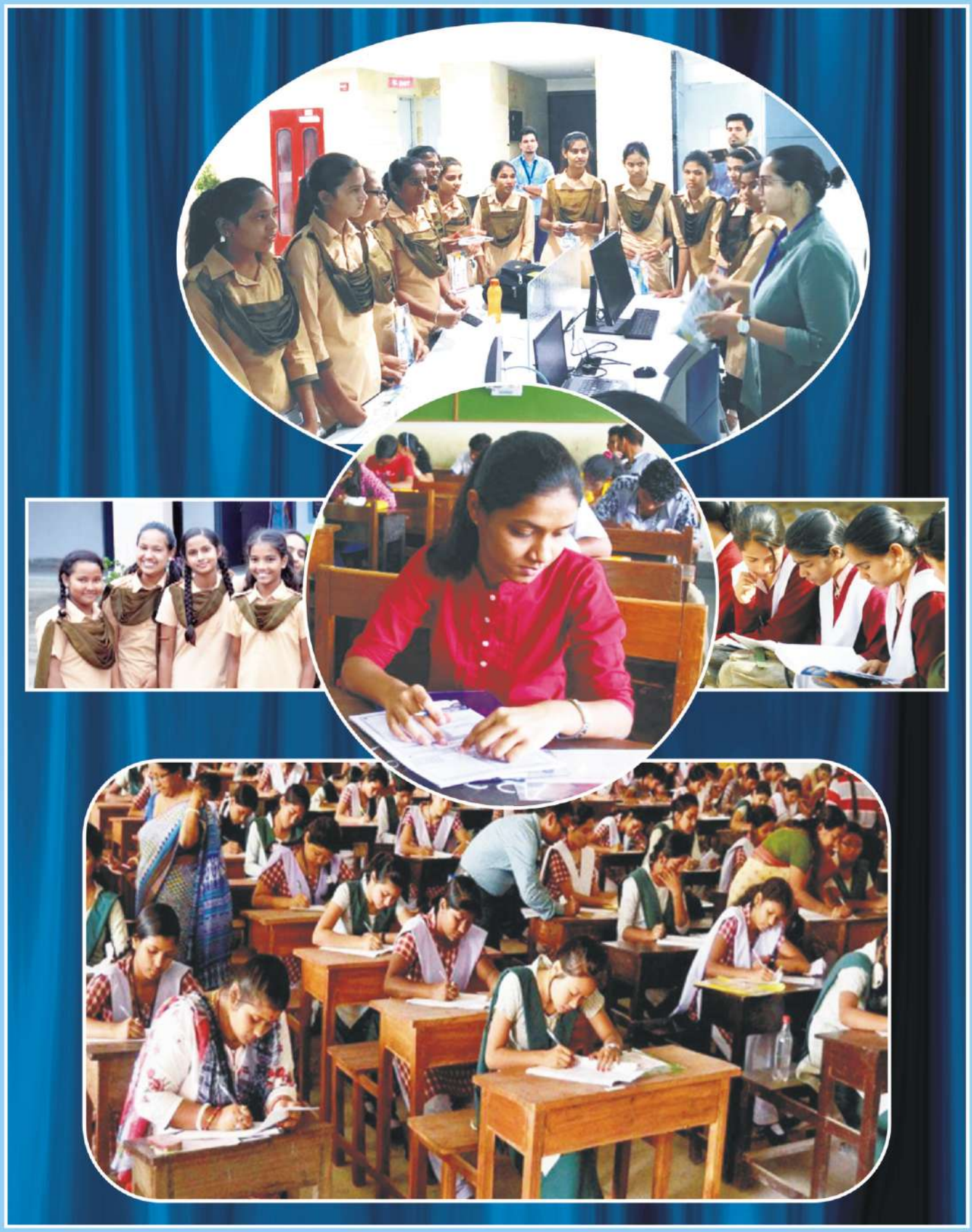

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर–334011